वार्षिक प्रतिवेदन 2004-2005
एकलव्य फाउंडेशन

एकलव्य फाउंडेशन का वार्षिक प्रतिवेदन 2004-2005

एकलव्य फाउंडेशन
रजिस्टर्ड सोसायटी नं. S/13019 दिनांक 26.10.1982
पंजीकृत कार्यालय : B-2/12, मॉडल टाउन, दिल्ली - 110 009

संचालक, आयकर (छूट), नई दिल्ली के पत्र क्रमांक D.I.T. (E)/2004-2005/E-36/84/2611 दिनांक 28.10.2004 के अनुसार दिनांक 01.04.2004 से 31.03.2007 की अवधि में एकलव्य को प्राप्त होने वाली समस्त दान राशियाँ आयकर अधिनियम की धारा 80G के अन्तर्गत आयकर में छूट प्राप्त करने योग्य हैं।

विदेशी योगदान (नियमन) अधिनियम (FCRA) 1976 के अन्तर्गत पंजीकृत
पंजीयन क्रमांक 063160113

मार्च 2006/1500 प्रतियाँ
80gsm मेपलिथो एवं 170gsm आर्ट कार्ड (कवर) पर प्रकाशित

प्रकाशक :

एकलव्य
ई-7/एच.आई.जी. 453, अरेरा कॉलोनी
भोपाल - 462 016 (म.प्र.)
फोन : 0755-246 3380, 246 4824, 554 9033
फैक्स : 0755-246 1703
Email : eklavyamp@mantrafreenet.com

मुद्रक : भंडारी ऑफसेट प्रिंटर्स, ई-3/12, अरेरा कॉलोनी, भोपाल, फोन : 0755-246 3769

विषय-सूची

शिक्षक विकास के कार्यक्रम **8**
- माध्यमिक शालाओं के शिक्षकों के साथ प्रयास
- बुनियादी क्षमता विकास कार्यक्रम
- भोपाल शिक्षा स्रोत केन्द्र
- इन्दौर शिक्षक स्रोत केन्द्र

शाला विकास के कार्यक्रम **20**
- समग्र शाला परिवर्तन कार्यक्रम
- शाला विकास के लिए कुछ और कदम

शैक्षिक शोध और सामग्री निर्माण **24**
- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद
- शिक्षक विकास दस्तावेज़ीकरण
- बुनियादी क्षमता विकास कार्यक्रम में शोध व सामग्री निर्माण
- विज्ञान
- सामाजिक अध्ययन
- किशोरावस्था शिक्षण

शिक्षा में समुदाय की भागीदारी **30**
- शाहपुर ब्लॉक में शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र

स्रोत एजेंसी की भूमिका में **34**
- छत्तीसगढ़
- दूसरा दशक, जयपुर
- साझेदारी से विकसित शिक्षा में एम.ए. का पाठ्यक्रम
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या निर्माण में भागीदारी
- नवसर्जन ट्रस्ट, गुजरात
- एसोसिएशन ऑफ रिसर्च एंड ट्रेनिंग इन बेसिक साइंस एजुकेशन, नागपुर
- केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड के जीवन कौशल कोर्स की समीक्षा
- *एम्पावरिंग गर्ल्स एण्ड विमेन थ्रू हेल्थ एजुकेशन* प्रोजेक्ट का मूल्यांकन
- शिक्षा से जुड़े सम्मेलन/ कार्यशालाएँ/ गोष्ठियाँ

पाठ्यक्रम से परे शिक्षा की गतिविधियाँ **42**
- बाल समूह
- सामुदायिक पुस्तकालय
- मालवा में. . .
- पिपरिया पुस्तकालय की गतिविधियाँ
- परासिया पुस्तकालय

प्रकाशन **48**
- नई सोच के साथ प्रकाशन और नई दिशाएँ
- नए प्रकाशन
- प्रकाशनों का प्रसार
- सर्व शिक्षा अभियान के पुस्तक मेले
- *चकमक*
- *स्रोत* - विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर सेवा
- *शैक्षणिक संदर्भ*
- *क्यों और कैसे*

समावेश के साथ काम **58**

- सखी पहल कार्यक्रम
- पंचायत मतदाता जागरूकता अभियान
- ग्रामीण विकास के लिए भागीदारीपूर्ण योजना
- प्राकृतिक संसाधन विकास
- शिक्षा में समुदाय की भागीदारी बढ़ाना
- गाँव स्तर पर बच्चों के लिए गतिविधियों का आयोजन
- स्वास्थ्य में समुदाय की हिस्सेदारी

संस्था विकास के प्रयास **64**

- संस्था विकास की प्रक्रिया
- होशंगाबाद में कैम्पस
- कॉर्पस फंड

परिशिष्ट **(वित्तीय एवं अन्य जानकारी)** **68**

पिछले साल में ...

"अपने पिछले प्रतिवेदन में हमने तीन सालों के अपने काम का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया था। उस दौर में हम एकलव्य के गठन का सबब बने होशंगाबाद विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम और उसके बाद विकसित हुए सामाजिक अध्ययन शिक्षण कार्यक्रम के बन्द होने के उतार-चढ़ावों का सामना कर रहे थे। आज हम कह सकते हैं कि उस मुश्किल समय में से हम बाहर निकले हैं नए काम, नए कार्यक्रम, नई दिशाएँ तलाशने का हौसला लेकर।

पिछले साल, यानी सन् 2004-05 में एकलव्य में होने वाले प्रमुख कामों में से एक था हमारे पहले कैम्पस का निर्माण। होशंगाबाद में बन रहे इस कैम्पस के भवन निर्माण का काम अक्तूबर 2004 में शुरू हुआ और पूरे साल अनवरत चलता रहा। दूसरा, हमने एकलव्य के दूरगामी लक्ष्यों, उद्देश्यों, कामों और उन्हें करने की रणनीतियों पर विचार-विमर्श किया और आगामी 10 साल का एक नक्शा खींचने की कोशिश की। तीसरा, नए उभर रहे या पहले से चल रहे कार्यक्रमों के विकास के मद्देनज़र हमने एकलव्य के लिए नए कार्यकर्त्ता ढूँढने के लिए सघन प्रयास किए। इसके साथ ही पिछले साल भर में पाँच नए कामों या पुराने कार्यक्रमों में से उभरते नए पहलुओं के लिए विभिन्न स्रोतों से आर्थिक सहयोग जुटाया गया। ये काम हैं विज्ञान और प्रौद्योगिकी विषय पर हाई-स्कूल, हायर सेकेण्डरी स्कूल व कॉलेज स्तरीय पाठकों के लिए एक पाक्षिक दीवार पत्रिका (*क्यों और कैसे*) का प्रकाशन; प्रकाशन कार्यक्रम का विस्तार तथा पुस्तकालय कार्यक्रम का सुदृढ़ीकरण; विज्ञान शिक्षा के लिए मल्टीमीडिया सी.डी. का निर्माण; सामुदायिक पुस्तकालयों का गठन और समग्र शाला परिवर्तन के लिए स्कूली प्रयासों को सहायता देना।

पाठ्यक्रम तथा पाठ्यसामग्री विकास के उद्देश्य से पिछले साल हमने देश के विभिन्न हिस्सों में कई समूहों के साथ मिलकर काम किया। इनमें एक है छत्तीसगढ़ राज्य के लिए शैक्षिक विकास की एक लम्बी-अवधि योजना बनाने में विद्या भवन सोसायटी, उदयपुर तथा दिगन्तर, जयपुर के साथ उठाए गए कदम। शिक्षा में स्नातकोत्तर पढ़ाई के लिए जुलाई 2006 से शुरू होने वाले कोर्स के पाठ्यक्रम निर्माण की प्रक्रिया में हमने साझेदारी की। एकलव्य के सदस्यों तथा स्रोत व्यक्तियों ने एक नए राष्ट्रीय पाठ्यक्रम प्रारूप की रचना के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) द्वारा बनाए गए फोकस समूहों में भागीदारी की। साथ ही राजस्थान की संस्था "दूसरा दशक" द्वारा स्कूल छोड़ चुके किशोर-किशोरियों के लिए बनाए जा रहे पाठ्यक्रम के विकास में भी जुड़े रहे।

पिछले कुछ सालों से हम विभिन्न विषय क्षेत्रों और आयु वर्गों के लिए एक समग्र 'शिक्षक तथा शाला विकास कार्यक्रम' को कार्यरूप देने में लगे थे। इसी के तहत इस वर्ष भी होशंगाबाद, भोपाल व इन्दौर में तीन शिक्षक प्रशिक्षण कार्यशालाएँ आयोजित की गईं और पूरे साल चलने वाली मासिक गोष्ठियों की योजना को अमल में लाया गया। इसी सन्दर्भ में भोपाल में पाँच स्कूलों के साथ सघन काम की शुरुआत हुई।

पाठ्यक्रम से परे वैकल्पिक तरीकों से सीधे बच्चों तक शैक्षिक गतिविधियाँ पहुँचाने के उद्देश्य से जारी बाल गतिविधि कार्यक्रम तथा प्रकाशन के काम अपनी नियमित गति से जारी रहे।

इस रिपोर्ट में हमने उपरोक्त सभी कामों का समीक्षात्मक विवरण आपके साथ बाँटने की कोशिश की है। हमारी पिछली दो रिपोर्टें तीन-तीन सालों के काम की संयुक्त रिपोर्टें थीं। पिछला प्रतिवेदन तैयार करते समय ही हमने यह सोचा था कि आगे से हम आपके लिए सालाना प्रतिवेदन प्रस्तुत करेंगे। यही कोशिश आपके सामने है।"

शिक्षक विकास के कार्यक्रम

1. माध्यमिक शालाओं के शिक्षकों के साथ प्रयास

सन् 2001 से एकलव्य के सामाजिक अध्ययन शिक्षण कार्यक्रम के अन्तर्गत हम माध्यमिक स्कूलों के उन शिक्षकों के साथ काम करते रहे हैं जो स्वेच्छा से अपनी कक्षा में जारी सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में गुणात्मक बदलाव लाना चाहते हैं। वर्ष 2002 में होशंगाबाद विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम के बन्द होने के बाद से हमने यही प्रयास माध्यमिक स्तर के विज्ञान शिक्षकों के साथ भी शुरू किए। परन्तु शुरू में ये दोनों कार्यक्रम विषयों की माँगों के अनुसार अलग-अलग चल रहे थे। इस साल हमने इन दोनों कार्यक्रमों के समानान्तर पहलुओं को एक साथ पिरोते हुए कोशिश की है कि शिक्षा की हमारी व्यापक समझ के अनुरूप एक साझा और सर्वांगीण पैकेज तैयार करें। एक ऐसा पैकेज जो माध्यमिक स्तर के किसी भी शिक्षक के समक्ष शिक्षा की समझ को एक सम्पूर्ण अर्थ में प्रस्तुत करता हो। इस कोशिश में जो काम हुए उनका ब्यौरा नीचे दिया गया है।

क) ग्रीष्मकालीन शिक्षक प्रशिक्षण

एकलव्य का ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण शिक्षकों/स्कूलों से हमारे सम्बन्धों व कामों में साल भर के लिए गर्मजोशी पैदा करने वाला होता है। इस साल के अकादमिक सत्र के शुरू में ही एक 10 दिवसीय सघन प्रशिक्षण आयोजित किया गया। यह प्रशिक्षण 25 मई से 3 जून 2004 तक होशंगाबाद के पास स्थित नवोदय विद्यालय, पवारखेड़ा में किया गया।

अकादमिक तैयारी

इस बार विज्ञान व सामाजिक अध्ययन के अलग-अलग प्रशिक्षण की बजाय पहले 7 दिनों का एक कोर प्रशिक्षण तय किया गया। फिर आखिरी तीन दिन विज्ञान व सामाजिक अध्ययन विषय-विशेष के लिए रखे गए। इन तीन दिनों के लिए शिक्षकों ने स्वेच्छा से कक्षाओं का चयन किया। भाषा शिक्षण की दृष्टि से व शिक्षकों की मांग पर अंग्रेज़ी पढ़ने-समझने को लेकर छोटे-छोटे सत्र भी रखे गए। अकादमिक समूह में इन्दौर के होल्कर साइंस महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, भारत ज्ञान विज्ञान समिति, विप्रो आदि से आए साथी शामिल थे।

कोर प्रशिक्षण के अन्तर्गत आने वाली अवधारणाएँ थीं :

1. वैज्ञानिक विधि – वर्गीकरण व समूहीकरण
2. वैज्ञानिक विधि – प्रकाश संश्लेषण के सन्दर्भ में कुछ प्रयोग
3. जैव विकास
4. मापन
5. गणित – स्थानीय मान और अंक व्यवस्था
6. नक्शा
7. राष्ट्र और राष्ट्रवाद – अवधारणा और इतिहास
8. भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन – दीर्घकालीन रणनीति
9. जेंडर की अवधारणा और स्कूल के सन्दर्भ में इसका महत्व
10. भारत के संविधान की प्रस्तावना

इसके अलावा सामाजिक अध्ययन और विज्ञान प्रशिक्षण के अलग-अलग विषय थे :

1. मुगल काल की प्रशासनिक व्यवस्था
2. पहाड़, पठार व मैदान में मानव जीवन
3. मूल अधिकार
4. विद्युत आवेश व विद्युत धारा
5. कार्बन एवं उसके यौगिक
6. बल
7. पत्तियों का रूपांकन
8. शारीरिक तंत्र

इनमें से कुछ सत्रों – जैसे कार्बन, जैव विकास, जेंडर, प्रकाश संश्लेषण के माध्यम से वैज्ञानिक विधि आदि – का दस्तावेज़ीकरण भी किया गया।

उपस्थिति

मुख्यालय न छोड़ने के सरकारी आदेशों और व्यक्तिगत कारणों आदि के चलते अन्तिम क्षणों तक शिक्षकों की अपेक्षित संख्या में उतार-चढ़ाव बना रहा। इसके बावजूद हरदा, होशंगाबाद, उज्जैन, धार, देवास व नरसिंहपुर ज़िलों से शिक्षक व अन्य संस्थानों से लगभग 115 प्रशिक्षार्थी उपस्थित हुए। स्रोत दल व एकलव्य के साथियों की संख्या 48 थी।

नीचे की तालिका में प्रशिक्षण में आए शिक्षकों की क्षेत्रवार जानकारी दी गई है।

एकलव्य के आमंत्रण पर आए ये शिक्षक पूरे प्रशिक्षण में काफी लगन से सात-आठ घण्टों तक विभिन्न सत्रों में हिस्सा लेते रहे।

अन्य संस्थाओं के शिक्षा में काम करने वाले लोगों की भागीदारी अपेक्षानुरूप रही। ऐसे सहभागियों की संख्या 21 थी। ये एसोसिएशन फॉर रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग इन बेसिक साइन्स, नागपुर; जागृति बाल विकास समिति, कानपुर; आधारशिला शिक्षण केन्द्र, साकड़, बड़वानी; सहमत संस्था, केसला, होशंगाबाद; हेलन केलर दृष्टिहीन हाईस्कूल, इन्दौर; नवसर्जन ट्रस्ट, अहमदाबाद, गुजरात; कस्तूरबा ग्राम, इन्दौर; ज़िला पंचायत प्राथमिक शाला, बोरखेड़ा, नागपुर तथा रानी काजल जीवनशाला, ककराना, झाबुआ से थे।

तालिका 1

ब्लॉक	उपस्थित शिक्षक		
	निजी स्कूल	सरकारी स्कूल	कुल
होशंगाबाद	9	1	10
बाबई	4	10	14
इटारसी	2	2	4
सिवनी मालवा	1	1	2
सोहागपुर	5	3	8
पिपरिया	3	2	5
बनखेड़ी	0	2	2
हाटपिपल्या	0	37	37
नरसिंहपुर	2	0	2
हरदा	3	4	7

शिक्षकों का फीडबैक

हमने प्रशिक्षण शिविर के बाद औपचारिक रूप से एक प्रपत्र के माध्यम से शिक्षकों से फीडबैक लेने का प्रयास किया। इन प्रपत्रों में कुछ शिक्षकों ने लिखा :

"इस ट्रेनिंग के माध्यम से हमें सामाजिक परिप्रेक्ष्य को एक अलग नज़रिए से देखने में मदद मिलेगी।"

"समाज में फैल रही दुष्प्रवृत्तियों पर रोक लगाने और छात्रों के बीच आपसी प्रेम व सहानुभूति को बढ़ाने का काम कर पाएँगे।"

"छात्रों को अभिव्यक्ति का मौका देना, छात्रों को प्रयोग की सुविधा प्रदान करना तथा विषयों का प्रस्तुतीकरण प्रभावी ढंग से करना सीखा है।"

ख) मासिक बैठक

जुलाई में स्कूल खुलने के बाद सभी शिक्षकों को मासिक बैठक के बारे में पत्र भेजा गया। फिर अगस्त से होशंगाबाद, पिपरिया, हरदा, सोहागपुर, देवास व हाटपिपल्या में मासिक बैठकें शुरू हो गईं।

इन मासिक बैठकों में सामाजिक अध्ययन और विज्ञान दोनों से सम्बन्धित विषयों को पढ़ाने वाले शिक्षक आते थे। अतः यह तय किया गया कि वर्ष में आधी बैठकों में विज्ञान तथा आधी बैठकों में सामाजिक अध्ययन के विषयों पर चर्चाएँ व गतिविधियाँ की जाएँ। इन बैठकों में हम प्रमुख रूप से शिक्षकों की खुद की समझ बढ़ाने के उद्देश्य से मसौदा तैयार करते थे। हमारी यह भी कोशिश होती थी कि वर्तमान पाठ्यपुस्तक (एससीईआरटी) में दी गई ज़्यादा से ज़्यादा अवधारणाओं व हिस्सों को चर्चा में शामिल करें। इसके साथ ही हम बच्चों के साथ की जा सकने वाली गतिविधियाँ (जो पाठ्यपुस्तक में दी हैं) सहज सुलभ तरीकों से शिक्षकों के साथ भी करते थे। कोशिश हमेशा की जाती रही है कि हम शिक्षकों को सम्बन्धित विषय-वस्तु पर कुछ पठन सामग्री ज़रूर दें।

इस प्रक्रिया में हम कुछ सवालों से लगातार जूझ रहे हैं, जैसे - क्या सामाजिक अध्ययन व विज्ञान की अलग-अलग मासिक बैठक करने से शिक्षकों की उपस्थिति गोष्ठी लायक रह पाएगी? यानी कम से कम 10 शिक्षक। क्या हम मानव संसाधन की उपलब्धता तथा समय सन्तुलन बना पाएँगे? क्या हम सामाजिक अध्ययन, विज्ञान, शिक्षा शास्त्र, भाषा आदि विषयों की माँगों को पूरा कर पाएँगे?

पूरे साल की बैठकों से एक बात और स्पष्ट रूप से उभरकर आई कि फील्ड में शिक्षकों के साथ सतत् सम्पर्क बनाए रखने का सीधा सकारात्मक प्रभाव मासिक बैठकों में दिखाई देता है। ऐसा न हो तो शिक्षकों की उपस्थिति अनियमित हो जाती है। दूसरे, वर्तमान में स्कूलों में परीक्षा पारम्परिक तरीकों से होती है। अतः ज़्यादातर शैक्षणिक कार्य परीक्षा आधारित होता है। ऐसे में समय लेने वाले नवाचारी प्रयास, जो परीक्षा की तैयारी में कोई मदद नहीं करते हैं, शिक्षकों को अव्यावहारिक लगते हैं। यह भी शिक्षकों की अनियमित उपस्थिति का एक कारण हो सकता है।

इन बैठकों में आने वाले शिक्षकों के भौगोलिक इलाके पर एक नज़र डालें तो हम पाते हैं कि वे एक काफी बड़े इलाके में बिखरे हुए हैं। एक विचारणीय प्रश्न यह भी है कि इतने बड़े इलाके में महीने में एक बार, कुछ स्कूलों के चन्द शिक्षकों के साथ बैठकों का प्रभाव देखना क्या सम्भव है? अतः यह भी विचार किया जा रहा है कि कैसे हम अपना कार्य क्षेत्र समेटें ताकि छोटे इलाके में बैठकें संचालित करना तथा इसके प्रभावों का अध्ययन करना उचित व व्यावहारिक हो।

ये बैठकें सामग्री निर्माण के लिहाज़ से काफी मददगार रहीं। इन बैठकों में कार्बन, प्रकाश आदि मुद्दों पर परीक्षण किया हुआ मसौदा तैयार हुआ जिस पर आगे काम करने व इन्हें स्वतंत्र मॉड्यूल के रूप में विकसित करने का काम प्रगति पर है।

इस सत्र में (2004-2005) विभिन्न स्थानों पर हुई मासिक बैठकें, उनके विषय तथा शिक्षकों की उपस्थिति तालिका-2 में दर्शाई गई है।

2. बुनियादी क्षमता विकास कार्यक्रम

बुनियादी क्षमता विकास कार्यक्रम बाबई ब्लॉक की 10-15 शासकीय शालाओं में सक्रिय है। इसका उद्देश्य शिक्षकों की पहल के ज़रिए शाला/कक्षा में पढ़ाने की विधि में बदलाव लाना है। इसके लिए हम पूरे स्कूल, यानी पालकों तथा शाला विकास समिति सहित स्कूल के सभी अंगों के साथ काम कर रहे हैं।

इस कार्यक्रम के तहत हम नवाचार पसन्द इच्छुक शालाओं का एक समूह बनाना चाहते हैं और ब्लॉक स्तर पर उसे जीवन्त बनाए रखने के लिए ज़रूरी गैर-शासकीय ढाँचे बनाने का प्रयास करना चाहते हैं। इस कोशिश में जहाँ जितना सम्भव हो शासन तंत्र की मदद लेना व उसे मदद देना भी शामिल होगा। इससे शासकीय व गैर-शासकीय सहभागिता का एक सकारात्मक माहौल बनेगा।

तालिका 2 : मासिक बैठक 2004-2005									
		अगस्त 2004	**सितम्बर 2004**	**अक्तूबर 2004**	**नवम्बर 2004**	**दिसम्बर 2004**	**जनवरी 2005**	**फरवरी 2005**	**मार्च 2005**
होशंगाबाद	**तारीख**	8 अगस्त	12 सितम्बर	10 अक्तूबर	28 नवम्बर	5 दिसम्बर	शिक्षक सरकारी कार्यों में व्यस्त थे।	6 फरवरी	6 मार्च
	विषय	राष्ट्रीय आन्दोलन	कार्बन व यौगिक	मानचित्र	रविशंकर अजनेरिया के देहांत के कारण रद्द	कक्षा में बच्चों को कैसे पढ़ाते हैं	अतः बैठक नहीं हो पाई	अम्ल, क्षार, लवण	प्रश्न पत्र, परीक्षा, ट्रेनिंग
	शिक्षक उपस्थिति	20	15	23	-	29	-	30	27
पिपरिया	**तारीख**	1 अगस्त	12 सितम्बर	24 अक्तूबर	21 नवम्बर	12 दिसम्बर	-	20 फरवरी	-
	विषय	कार्बन व यौगिक	राष्ट्रीय आन्दोलन	मानचित्र पढ़ना	प्रकाश का अपवर्तन	जैव विकास	-	अम्ल, क्षार, लवण	-
	शिक्षक उपस्थिति	34	30	12	08	23	-	16	-
सोहागपुर	**तारीख**	22 अगस्त	19 सितम्बर	17 अक्तूबर	28 नवम्बर	18 दिसम्बर	-	13 फरवरी	-
	विषय	राष्ट्रीय आन्दोलन	कार्बन व यौगिक	सूर्यग्रहण-चन्द्रग्रहण	मानचित्र पढ़ना	कार्य, बल व ऊर्जा नाभिकीय ऊर्जा	-	अम्ल, क्षार, लवण	-
	शिक्षक उपस्थिति	34	12	16	12	57	-	07	-
हरदा	**तारीख**	8 अगस्त	19 सितम्बर	17 अक्तूबर	21 नवम्बर	19 दिसम्बर	9 जनवरी	-	-
	विषय	कार्बन व यौगिक	राष्ट्रीय आन्दोलन	मानचित्र	शिक्षक अनुपस्थिति के कारण रद्द	हमारे आसपास के परिवर्तन	फूलों की संरचना	-	-
	शिक्षक उपस्थिति	12	10	12		20	20	-	-

हाटपिपल्या	**तारीख**	27 अगस्त	29 सितम्बर	23 अक्तूबर	शिक्षाकर्मियों की	15 दिसम्बर	29 जनवरी	फरवरी	-
	विषय (विज्ञान)	दूरी मापन	क्षेत्रफल	पुनासा बाँध काशैक्षिक भ्रमण	हड़ताल के कारण बैठक नहीं हुई।	बड़े बाँधों सेफायदे-नुकसान	धातुएँ व उनके गुण	जेंडर	-
	शिक्षक उपस्थिति	22	15	33		11	19	22	-
हाटपिपल्या	**तारीख**	अगस्त	सितम्बर	अक्तूबर	शिक्षाकर्मियों की	9 दिसम्बर	6 जनवरी	3 फरवरी	-
	विषय (सामाजिकअध्ययन)	ग्राम पंचायत	ब्रिटिश समय में भूमि कर व्यवस्था	मौलिक अधिकार	हड़ताल के कारण बैठक नहीं हुई।	शिक्षक व छात्रों की लेखन क्षमता बढ़ाना	अतिक्रमणकारी शक्तियाँ	UNO के स्वरूप व कार्य	-
	शिक्षक उपस्थिति	08	11	07	-	11	09	11	-
देवास	**तारीख**	-	26 सितम्बर	17 अक्तूबर	शिक्षाकर्मियों कीहड़ताल के कारण बैठक नहीं हुई।	5 दिसम्बर	16 जनवरी	-	-
	विषय		मानचित्र पढ़ना	मानचित्र बनाना		राज्य सरकार	मालवा का इतिहास		
	शिक्षक उपस्थिति		07	21	-	08	05	-	-
उज्जैन	**तारीख**	-	-	17 अक्तूबर	7 नवम्बर	12 दिसम्बर	23 जनवरी	6 फरवरी	-
	विषय	-	-	साल भर की योजना	मानचित्र	मापन	सजीवों की संरचना तथा कार्य	चुम्बक	-
	शिक्षक उपस्थिति	-	-	12	11	14	18	15	-

अभी तक इस कार्यक्रम से जुड़े शासकीय प्राथमिक शालाओं के शिक्षकों का रवैया काफी सकारात्मक रहा है। स्थायित्व पकड़ने पर यह कार्यक्रम प्राथमिक शाला विकास के एक कार्यक्रम के रूप में उभरेगा।

क) शोध व सामग्री निर्माण

हमारा प्रयास है कि हरेक बच्चे को अपनी गति से सीखने के अवसर मिलें तथा बच्चे एक-दूसरे से व साथ मिलकर सीखें। हम ऐसी सामग्री तैयार कर रहे हैं जिसकी मदद से बच्चे खुद ज्ञान का निर्माण कर सकें। यह मानते हुए कि उचित सन्दर्भ व अनुभव मिलने पर बच्चे खुद ज्ञान का निर्माण करते हैं और हर बच्चा अपने विशिष्ट तरीके से यह निर्माण करता है, यह ज़रूरी हो जाता है कि हम उन्हें विविध, रोचक व चुनौतीपूर्ण परिस्थितियाँ दें।

भाषा : अगर हम यह स्वीकार करते हैं कि पढ़ना व लिखना संवाद तथा सम्प्रेषण के खास तरीके हैं तो उन्हें सिखाने के लिए सघन व विविधतापूर्ण संवाद/सम्प्रेषण के मौके निर्मित करने होंगे। हमने पाया कि मज़ेदार कविताओं के पोस्टरों से पढ़ना, उनके कार्ड जमाना, रंगोमेट्री, जोड़ो, जिगसॉ, मोती-धागा, चित्र बनाना आदि इसके लिए काफी उपयोगी हैं। जब शिक्षक कहानी पढ़कर सुनाते हैं और पुस्तकों की चीज़ों पर चर्चा करते हैं तो संवाद के मौके बढ़ जाते हैं। इस सन्दर्भ में हमने कुछ शोध किए हैं और कुछ सामग्री का निर्माण भी किया है। नीचे उन्हीं का संक्षिप्त ब्यौरा दिया जा रहा है।

- मालाखेड़ी के स्कूल के बच्चों का एक लघु-अध्ययन किया गया। हमने यह देखने की कोशिश की कि हमारे द्वारा तैयार कविता पोस्टर जैसी सामग्री की मदद से बच्चे पढ़ना किस तरह से सीखते हैं। वे किस तरह लिखित/छपी सामग्री का अर्थ लगाते हैं।
- पढ़ना सीख रहे बच्चों को ध्यान में रखकर बाल साहित्य की एक पाँच स्तरीय सूची बनाई गई है। इसके साथ कहानी-कविताओं पर आधारित भाषा गतिविधि-कार्ड बनाए गए हैं। ये भी कई स्तरों के लिए हैं। इन्हें पहली से तीसरी कक्षा के पुस्तकालय में उपयोग किया जा रहा है।
- पठन सामग्री को प्रासंगिक बनाने के लिए हम स्थानीय इतिहास और लोक साहित्य का उपयोग करना चाहते हैं। इस दिशा में कुछ काम हुआ है। बाबई क्षेत्र के स्थानीय इतिहास की जानकारी इकट्ठा करने के लिए समोन गाँव के दलितों और बूढ़ी महिलाओं के साथ साक्षात्कार किए गए। इनके आधार पर सामग्री तैयार की गई।
- पढ़ने की सामग्री में विविधता व रोचकता लाने तथा विषय-वस्तु को बच्चों के निकट लाने के लिए हमने कुछ विशेष प्रयास किए हैं। कुछ सामग्री बच्चों की लिखी हुई है तथा *उड़ान*, *चकमक* आदि पत्रिकाओं से संकलित की गई है। साथ ही हम स्थानीय बोली में पठन सामग्री भी तैयार कर रहे हैं।
- उपयुक्त चित्रों का होना और उनका उपयोग कर पाना एक बड़ी समस्या है। हमारा सीमित अध्ययन यह बताता है कि सामग्री को पढ़कर अर्थ निर्माण करने में चित्रों की अहम भूमिका है। इसलिए हमें इस पर विशेष ध्यान देना होगा। फिलहाल हम *खुशी-खुशी*, *चकमक* व *उड़ान* में छपे बच्चों के चित्रों का उपयोग कर रहे हैं। भोपाल के कुछ चित्रकारों के साथ मिलकर एक बिग-बुक (विशाल किताब) और दो कविता पोस्टर भी तैयार कर रहे हैं।
- होशंगाबाद ज़िले के बाबई क्षेत्र के गाँवों में बच्चों द्वारा गाए जाने वाली नॉनसेन्स कविताओं तथा खेल गीतों को बाबई के ही एक शिक्षक ने इकट्ठा किया है। इन्हें गीतों की एक पुस्तिका के रूप में प्रकाशित करने की तैयारी की जा रही है।

गणित : गणितीय सामग्री के निर्माण में हमारी कोशिश है कि बच्चे संख्याओं के साथ एक सहज रिश्ता बनाएँ और खुद सोचकर अपनी समझ बनाएँ। शुरू में हमने सोचा था कि स्थानीय मान ही सबसे विकट समस्या है। अतः इस अवधारणा को विकसित करने के लिए सामग्री बनाने पर ज़ोर दिया। (पिछले साल लकड़ी में इकाई-दहाई सेट तथा इकाई-दहाई-सैकड़ा के पासा खेल तैयार किए गए थे।) परन्तु जल्द ही हम इस नतीजे पर पहुँचे कि पहली से तीसरी कक्षाओं में इससे भी ज़्यादा बुनियादी अवधारणाओं को विकसित करना होगा। पिछले साल मालाखेड़ी में हमने पाया था कि तीसरी कक्षा में लगभग 30-40% बच्चे वर्गीकरण, क्रमीकरण व संख्या संरक्षण नहीं कर पाते हैं या उसके कगार पर हैं। अतः उनके लिए स्थानीय मान अब भी दूर की बात है। इस सन्दर्भ में :

- दिल्ली विश्वविद्यालय के विज्ञान केन्द्र की पहली कक्षा की सामग्री पर आधारित शुरुआती गणित का एक पर्चा तैयार किया गया। पहली और दूसरी कक्षाओं के बच्चों के लिए इसी पर आधारित कुछ गतिविधि शीट भी तैयार की गईं।
- स्थानीय रूप से उपलब्ध सस्ते खिलौनों व सजावटी सामग्री का इस्तेमाल करके पहली और दूसरी कक्षाओं के लिए एक गतिविधि पैकेज तैयार किया गया है। इस पैकेज के उपयोग के लिए एक पर्चा भी लिखा गया है। यह सामग्री बच्चों व शिक्षकों के साथ परीक्षण के बाद स्कूलों में वितरित की गई है।

ख) शिक्षकों के साथ काम व उनका प्रशिक्षण

हमारे सामने सबसे बड़ी चुनौती है शिक्षकों को बच्चों के सीखने की प्रक्रिया के प्रति संवेदनशील बनाना तथा बच्चों व शिक्षकों के बीच संवाद बढ़ाना। अभी तक जो प्रशिक्षण शिक्षकों के साथ हुए हैं उनमें इन्हीं पर फोकस रहा है, चाहे वह पुस्तकालय के उपयोग पर हो या भाषा या गणित शिक्षण पर। शिक्षक प्रशिक्षणों में हम यह भी प्रयास करते हैं कि शिक्षक बच्चों के लिए स्थानीय बोली में पठन सामग्री बनाएँ।

इस साल बाबई के ब्लॉक स्रोत केन्द्र द्वारा आयोजित शिक्षक प्रशिक्षण में हमने समय-समय पर भागीदारी की। यह प्रशिक्षण प्राथमिक और माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के लिए आयोजित किया गया था। हमारी प्रमुख भूमिका विभिन्न प्रकार की किट सामग्री, पुस्तकालय व कविता पोस्टर आदि की मदद से गतिविधि आधारित शिक्षण पद्धति का प्रशिक्षण देने की रही। इस पहल से हम इस क्षेत्र के कई उत्सुक और उत्साही शिक्षकों के सम्पर्क में आए।

इसके अलावा माध्यमिक शाला के शिक्षकों के लिए आयोजित इतवारीय कार्यशाला में दो बार शिक्षकों के साथ हमारे द्वारा विकसित शुरुआती प्राथमिक स्तर की गणित किट को बाँटा गया और उसके उपयोग पर चर्चा की गई।

ग) बाबई ब्लॉक के स्कूलों व समुदाय के साथ काम

हमने इस साल कोशिश की कि लगभग 10 स्कूलों में बाल मेले को हर माह की एक नियमित गतिविधि के रूप में आयोजित किया जाए। इसके लिए कुछ शिक्षकों और गाँवों के युवाओं को प्रशिक्षण भी दिया गया। यह अभियान पालक-शिक्षक संघ की मदद से चलाया गया तथा जुलाई 2004 से फरवरी 2005 के बीच लगभग 30 मेले आयोजित हुए। इन बाल मेलों में समुदाय की भागीदारी बड़े पैमाने पर रही।

बाल मेलों के माध्यम से हमारा प्रयास है कि बच्चों के साथ एक खुले और रोचक, सृजनात्मक माहौल में काम करने के तरीके शिक्षकों व पालकों में फैलें। वे इन्हें समझ पाएँ, खुद करके अनुभव लें, इनकी उपयोगिता के बारे में आश्वस्त हों और उनके प्रभाव को प्रत्यक्ष देख पाएँ।

3. भोपाल शिक्षा स्रोत केन्द्र

भोपाल शहर में स्कूल एवं स्कूल के बाहर बच्चों को बेहतर शिक्षा के मौके देने के उद्देश्य से एकलव्य के भोपाल केन्द्र ने कुछ प्रयास किए हैं। ये प्रयास भोपाल शिक्षा स्रोत केन्द्र के तहत किए गए। बेहतर शिक्षा से तात्पर्य है ऐसे संसाधनों को जुटाना जिनकी मदद से बच्चों को ज़्यादा सहज और सरल ढंग से सीखने और समझने के मौके मिल सकें। साथ ही कुछ वैकल्पिक गतिविधियों/तरीकों के माध्यम से उनकी रोज़मर्रा की ज़िन्दगी के अनुभवों को उनकी दैनिक शैक्षणिक दिनचर्या का हिस्सा बनाना।

इन उद्देश्यों को ध्यान में रखकर हमने अपने कार्यक्रम को तीन हिस्सों में विभाजित किया है। ये हैं : स्कूली कार्यक्रम, मोहल्लों में तथा अन्य संस्थाओं के साथ काम और बाल सन्दर्भ पुस्तकालय। इनके अन्तर्गत पिछले एक साल में किए गए काम का बिन्दुवार विवरण दिया गया है।

क) स्कूली कार्यक्रम

1. पुस्तकालय एवं बाल अखबार

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत 15 सरकारी एवं गैर-सरकारी स्कूलों में सघन रूप से पुस्तकालय कार्यक्रम, दीवार अखबार एवं शिक्षक प्रशिक्षण किया जा रहा है। इससे लगभग 80 शिक्षकों के माध्यम से 3000 बच्चों से हमारा जुड़ाव बना।

पुस्तकालय कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रत्येक स्कूल की मासिक कार्ययोजना में कक्षा 3 से कक्षा 8 के लिए सप्ताह में एक पीरियड पुस्तकालय का रखा जाता है। इस कालखण्ड को पुस्तकें पढ़ने, उन पर चर्चा करने, अपनी प्रतिक्रिया देने एवं लिखकर अभिव्यक्त करने के लिए रखा गया। ये सारी गतिविधियाँ बच्चों के भाषा कौशलों एवं क्षमताओं के विकास को ध्यान में रखकर की जाती रही हैं।

इन्हीं स्कूलों की माध्यमिक कक्षाओं में पढ़ने वाले बच्चे 15 दिन में एक बार अपने स्कूल स्तर पर एक दीवार अखबार निकालते हैं। इसमें कक्षा के प्रत्येक बच्चे की भागीदारी रहती है। बच्चे अपने आसपास के माहौल से रोज़मर्रा की घटनाओं का संकलन करते हैं और पुस्तकालय सामग्री को पढ़कर अपनी राय एवं समीक्षात्मक टिप्पणी को दर्ज़ करते हैं। यह बाल अखबार स्कूल के नोटिस बोर्ड पर लगभग एक सप्ताह तक प्रदर्शित किया जाता है। हरेक कक्षा से 4 से 6 अखबार निकलते हैं।

2. बाल मेले

नए सत्र की शुरुआत में या नए स्कूल में कार्यक्रम शुरू करते समय माहौल बनाने के लिए प्रत्येक स्कूल में एक दिन के बाल मेले का आयोजन किया जाता है। इसमें सभी कक्षाओं के बच्चों एवं शिक्षकों की बराबरी से भागीदारी रहती है। बाल मेले के दौरान हर कक्षा के भीतर ही ऑरीगेमी, क्राफ्ट, विज्ञान के प्रयोग, कहानी-कविता लिखना, पुस्तकें पढ़ना, पत्तियों से आकृतियाँ बनाना, सामूहिक चित्रकारी करना जैसी गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। इससे बच्चों के भीतर छुपी सृजनशीलता तो बाहर आती ही है, साथ में बच्चों एवं शिक्षकों को मिलजुलकर सीखने, समझने और काम करने के मौके भी मिलते हैं। इस वर्ष 15 स्कूलों में किए गए बाल मेलों में लगभग 1500 बच्चों एवं 100 शिक्षकों की भागीदारी रही।

3. स्रोत बच्चों का प्रशिक्षण

15 स्कूलों के लगभग 70 बच्चों को स्रोत बच्चों के रूप में दो दिन का प्रशिक्षण दिया गया। ये बच्चे अब पुस्तकालय की गतिविधियों एवं दीवार अखबार के निर्माण के समय अपनी कक्षा के बाकी बच्चों की मदद कर सकेंगे। इससे समूह में गतिविधियों का ठीक से संचालन हो सकेगा और शिक्षकों को काम में सहयोग भी मिलेगा।

4. शिक्षक प्रशिक्षण

समझना और अभिव्यक्ति भाषा विकास के दो पहलू हैं। भाषा विकास को सशक्त करने के लिए हमने पुस्तकालय एवं दीवार अखबार कार्यक्रम के अन्तर्गत शिक्षक प्रशिक्षण का काम भी उठाया है। पुस्तकालय कार्यक्रम एवं दीवार अखबार के निर्माण की कार्ययोजना में हरेक स्कूल के एक शिक्षक की भागीदारी सुनिश्चित की जाती है। इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता है कि शिक्षक बच्चों पर अपनी बात न थोपें तथा बच्चों को अपनी बात कहने-लिखने की स्वतंत्रता मिले। इन प्रशिक्षणों के सत्र मोटे रूप से इस प्रकार होते हैं :

विभिन्न स्तरों के लिए पुस्तक चयन

- पढ़ना पूर्व
- पढ़ने की शुरुआत
- पढ़कर समझना

पुस्तक परिचय के लिए गतिविधियाँ

- कहानी सुनाना – मौखिक
  – पुस्तकों से
- कविता वाचन – मौखिक
  – पुस्तकों से
  – पोस्टरों से
- कविता से पढ़ना सीखने की गतिविधियाँ
- गतिविधि पुस्तक पढ़कर चीज़ें बनाना
- सुनी या पढ़ी हुई कहानी पर नाटक तैयार करना – मुखौटों के साथ
- बाल अखबार के लिए चर्चा व तैयारी करना

इस वर्ष सत्र के शुरू में सभी स्कूलों के दो-दो शिक्षकों का एक दो-दिनी प्रशिक्षण किया गया ताकि काम करते समय बच्चों को आने वाली अड़चनों एवं अवरोधों को ये शिक्षक विचार-विमर्श के द्वारा सुलझा सकें।

ख) मोहल्ला लाइब्रेरी कार्यक्रम

स्कूल के बाहर भी बच्चों को सीखने, समझने, अपनी बात कहने/लिखने के मौके मिल सकें, बच्चों के शिक्षण के प्रति समुदाय सजग हो, अच्छी शिक्षा के लिए वह खुद भी कुछ वैकल्पिक संसाधन जुटाने का प्रयास करे – इन उद्देश्यों को ध्यान में रखकर इस वर्ष भोपाल शहर की 14 बस्तियों में छोटे-छोटे बाल पुस्तकालय स्थापित किए गए। इन पुस्तकालयों का संचालन करने एवं उसके लिए स्थान उपलब्ध कराने की ज़िम्मेदारी उस बस्ती के रुचि रखने वाले लोगों की होती है। व्यवस्था और संचालन की ज़िम्मेदारी वे बारी-बारी से उठाते हैं। ये साथी पूर्णतया स्वैच्छिक रूप से काम करते हैं।

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत भी पहले बताए गए प्रशिक्षण की तरह ही पुस्तकालय चलाने वाले कार्यकर्त्ताओं का प्रशिक्षण किया जाता है। पुस्तकालय का संचालन करने वाले 60 साथियों को इस वर्ष दो बार प्रशिक्षित किया गया। पुस्तकालय संचालकों पर बच्चों के पढ़ने-लिखने, नई सामग्री एकत्रित करने, किताबों का लेखा-जोखा रखने, महीने में एक बार दीवार अखबार निकलवाने आदि की जवाबदेही रहती है। साथ में समुदाय का जुड़ाव बनाने, सम्पर्क करने, कार्यक्रम का फॉलोअप तथा रिव्यू आदि का काम भी यही लोग करते हैं।

पिछले साल 14 स्थानीय पुस्तकालयों के ज़रिए लगभग 1200 बच्चों के साथ सघन काम किया गया। इसके अलावा 250 वयस्कों ने पुस्तकालय की किताबों को पढ़ा एवं बैठकों में हिस्सा लिया।

ग) बाल साहित्य सन्दर्भ पुस्तकालय

पुस्तकालयों व बाल गतिविधियों के लिए तथा बाल साहित्य के चयन को बेहतर बनाने के लिए एक स्रोत विकसित करने के उद्देश्य से एकलव्य ने पिछले सालों में एक बाल साहित्य सन्दर्भ पुस्तकालय विकसित किया है। इस पुस्तकालय में लगभग 6000 किताबें हैं तथा इस वर्ष 800 नई किताबें पुस्तकालय में शामिल की गई हैं।

शिक्षकों, लोगों एवं बाल साहित्यकारों से लगातार विचार-विमर्श करके तथा बच्चों के साथ उपयोग करके अभी लगभग 500 पुस्तकों की तीन अलग-अलग पुस्तक सूचियाँ तैयार की जा रही हैं। इनकी मदद से बच्चों की शिक्षा पर काम कर रहे शिक्षक, अभिभावक या संस्थाएँ अच्छी किताबें आसानी से चुन सकेंगे। ये सूचियाँ 3+, 8+, और

12+ उम्र के बच्चों के अनुसार बनाई जा रही हैं। इस वर्ष पहली और दूसरी पुस्तक सूची के लिए किताबों का प्राथमिक चयन किया गया। लगभग 30 पुस्तकों की समीक्षा का काम भी किया गया है। पुस्तकालय गतिविधियों का एक संकलन भी तैयार किया जा रहा है।

4. इन्दौर शिक्षक स्रोत केन्द्र

पिछले सालों में एकलव्य ने अपने इन्दौर केन्द्र को शिक्षक स्रोत केन्द्र के रूप में विकसित करने के प्रयास किए हैं। इसके अन्तर्गत हम 33 स्कूलों के साथ नियमित रूप से काम कर रहे हैं।

इस वर्ष इन सभी स्कूलों के साथ शिक्षक प्रशिक्षण, मासिक उन्मुखीकरण गोष्ठियाँ तथा प्राचार्य कार्यशालाएँ आयोजित की गईं। इन प्रयासों का सिलसिलेवार ब्यौरा इस प्रकार है :

क) 24 से 30 जून 2004 को इन्दौर के होल्कर कॉलेज में एक शिक्षक प्रशिक्षण आयोजित किया गया। इसमें इन्दौर में हमारे साथ जुड़े 18 स्कूलों के प्राथमिक स्तर के 75 शिक्षकों ने भाग लिया। प्रशिक्षण में भाषा, गणित और पर्यावरण विषयों के साथ ही इस दफा बार पहली बार सृजनात्मक गतिविधियों पर भी सत्र आयोजित किए गए।

ख) बाकी के साल भर इन सभी स्कूलों के शिक्षकों के साथ नियमित मासिक गोष्ठियाँ आयोजित की गईं। मासिक गोष्ठियों में, प्राथमिक स्तर के विषयों के साथ ही, शिक्षकों की माँगों और ज़रूरतों तथा हमारी तैयारी को देखते हुए कई माध्यमिक स्तर के विषय भी लिए गए। इन मासिक बैठकों का ब्यौरा नीचे दो तालिकाओं में दिया गया है।

ग) जिन स्कूलों के साथ हम नियमित रूप से काम कर रहे हैं उनके प्राचार्यों के साथ शिक्षक प्रशिक्षण और अन्य व्यवस्थाओं के बारे में चर्चा करने के लिए दो कार्यशालाएँ आयोजित की गईं। पहली कार्यशाला 21 जुलाई 2004 को हुई जिसमें नौ प्राचार्यों ने भाग लिया। दूसरी कार्यशाला 30 अक्तूबर 2004 को की गई जिसमें तीन प्राचार्यों ने भाग लिया।

तालिका 3 प्राथमिक स्कूल के लिए

तारीख	विषय	उपस्थित स्कूल	उपस्थित शिक्षक
31 जुलाई 2004	भिन्न (गणित)	09	26
21 अगस्त 2004	अंग्रेज़ी	13	39
25 सितम्बर 2004	नक्शा (भूगोल)	07	16
13 अक्तूबर 2004	भाग (गणित)	07	11
16 अक्तूबर 2004	ऑरीगैमी	05	10
27 नवम्बर 2004	हिन्दी	05	11
05 फरवरी 2005	अंग्रेज़ी	10	11

तालिका 4 माध्यमिक स्कूल के लिए

तारीख	विषय	उपस्थित स्कूल	उपस्थित शिक्षक
16 सितम्बर 2004	सामाजिक अध्ययन	14	21
19 सितम्बर 2004	प्रकाश और कार्बन	13	31
30 अक्तूबर 2004	वर्गीकरण	02	03
06 नवम्बर 2004	ज्यामिति की अवधारणाएँ	08	19
26 नवम्बर 2004	कागज़ मोड़ने की कला से ज्यामिति	01	6
18 दिसम्बर 2004	राष्ट्रीय आन्दोलन (1885 से 1947)	08	13
26 फरवरी 2005	सामाजिक अध्ययन के प्रोजेक्ट	10	14

घ) साल भर इन्दौर की टीम द्वारा नियमित रूप से इन स्कूलों के दौरे किए गए। इसमें प्रमुख रूप से शिक्षकों के साथ शैक्षिक काम की योजना बनाना, मासिक गोष्ठियों की तैयारी करना, प्रशिक्षण में लिए गए विषयों

को कक्षा में कितने हद तक पढ़ाया जा सका है, यह देखना आदि हो पाता है। अंग्रेज़ी विषय के पढ़ने-पढ़ाने में शिक्षकों को आने वाली दिक्कतों को ध्यान में रखते हुए अगस्त और अक्तूबर 2004 और फरवरी 2005 में अंग्रेज़ी के स्रोत व्यक्तियों की मदद से विशेष अनुवर्तन किए गए। इस समय अंग्रेज़ी पढ़ाने की योजना बनाने के साथ ही हरेक शिक्षक की विशिष्ट समस्याओं को सुलझाने के प्रयास भी किए गए। इसके लिए उन्हें दिक्कत देने वाले मुद्दों पर पठन सामग्री और पर्चे भी दिए गए। फरवरी के अनुवर्तन के दौरान पढ़ाने के वैकल्पिक तरीकों के अनुरूप विद्यार्थियों के मूल्यांकन पर भी शिक्षकों से चर्चा की गई।

शाला विकास के कार्यक्रम

1. समग्र शाला परिवर्तन कार्यक्रम

एकलव्य ने अपने पहले 10-15 सालों के काम में विभिन्न पाठ्यक्रमों का विकास किया। ये थे प्राथमिक शिक्षा का पाठ्यक्रम एवं माध्यमिक स्तर पर विज्ञान एवं सामाजिक अध्ययन के पाठ्यक्रम। इन्हें कई शासकीय शालाओं में कई सालों तक लागू भी किया गया। पाठ्यक्रम क्रियान्वयन से जुड़े कई प्रशासनिक एवं ढाँचागत पहलुओं को भी विकसित किया गया। लेकिन फिर भी यह महसूस होता रहा है कि जब तक शिक्षक-शिक्षिकाएँ, प्रधानाध्यापक, समुदाय, पालक-शिक्षक संघ जैसे सभी घटकों के साथ व्यवस्थित काम नहीं होता, तब तक किसी भी एक विषय के शिक्षण में लाए जाने वाले सुधारों के क्रियान्वयन में कमियाँ रह जाती हैं। इसी तरह यह भी महसूस हो रहा था कि यदि कुछ ही विषयों या कुछ ही कक्षाओं में गुणवत्ता सुधार का काम हो रहा हो तो पूरे स्कूल का माहौल नहीं बदल पाता है। जो शिक्षक कार्यक्रम से जुड़ते हैं, उन्हें दूसरे शिक्षकों का साथ व सहयोग नहीं मिल पाता है।

इस बीच एकलव्य को विप्रो कम्पनी के एक कार्यक्रम को जानने का अवसर मिला। बच्चों में सोचने, समीक्षा करने, चिन्तन करने की प्रवृत्ति और कौशल विकसित करने के विचार से विप्रो कम्पनी ने देश के कई महानगरों और शहरों में विभिन्न संस्थाओं के साथ मिलकर शालाओं में "विप्रो अपलाईंग थॉट इन स्कूल्स" (WATIS) नाम से एक कार्यक्रम चलाया है। इसके शुरुआती दौर में कुछ संस्थाओं के साथ शिक्षक विकास का प्रयास शुरू हुआ। फिर सन् 2004 में यह समग्र शाला परिवर्तन (Whole School Transformation or WST) के प्रयास के रूप में विकसित हुआ। इस कार्यक्रम को रूप देने के लिए WATIS के सभी साझेदार संस्थाओं ने मिलकर चिन्तन किया। इस प्रक्रिया में एकलव्य ने भी शिरकत की। यह विचार उभरा कि सभी कक्षाओं के शिक्षकों, पालकों, प्रधानाध्यापकों व प्रबन्धन, सभी को साथ लेकर चलने की ज़रूरत है। विप्रो के साथ काम करने वाली बाकी संस्थाओं ने अब तक सामान्यतः उच्च वर्गीय शालाओं के साथ काम किया था। एकलव्य चाहता था कि हर तरह की शालाओं के साथ काम करें - सरकारी व साधारण निजी शालाओं के साथ भी। इस समझ के साथ सन् 2004 में एकलव्य ने भोपाल के कुछ निजी स्कूलों में विप्रो के सहयोग से समग्र शाला परिवर्तन का काम शुरू किया।

क) शिक्षक प्रशिक्षण

अप्रैल-मई 2004 में कुछ शालाओं के प्रबन्धन से इस कार्यक्रम में भागीदारी की बात हुई। जिन शालाओं ने रुचि दिखाई उनके शिक्षकों के लिए जून 2004 में भोपाल में एक आठ-दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित किया गया। यह प्रशिक्षण पूर्व-प्राथमिक से माध्यमिक शाला स्तर तक के विभिन्न विषयों में दिया गया। भाषा, गणित एवं पर्यावरण अध्ययन के कुछ विषयों पर प्राथमिक स्तर पर काम किया गया। माध्यमिक स्तर पर भाषा एवं विज्ञान पर काम हुआ। एक एकीकृत प्रोजेक्ट भी किया गया जिसमें एक ही मुद्दे - कचरा- के माध्यम से भाषा, गणित व पर्यावरण अध्ययन के कौशलों पर काम किया गया।

इस प्रशिक्षण में करीब 35 शिक्षकों ने भाग लिया। शुरू में शिक्षकों को प्राथमिक व माध्यमिक, दो भागों में बाँटा गया था, परन्तु बाद में दोनों को मिलाकर एक ही समूह में काम किया गया।

प्रशिक्षण में शामिल सात शालाओं में से पाँच शालाओं में वर्ष 2004-2005 में सघन काम हुआ। इनमें से तीन शालाओं में शिक्षण का माध्यम अंग्रेज़ी है और शेष दोनों में हिन्दी माध्यम से पढ़ाई होती है।

ख) स्कूल में क्रियान्वयन

प्रशिक्षण के बाद हर महीने एकलव्य के स्रोत व्यक्तियों द्वारा एक या दो बार कक्षा अवलोकन व शिक्षकों एवं प्रधानाध्यापकों से चर्चा की जाती रही। चर्चा के विषय विविध थे – जैसे सीखने-सिखाने की सामग्री का उपयोग, छोटे समूहों में काम, बच्चों के काम के प्रस्तुतीकरण की व्यवस्था, अवधारणाओं को स्पष्ट करने के लिए गतिविधियाँ चुनना व कक्षा में करना आदि। चारों विषयों में पहले के पढ़ाने के तरीकों से भिन्न तरीकों के इस्तेमाल की कोशिश हुई। एक स्कूल में छठी और सातवीं में विज्ञान व सामाजिक अध्ययन को गतिविधि आधारित बनाने की कोशिश की गई। योजना बनाने व कक्षा में काम दर्शाने के भी कुछ प्रयास हुए। परन्तु माध्यमिक शाला में काम कम हो पाया।

पूर्व-प्राथमिक एवं प्राथमिक स्तर पर कक्षाओं में भाषा और गणित की काफी गतिविधियाँ हुईं और शिक्षक अपनी तरफ से भी प्रयास करते रहे। ये गतिविधियाँ थीं : कहानी सुनाना, कहानी पर चित्र बनाना, माचिस की तीलियों से स्थानीय मान सिखाना, भाषा के पाठों पर चित्र बनाना, आदि।

इस वर्ष के दौरान एक शाला (सेवन हिल्स पब्लिक स्कूल, न्यू मार्केट) में पालकों के साथ एक कार्यशाला की गई जिसमें उनसे ऐसी गतिविधियाँ करवाई गईं जो बच्चों की सीखने की प्रक्रिया और गतिविधि आधारित शिक्षण के पहलुओं और महत्व को उभारें। यह कार्यशाला काफी सफल रही। पालकों ने ऐसी और कार्यशालाएँ करने की माँग की। परन्तु हम इस शाला एवं अन्य शालाओं में और कार्यशालाएँ नहीं कर पाए।

जनवरी 2005 में हमने प्रधान अध्यापिकाओं एवं शिक्षकों के साथ पाठ्यक्रम की समझ विकसित करने पर एक कार्यशाला की। उद्देश्य था इस कार्यशाला में बनी समझ को पुस्तकों के चुनाव का आधार बनाना। चार शालाएँ पाठ्यपुस्तक निगम की पुस्तकें उपयोग करती हैं। इन पाठ्यपुस्तकों के अलावा दो शालाएँ साथ में सहायक पुस्तकों का उपयोग भी करती हैं। सहायक पुस्तकें चुनने के उनके अपने आधार हैं। पाँचवीं शाला, भारतीय विद्या भवन, एक फ्रेंचाइज़ी संस्था से जुड़ी है जो अब केन्द्रित तरीके से अपना अकादमिक कार्यक्रम तय कर रही है। इस वजह से इनके लिए अपनी स्वायत्तता बनाए रखने और एकलव्य जैसी स्रोत संस्था के साथ काम करने में मुश्किल आई।

साल भर के इन अनुभवों से हमें यह स्पष्ट हुआ कि दो शालाओं के कुछ शिक्षकों के बहुत रुचि से काम करने के बावजूद इनके प्रबन्धन से जुड़े कारणों से काम में रुकावटें आ रही थीं। एक तीसरी शाला के केन्द्रीकृत प्रबन्धन की वजह से दिक्कत आ रही थी।

बाकी दो शालाएँ – सेवन हिल्स, न्यू मार्केट एवं सेवन हिल्स, अरेरा कॉलोनी – एक ही प्रबन्धन में आते हैं और उन्होंने न केवल इस काम को आगे बढ़ाने में रुचि दिखाई है, बल्कि उनके दो और स्कूल भी इस प्रयास से जुड़े हैं। इनमें बच्चों की संख्या बढ़ाने के लिए प्रबन्धन में कुछ बदलाव किए गए हैं और कुछ और किए जा रहे हैं। अगले दो वर्षों में इन्हीं चार शालाओं के साथ काम आगे बढ़ाने की योजना है।

2. शाला विकास के लिए कुछ और कदम

क) सघन स्कूल फॉलोअप

अपने कार्यक्षेत्र में चल रहे शिक्षक विकास के कामों को और अधिक बल प्रदान करने के उद्देश्य से हमने कुछ स्कूलों में ट्रेनिंग एवं मासिक बैठकों के अलावा कुछ और इनपुट्स देने का फैसला किया। तय किया गया कि प्रत्येक स्कूल में हर माह कम-से-कम पाँच या छह दिन जाकर स्कूल के शिक्षकों की सहायता करने की भी पहल की जाएगी।

हिन्द पब्लिक स्कूल, गुज्जरवाड़ा, बाबई और प्रखर भारती स्कूल, जासलपुर, होशंगाबाद में सघन कार्य की शुरुआत हुई। गुज्जरवाड़ा में बच्चों व शिक्षकों के साथ मिलकर "प्रकाश का परावर्तन" पाठ प्रयोग विधि से कक्षा में पढ़वाया गया। प्रखर भारती स्कूल, जासलपुर में "पंचायत" पाठ पर बच्चों से बातचीत की गई तथा सभी छात्रों को सम्बन्धित

प्रश्नोत्तर दिए गए। उस समय गाँव में पंचायत का चुनाव हो रहा था। इससे गाँव में होने वाले चुनाव से पाठ के सम्बन्ध को उभारना काफी सार्थक रहा। यहाँ सहायक सामग्री के रूप में नक्शे भी उपलब्ध करवाए गए।

ख) बच्चों के साथ पाठ्यक्रम सम्बन्धी कार्यशालाएँ

अपने कार्यक्षेत्र में स्कूलों और शिक्षकों के साथ काम करते हुए सीधे बच्चों के साथ सम्पर्क बनाए रखने की ज़रूरत भी लगातार महसूस होती है। इस आशय से हमने बच्चों के लिए पाठ्यक्रम से जुड़े विभिन्न विषयों पर छोटी-बड़ी 36 कार्यशालाएं आयोजित कीं। अमूमन इन कार्यशालाओं की अवधि (दो दिनों में) तीन से दस घण्टे तक रही। इनमें विज्ञान व गणित विषयों की निम्नलिखित अवधारणाओं पर चर्चा व गतिविधि की गई :

1. शरीर के आन्तरिक अंग
2. न्यूटन के सिर पर सेब गिरा?
3. रसायन शास्त्र के प्रयोग व चर्चा
4. विद्युत व इलेक्ट्रॉनिक परिपथ
5. प्रकाश
6. आवेश - स्थिर विद्युत
7. मालवा का प्राचीन इतिहास (व्याख्यान)
8. बीज गणित
9. नेपियर पट्टियाँ
10. टी. वी. पत्रकारिता

ये कार्यशालाएँ आमतौर पर स्कूल के बाहर आयोजित की गईं। इन कार्यशालाओं से हमें विषय आधारित सामग्री विकसित करने में मदद मिल पाई।

ग) सवालीराम क्विज़

इस सत्र की शुरुआत में बच्चों द्वारा सवालीराम को लिखे गए खतों की संख्या में इज़ाफा हुआ था। बच्चों तक सवालीराम की पहुँच बढ़ाने के उद्देश्य से इस काम में कुछ नयापन लाने की कोशिश की गई। इस प्रक्रिया के तहत स्थानीय अवलोकन व सर्वेक्षण आधारित काम करने थे, जैसे :

1. पानी के स्रोत और मिट्टी के बारे में सभी सम्भव जानकारी पता करना।
2. सूर्योदय का सतत् अवलोकन एक निश्चित समय व स्थान से करना।

बच्चों की परीक्षा के दौरान व तुरन्त बाद इन मुद्दों पर कुछ सवालों के बड़े पोस्टर बनाकर 40-45 स्कूलों में पहुँचाए गए। बच्चों को पूरी छूट थी कि वे किसी से भी इनके बारे में पूछें या किताबें देखें। ये सवाल बच्चों को गम्भीरता से अपने आस-पास खोजबीन करने को प्रेरित करने वाले थे। इनमें से हिरणखेड़ा, बाबई व पचमढ़ी के एक-एक स्कूल से तकरीबन 35 बच्चों की रिपोर्टें हमें प्राप्त हुईं।

शैक्षिक शोध और सामग्री निर्माण

1. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) की पाठ्यपुस्तकों की समीक्षा

पिछले साल हमने राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एससीईआरटी) की छठी कक्षा की विज्ञान की पाठ्यपुस्तक की समीक्षा की थी। इसी क्रम में इस साल हमने राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद की छठी और सातवीं कक्षाओं की विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों की समीक्षा की है। हमने छठी कक्षा की किताबों के हरेक अध्याय की समीक्षा की और फिर पूरी किताब को समग्र रूप से भी देखा। सातवीं कक्षा की किताब की समीक्षा करते हुए हमने उसमें पढ़ाई जा रही अवधारणाओं का छठी कक्षा की किताब में पढ़ाई गई अवधारणाओं से सम्बन्ध

भी देखा। इसके आधार पर अब सातवीं कक्षा की किताब की समग्र समीक्षा तैयार की जानी है। इन किताबों की समीक्षा करते हुए हमने निम्न बातों का ध्यान रखा :

- राष्ट्रीय पाठ्यक्रम प्रारूप – 2000, उसके आधार पर बने पाठ्यक्रम और दिशा निर्देशों में दर्ज विज्ञान शिक्षण के उद्देश्यों को ये पाठ्यपुस्तकें किस हद तक पूरा कर पा रही हैं?
- पाठों की विषयवस्तु सम्बन्धित कक्षा के लिए कितनी उपयुक्त है? प्रस्तुतीकरण तथा अवधारणाओं का क्रम कैसा है? ये विद्यार्थियों के किस तरह के पूर्वज्ञान को मानकर चलती हैं?
- भाषा कैसी है? उसका स्तर क्या है? सरल, सतही, कठिन?
- चित्रांकन कैसा है? कितने चित्र हैं? वे पर्याप्त हैं या नहीं? उनकी गुणवत्ता कैसी है? चित्र नामांकित हैं या नहीं?
- गतिविधियाँ – इनका सम्बन्धित विषय से कितना ताल्लुक है? क्या ये गतिविधियाँ की जा सकती हैं? क्या दिशा-निर्देश पर्याप्त हैं? क्या गतिविधियों को पर्याप्त रूप से रोचक बनाया गया है?
- अभ्यास के सवाल – किस तरह के प्रश्न पूछे जा रहे हैं? इन प्रश्नों से विद्यार्थियों से की जा रही "सीखने की अपेक्षा" के बारे में क्या पता चलता है?

2. शिक्षक विकास दस्तावेज़ीकरण

मध्य प्रदेश में कई इलाकों के शिक्षकों के साथ काम करते हुए हमारा उद्देश्य एक ऐसा मॉडल विकसित करना है जो राज्य भर में तथा अन्य राज्यों के शिक्षकों के लिए प्रेरणा का स्रोत बने और नवाचारी शिक्षा को आगे बढ़ाने में सहायक बने। इन शिक्षकों के साथ काम करने के साथ-साथ ही इस प्रक्रिया का दस्तावेज़ीकरण किया जाना भी ज़रूरी है ताकि इस मॉडल की शक्तियाँ व कमज़ोरियाँ सामने आएँ।

इसके लिए होशंगाबाद, हरदा तथा देवास ज़िले के आठ स्कूलों के शिक्षकों की कक्षाओं का पिछले साल व्यवस्थित अवलोकन किया गया था। इस प्रक्रिया में जयपुर स्थित सम्भव संस्था का सहयोग लिया गया था। फरवरी 2005 में टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोश्यल साइंसेज़, मुम्बई की क्वांटिटेटिव एनालिस्ट सुश्री राजश्री मथानी से अवलोकन रिपोर्टों के विश्लेषण के आधार तय करने में परामर्श लिया गया। हमारी कोशिश है कि शिक्षकों के साथ किए जा रहे काम का आकलन करने की एक उचित डिज़ाइन बनाई जा सके।

3. बुनियादी क्षमता विकास कार्यक्रम में शोध व सामग्री निर्माण

मालाखेड़ी के स्कूल के बच्चों का एक लघु-अध्ययन किया गया। हमने यह देखने की कोशिश की कि हमारे द्वारा तैयार कविता पोस्टर जैसी सामग्री की मदद से बच्चे पढ़ना कैसे सीखते हैं, वे किस तरह से लिखित/छपी सामग्री का अर्थ लगाते हैं। इस अध्ययन की संक्षिप्त रिपोर्ट यहाँ प्रस्तुत है :

मालाखेड़ी में तीसरी के बच्चे कैसे पढ़ते हैं?

मैंने मालाखेड़ी शासकीय प्राथमिक शाला के बच्चों से पढ़वाकर देखा, यह जानने के लिए कि वे पढ़ते कैसे हैं और पढ़कर अर्थ का निर्माण कैसे करते हैं। मैंने तीसरी कक्षा के बच्चों के साथ काम किया। इस कक्षा में कुल 26 बच्चे दर्ज़ हैं जिनमें से कम से कम सात बच्चे कभी नहीं दिखे। मैंने कुल 18 बच्चों से पढ़वाकर देखा। ज़्यादातर बच्चे गरीब मेहनतकश घरों के हैं। कई बच्चे लम्बे समय तक स्कूल से अनुपस्थित रहते हैं। बच्चों की उम्र आठ से ग्यारह साल के बीच है – ज़्यादातर नौ-दस साल के हैं।

अपने सर्वेक्षण में मैंने उन बच्चों को छोड़ दिया जो शाला में आते ही नहीं। बाकी में से तीन-चार बच्चे अनुपस्थित रहे।

मैंने रत्न सागर प्रकाशन की किताब *बैजू बनिया* चुनी और इसे पढ़वाना शुरू किया। इस कविता में घटना व कहानी है तथा इसका चित्रांकन भी अच्छा है। शब्द चयन भी सामान्य बोलचाल का है।

जो बच्चे पढ़ रहे थे, उन्हें बीच में ज़रूरत पड़ने पर मैं मदद भी करता। जो बच्चे गलत पढ़ रहे थे, यथासम्भव उन्हें किसी प्रकार का नकारात्मक सन्देश देने से अपने आप को रोकता। पढ़ने के बाद मैंने बच्चों से बातचीत करने का प्रयास किया। यह किस के बारे में है? उसका नाम क्या था? वह क्या करता था? आदि। यह बातचीत केवल उन्हीं बच्चों से की जो किसी भी रूप में पढ़ पा रहे थे।

इसके बाद मैंने कविता पोस्टरों से दो लाईनें पढ़वाई : "ऊँट चला भई ऊँट चला", "फिर लालाजी-लालाजी एक लड्डू दो"। फिर एक लाईन "लालाजी चला, भई लालाजी चला"...और अन्त में "हाथी ने केला खाया"।

इस अभ्यास का उद्देश्य था यह देखना कि बच्चे कविता को केवल याद से "पढ़ते" हैं या अलग-अलग शब्दों को भी पहचानकर पढ़ते हैं। यह प्रारम्भिक परीक्षण था। आगे इसे और विस्तृत रूप से करने से ज़्यादा बारीक जानकारी मिल सकती है।

18 बच्चों के इस सैम्पल में आठ बच्चे ऐसे हैं जो हिज्जे करके भी नहीं पढ़ पाते हैं। छह बच्चे धीरे-धीरे हिज्जे करते हैं और चार बच्चे आराम से पढ़ते हैं (ये भी हिज्जे करते हैं मगर मन में और तेज़ी से)।

नहीं पढ़ पाने वाले बच्चे :

इस श्रेणी के आठ बच्चों में से सभी ने "ऊँट चला" पढ़ा। केवल दो बच्चों को इसमें कठिनाई हुई। ये दो बच्चे "लालाजी" भी नहीं पढ़ सके। कविता के आगे के वाक्यों को ही दोहराते रहे। यानी ये दो बच्चे कविता को केवल याद से "पढ़" रहे थे। इस श्रेणी के बच्चे हिज्जे भी नहीं कर पा रहे थे। वे कुछ हद तक अक्षर व मात्राएँ पहचानते थे लेकिन अक्षर और मात्रा मिलाने में उन्हें परेशानी होती थी। बहुत कम बच्चे अक्षरों और मात्राओं को जोड़कर शब्द बना पा रहे थे।

हिज्जे करके शब्द पढ़ने वाले बच्चे :

इस श्रेणी के बच्चे अक्षर और मात्राएँ लगभग सही पहचानते थे और उन्हें जोड़कर शब्द तक पहुँच पाते थे। लेकिन वे वाक्य और शब्दों के अर्थ जानते थे। कुछ बच्चे बोलकर हिज्जे करते थे जबकि कुछ मन में ही करते थे और केवल शब्द को बोलते थे। कुछ अन्य बच्चे हिज्जों को बुदबुदाते थे। इनके पास बार-बार आनेवाले शब्दों को देखकर पहचानने की ही क्षमता थी। इस अवस्था में बच्चे स्वतः अर्थनिर्माण कर पा रहे थे।

तेज़ पढ़ने वाले बच्चे :

ये ऐसे बच्चे हैं जो बिना हिज्जे किए पढ़ पाते हैं – वे केवल नए शब्दों को पढ़ने में हिज्जे करते हैं। इनके पास देखकर पहचानने वाले शब्दों का भण्डार काफी समृद्ध है जिस कारण इन्हें कम शब्दों पर ही रुकना पड़ता है। इनमें से कई बच्चे गलती करके आगे जाने से पहले ही समझ लेते हैं कि उन्होंने गलती की है और वापस लौटकर सही पढ़ लेते हैं। पढ़ने में तेज़ होने के कारण इनके लिए अर्थ निर्माण भी अपेक्षया ज़्यादा सुगम है। लेकिन तेज़ पढ़ना ही अर्थ निर्माण के लिए पर्याप्त नहीं है। कई तेज़ पढ़ने वाले बच्चे भी अर्थ निर्माण में कमज़ोर हैं।

– सी.एन. सुब्रह्मण्यम, होशंगाबाद

शिक्षा में समुदाय की भागीदारी

शाहपुर ब्लॉक में शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र

इस समय हम शाहपुर ब्लॉक के 15 गाँवों में 29 शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र चला रहे हैं। कुछ बड़े गाँवों में एक से ज़्यादा केन्द्र हैं। इस इलाके में समुदाय में अपने बच्चों की शिक्षा को लेकर एक सुगबुगाहट साफ दिखाई पड़ती है। लोग शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्रों में आकर स्कूल में बच्चों की नियमितता से लेकर शिक्षकों की उपस्थिति या अनुपस्थिति और बच्चों की शैक्षिक उपलब्धियों तक की चर्चा करते हैं। साल भर में इस व्यवस्था को और मज़बूत बनाने के लिए जो काम किए गए उनका विवरण नीचे दिया गया है।

क) शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्रों की मॉनिटरिंग का ढाँचा

विगत वर्षों के दौरान शाहपुर केन्द्र में कार्यरत लोगों को काफी समय शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र के अनुवर्तन, पालक गोष्ठी एवं रोज़ की व्यवस्था सम्बन्धी आवश्यकताओं पर लगाना पड़ रहा था। इसका प्रभाव शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र के लिए विकसित किए जाने वाले शैक्षिक पैकेज पर पड़ रहा था।

ऐसे में इस वर्ष हमने इन केन्द्रों की मॉनिटरिंग के लिए एक ढाँचा उभारने पर विशेष ध्यान दिया। अब हमने शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र का अनुवर्तन और पालक गोष्ठियों की ज़िम्मेदारी अनुवर्तनकर्त्ताओं को सौंप दी है। इसके लिए प्रति सात से आठ शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्रों पर एक अनुवर्तनकर्त्ता रखा गया है। ये अनुवर्तनकर्त्ता पहले शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र चला चुके गुरुजियों में से ही हैं। ये एक केन्द्र में पढ़ाते हैं और रोज़ किसी एक केन्द्र का अनुवर्तन भी करते हैं। इसके लिए हम हर 15 दिनों में एक बार (मासिक गोष्ठी के अलावा) उनके साथ बैठकर पिछले 15 दिनों के काम की समीक्षा करते हैं व अगले 15 दिनों की योजना बनाते हैं। इस समय चार स्थानीय अनुवर्तनकर्त्ता कार्यरत हैं।

ख) मासिक गोष्ठी – पाक्षिक गोष्ठी

पहले शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्रों से सम्बन्धित केवल एक मासिक गोष्ठी की जाती थी। लेकिन इसमें केन्द्र संचालकों के शैक्षिक विकास पर ध्यान देने के लिए पर्याप्त समय नहीं मिल पाता था।

अतः इस वर्ष हमने हर माह दो गोष्ठियाँ करने का निर्णय लिया। इनमें से एक संयुक्त गोष्ठी होती है जिसमें सभी केन्द्र संचालक एक ही जगह पर इकट्ठे होते हैं। दूसरी गोष्ठी दो अलग-अलग जगहों पर होती है जिसमें उसी क्षेत्र के केन्द्र संचालक शामिल होते हैं। पहली गोष्ठी को मासिक तथा दूसरी गोष्ठी को पाक्षिक गोष्ठी का नाम दिया गया है।

संयुक्त गोष्ठी में शैक्षिक विकास के लिए करवाई गई गतिविधियों पर चर्चा होती है, मासिक शैक्षिक प्लानिंग की जाती है और उसके लिए गतिविधियों की योजना बनाई जाती है, मासिक आकलन व उसका विश्लेषण किया जाता है तथा आकलन से प्राप्त जानकारी को पालकों के समक्ष प्रस्तुत करने की योजना बनाई जाती है। इसके अलावा इसमें शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्रों की व्यवस्था तथा माँग/वितरण आदि मुद्दों पर चर्चा होती है।

पाक्षिक गोष्ठी में ज़्यादा फोकस मासिक गोष्ठी में की गई शैक्षिक प्लानिंग को लागू करने पर होता है। इसमें शैक्षिक प्लानिंग के अनुसार केन्द्रवार समीक्षा, अध्यापन में आ रही शैक्षिक दिक्कतों का हल खोजना, केन्द्र संचालकों द्वारा लिखी दैनिक डायरी पढ़ना, उस पर टिप्पणी करना व सुझाव देना आदि काम किए जाते हैं।

मासिक गोष्ठी का एक कमज़ोर पहलू रहा है कि प्रशिक्षण और मासिक गोष्ठी तथा एक गोष्ठी से दूसरी गोष्ठी के बीच सतत् जुड़ाव नहीं रह पाता है। समीक्षा करने पर पता चला है कि दूरगामी योजनाओं को लागू करने की हमारी क्षमता कम है। दूसरा, बैठकों से प्राप्त फीडबैक को आधार मानकर आगे की योजना बनाना भी नियमित नहीं हो पाया है। इन समस्याओं को हल करने के लिए सोच-विचार अभी जारी है।

ग) सामग्री निर्माण

शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्रों में आने वाले बच्चों के साथ प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत विकसित कार्डों के पिटारे का लगातार उपयोग किया जाता है। इस दौरान इस सामग्री में हमने कई नई चीज़ें जोड़ी हैं, जैसे चित्र-चित्रनाम कार्ड, पहेली-पज़ल कार्ड, दृश्य लेखन कार्ड, कहानी कार्ड, संशोधित संख्या कार्ड, गतिविधि कार्ड, भाषा व गणित सीखने के लिए तम्बोला कार्ड आदि। अब सामग्री के इस पैकेज को ऐसी स्थिति में लाने की कोशिश है कि कोई भी संस्था या व्यक्ति केवल निर्देश पढ़कर इसका उपयोग कर सके।

इस वर्ष बच्चों के लिए कार्य-पुस्तिका *पढ़ो लिखो मज़ा करो* का दूसरा भाग प्रकाशित किया गया। इसके अलावा भाषा व गणित शिक्षण की गतिविधियों की समग्र सूची भी तैयार की गई।

घ) नए शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र खोलना

हमने क्लस्टर की अन्य शालाओं में नए शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र खोलने की योजना बनाई थी, विशेषकर समुदाय के आग्रह को ध्यान में रखते हुए। इसके लिए छह पालक गोष्ठियों तथा व्यापक जनसम्पर्क के बाद तीन नए शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र शुरू किए गए। इस बीच कुछ केन्द्र बन्द भी हुए हैं। इस तरह मार्च 2005 तक केन्द्रों की संख्या 29 हो गई थी।

शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्रों में समुदाय की शैक्षिक व व्यवस्थागत भागीदारी बढ़ाने पर अभी और समय लगाना होगा।

च) ग्रीष्मकालीन शिविर

इस साल भयावाड़ी गाँव में 1 जून से 2 जुलाई 2004 तक भयावाड़ी तथा चौकीढाना के लगभग 150 बच्चों के लिए एक शिविर आयोजित किया गया। शिविर का मकसद प्राथमिक स्तर (पहली से पाँचवी कक्षा) के ऐसे बच्चों के साथ काम करना था जो भाषा व गणित में बहुत कमज़ोर थे। इन बच्चों को पढ़ाने के लिए शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्रों के संचालकों को चुना गया। केन्द्र संचालकों का पाँच दिवसीय प्रशिक्षण पचमढ़ी में किया गया।

शिविर में अपेक्षित 150 बच्चों से कहीं अधिक बच्चों ने भाग लिया। संख्या 218 तक पहुँच गई। उन्हें 30-35 के समूहों में 7 कमरों में बाँटा गया। शिविर के दौरान प्रत्येक शुक्रवार को समीक्षा तथा शनिवार को बच्चों की उपलब्धि का आकलन किया जाता था। पहले दो सप्ताह में ही काफी सारे बच्चे शब्द पढ़ने की स्थिति में आ गए। कुछ ऐसे भी बच्चे थे जो पहले से पढ़ना जानते थे, वे अब वाक्य लिखने लगे। ऐसे बच्चों की संख्या हर कमरे में सात से दस के बीच थी। इनके लिए दूसरे सप्ताह के बाद से एक अखबार बनाने की गतिविधि शुरू की गई। हर कमरे के शेष 25-30 बच्चों को भाषा व गणित में स्तरवार बाँटकर, छोटे-छोटे समूहों में बैठाकर, उनकी दिक्कतों को समझकर गतिविधियाँ करवाई गईं। शिविर के अन्त तक 60 से 65 प्रतिशत बच्चे अक्षर व शब्द पहचानने की स्थिति में थे। इसी तरह गणित में लगभग सभी बच्चे 1 से 20 के बीच संख्या पहचानने तथा एक अंक का जोड़-घटा करने लगे थे। लगभग 50 प्रतिशत बच्चे वाक्य पढ़ना व हासिल का जोड़ करने लगे।

झ) बाल मेले

नवाचारी शैक्षिक तौर-तरीकों और उनके महत्व व उपलब्धियों को समुदाय के बीच ले जाने के लिए बाल मेले बहुत उपयोगी साबित हुए हैं। इस वर्ष कुल छह जगह बाल मेले किए गए जिनमें आठ प्राथमिक शालाओं के 486 बच्चों एवं 133 पालकों ने भाग लिया। इनमें शासकीय शिक्षक भी शामिल थे। बाल मेलों की तारीखें शासकीय शिक्षकों के साथ मिलकर तय की गईं। बाल मेलों में बच्चों को टोलियों में बाँटकर निम्नलिखित गतिविधियाँ की गई :

1. मिट्टी के खिलौने – बच्चों ने मिट्टी के खिलौने बनाए और उन्हें रंगों से सजाया।
2. चित्र बनाना – कागज़ एवं क्रेयॉन से बच्चों ने स्वतंत्र रूप से चित्र बनाए। कुछ बच्चों ने अपनी कल्पना से चित्र बनाए और कुछ ने कहानियों को चित्रों के रूप में प्रस्तुत किया ।
3. विज्ञान के खेल – प्रकाश, हवा, चुम्बक आदि के विभिन्न प्रयोग, बेकार की वस्तुओं से बनने वाले कई खिलौने व मॉडल।
4. झटपट की गतिविधि – इसमें बच्चों से सामान्य जानकारी के सवाल पूछे गए। इसी के साथ एक मिनट में हो सकने वाली कई गतिविधियाँ हुईं।

5. ऑरीगैमी – बच्चों को रंगीन कागज़ दिए गए और बिना कागज़ फाड़े कुछ बनाने को कहा गया। बच्चों ने जो खिलौने बनाए उनमें नाव, गेंद आदि थे। उन्हें नए खिलौने बनाना सिखाया गया जैसे चिड़िया, टोपी, आदि।

गतिविधियों में पालकों ने भी भाग लिया। सभी शिक्षकों ने संकल्प लिया कि वे समय-समय पर अपने स्कूलों में इस तरह की गतिविधियाँ करवाते रहेंगे।

स्त्रोत एजेंसी की भूमिका में

पिछले आठ-दस सालों से देश के कई भागों में काम करने वाले सरकारी तथा गैर-सरकारी शिक्षा संस्थान एकलव्य से पाठ्यक्रम व पाठ्य सामग्री निर्माण, शिक्षक प्रशिक्षण आदि प्रक्रियाओं में सहयोग की अपेक्षा करते आए हैं। हमने अपनी तरफ से पूरी कोशिश की है कि शिक्षा के सन्दर्भ में काम करने वाली अन्य एजेंसियों के साथ मिलकर काम करें। यह एकलव्य के पिछले दशक के काम के एक महत्वपूर्ण पहलू के रूप में उभरकर आया है और आगे भी हमारे काम का एक अहम अंग बना रहेगा।

1. छत्तीसगढ़

पिछले दो सालों से छत्तीसगढ़ में विद्या भवन सोसायटी, उदयपुर; दिगन्तर, जयपुर और एकलव्य मिलकर राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एससीईआरटी) के साथ शासकीय स्कूलों के लिए पाठ्यक्रम सुधार का काम करते आए हैं। इसके अन्तर्गत पिछले साल भर में निम्नलिखित काम हुए :

क) पाठ्यपुस्तक निर्माण

जुलाई 2005 तक छठी कक्षा की विज्ञान और सामाजिक अध्ययन की किताबों को अन्तिम रूप देने का काम चलता रहा। इसमें सम्पादन, चित्र बनवाना, ले-आउट व डिज़ाइन आदि शामिल थे। इसके साथ ही सातवीं कक्षा के लिए पाठ्यक्रम की समीक्षा और नया पाठ्यक्रम तैयार करने का काम भी जारी था।

सातवीं कक्षा के लिए सामाजिक अध्ययन पाठ्यपुस्तक निर्माण की प्रक्रिया में खास ज़ोर इस बात पर दिया गया कि पाठ नए छत्तीसगढ़ को केन्द्र में रखकर लिखे जाएँ। इस सन्दर्भ में भूगोल में वर्षा, पानी के बहाव और भूजल पर एक अध्याय तैयार किया गया। नागरिक शास्त्र में औद्योगिक संगठन को समझने के लिए स्थानीय उद्योगों, जैसे कुम्हारी, धान की मिलें, कोसा सिल्क, सीमेंट कारखाने आदि के सर्वे पर आधारित पाठ विकसित किए गए। इस काम के लिए साल भर में अलग-अलग समय पर छह कार्यशालाएँ आयोजित की गईं।

ख) शिक्षक प्रशिक्षण कार्यशालाएँ

मई 2004 में शिक्षक प्रशिक्षण मार्गदर्शिका बनाने के लिए दो कार्यशालाएँ की गईं। इसके बाद हमने जून 2004 में सर्व शिक्षा अभियान के अन्तर्गत होने वाले प्रशिक्षणों में भी सहयोग दिया।

एससीईआरटी द्वारा छठी कक्षा के शिक्षकों का प्रशिक्षण दो चरणों में आयोजित किया गया। 31 जुलाई से 7 अगस्त 2004 तक हुए पहले प्रशिक्षण में एकलव्य के स्रोत व्यक्तियों तथा एससीईआरटी ने संयुक्त रूप से अकादमिक ज़िम्मेदारियाँ निभाईं। इस प्रशिक्षण का उद्देश्य एससीईआरटी के स्टाफ के साथ प्रशिक्षण पद्धति बाँटना भी था ताकि आगे से वे स्वयं ही प्रशिक्षण आयोजित कर सकें। योजना के मुताबिक दूसरा प्रशिक्षण शिविर 24 से 27 सितम्बर 2004 तक हुआ और इस बार सारी अकादमिक ज़िम्मेदारी एससीईआरटी ने खुद ही सम्हाली।

ग) स्कूलों में अनुवर्तन और किताबों का परीक्षण

स्थानीय शिक्षा विभाग के साथ बातचीत में यह तय किया गया था कि नई किताबों को पूरे राज्य में लागू करने से पहले उन्हें कुछ स्कूलों में आज़माकर देखा जाएगा। इसके लिए रायपुर, बिलासपुर, बस्तर और सरगुजा ज़िलों के 47 स्कूल चुने गए। एससीईआरटी के साथ मिलकर इन स्कूलों में नियमित अनुवर्तन की एक व्यवस्था बनाई गई।

अनुवर्तन प्रक्रिया की समीक्षा के लिए 1 से 3 दिसम्बर 2004 को एक कार्यशाला भी की गई।

घ) स्थानीय स्रोत समूह का विकास

सामाजिक अध्ययन के पाठ्यपुस्तक लेखन के लिए शोध हेतु हमने केन्द्रीय भूजल आयोग, उद्योग विभाग, सांख्यिकी विभाग और विभिन्न उद्योगों से सम्पर्क किया। विभिन्न अध्यायों के लेखन तथा चित्रांकन में भी इन विभागों के कर्मचारियों की भूमिका व मदद रही। इतिहास के अध्यायों के लेखन में कॉलेज स्तरीय शिक्षकों की भी भागीदारी रही। इस तरह धीरे-धीरे छत्तीसगढ़ में मौजूद स्रोत व्यक्तियों को पहचानकर उनके साथ सम्बन्ध बनाने का और अकादमिक काम के लिए एक स्थानीय स्रोत दल तैयार करने का प्रयास किया जा रहा है। इसी सिलसिले में 15 से 22 मार्च 2005 तक पाठ्यपुस्तक निर्माण की प्रक्रिया में स्कूलों के प्रधानाध्यापकों एवं एससीईआरटी तथा डाइट के स्टाफ के साथ एक कार्यशाला की गई।

च) अन्य गैर-सरकारी संगठनों को शैक्षिक काम में जोड़ने के प्रयास

रायपुर में 19-20 अक्तूबर 2004 को भारत ज्ञान विज्ञान समिति, रूपांतर और एक्शन एड की मदद से राज्य में कार्यरत विभिन्न गैर-सरकारी संस्थाओं व संगठनों के साथ एक कार्यशाला आयोजित की गई। राज्य के शिक्षा विभाग के कई अधिकारी भी इसमें शामिल हुए। शिक्षा के क्षेत्र में काम करने वाली 25 से भी अधिक संस्थाओं ने इसमें शिरकत की। इसके बाद इनमें से कुछ संस्थाओं के काम को देखने-समझने के लिए उनके कार्यक्षेत्र के दौरे किए गए। हमारा यह प्रयास रहेगा कि छत्तीसगढ़ में शैक्षिक बदलाव के काम में कई संगठन सहयोग करें।

2. दूसरा दशक, जयपुर

राजस्थान के ग्रामीण इलाकों में शिक्षा से वंचित रहे किशोरों व किशोरियों के साथ काम करने की एक परियोजना है, दूसरा दशक। राजस्थान के विकास खण्डों में दूसरा दशक के कार्यकर्त्ता गांव में विस्तृत सम्पर्क बनाते हुए किशोरों व किशोरियों को शिक्षा की प्रक्रिया से जोड़ने की कोशिश करते हैं। उनके लिए तीन से चार महीनों के आवासीय शिविर आयोजित किए जाते हैं। शिविरों में भाषा, गणित, स्वास्थ्य तथा सामाजिक व वैज्ञानिक दृष्टिकोणों से जुड़े मुद्दों पर काम किया जाता है। शिविरों से जाने के बाद तरह-तरह के मंच बनाए जाते हैं जिनके ज़रिए किशोर-किशोरियाँ समाज परिवर्तन व शिक्षा के प्रयासों में सक्रिय रह सकें।

पिछले साल भर में दूसरा दशक के कई कार्यकर्त्ताओं को हमने किशोर-किशोरियों के साथ की जा सकने वाली रचनात्मक गतिविधियों का प्रशिक्षण दिया। भँवरगढ़ में नवम्बर और दिसम्बर 2004 में एक-एक सप्ताह की दो कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। इनमें एकलव्य के कार्यकर्त्ताओं की टीम ने दूसरा दशक के तकरीबन 70 कार्यकर्त्ताओं/विद्यार्थियों को स्रोत व्यक्तियों के रूप में प्रशिक्षण दिया। इन कार्यशालाओं में छह गतिविधि समूहों में काम किया गया – नाटक तैयार करना, पत्रकारिता, रोचक विज्ञान के मॉडल बनाना, ऑरीगैमी, कठपुतली बनाना और स्वास्थ्य।

दिसम्बर की कार्यशाला एक वृहद बाल मेले के रूप में की गई। इसमें दूसरा दशक के अतिरिक्त संकल्प, चेतना, समाज कार्य शोध केन्द्र – तिलोनिया, संधान आदि संस्थाओं के प्रतिनिधि और सरकारी विभागों के अधिकारी शामिल हुए। आसपास के गाँवों के तकरीबन 1200 लोगों की भी मेले में सक्रिय भागीदारी रही। इस मेले में विभिन्न गतिविधियों के लगभग 30 स्टॉल लगाए गए थे।

मेले में रोज़ाना आठ पेज का एक अखबार भी निकाला जाता था। अखबार मुख्यतः मेले की रोज़ की गतिविधियों, सांस्कृतिक कार्यक्रमों, वक्तव्यों आदि को फोकस में रखकर प्रकाशित होता था। इसमें बच्चों द्वारा लिखित रचनाएँ – चित्र, कहानियाँ, स्टॉल के अनुभव, बच्चों के लिए अपनी ओर से कुछ प्रयोग, मज़ेदार सामग्री आदि चीज़ें भी हम प्रकाशित करते थे।

इस साल दूसरा दशक ने यह प्रयास किया कि आवासीय शिविरों के पाठ्यक्रम व उससे जुड़ी सामग्री की समीक्षा हो, उनका परिष्कार हो और एकीकृत विकास हो। इसमें मदद करने के लिए देश की कई संस्थाओं व लोगों को जोड़ा गया और एकलव्य ने भी इस काम में अपना योगदान दिया। एकलव्य की ओर से स्वास्थ्य व समाज की परख से

जुड़े मुद्दों पर खासतौर से काम किया गया। इसके अलावा पाठ्यक्रम निर्माण की पूरी प्रक्रिया के संयोजन में भी सहयोग किया गया।

स्कूली तंत्र में औपचारिक पाठ्यक्रम निर्माण के काम का अनुभव एकलव्य का पुराना अनुभव है। स्कूली तंत्र के बाहर शिक्षा के दायरों को खोजने व बनाने का प्रयास भी एकलव्य के कई कार्यक्रमों में अलग-अलग हुआ है। दूसरा दशक के शिविरों और मंचों का कार्यक्रम स्कूलों से बाहर एक ऐसी समग्रता बनाने की कोशिश कर रहा है जहाँ शिक्षा के विभिन्न आयामों का एकीकृत प्रभाव बन सकेगा। इस दृष्टि से यह हमारे सीखने व सोचने के लिए एक अर्थपूर्ण अनुभव दे पाया। हम उम्मीद करते हैं कि समग्रता के इस प्रयास से एकलव्य में भी काम की नई दिशाएँ विकसित हो सकेंगी।

3.साझेदारी से विकसित शिक्षा में एम.ए. का पाठ्यक्रम

यह पाया गया है कि चूँकि एम.एड.(M.Ed) बी.एड.(B.Ed.) के बाद किया जाता है और बी.एड. की अहर्ता उच्चतर माध्यमिक स्तर पर पढ़ाने के लिए रहती है, इसलिए बी.एड. तथा एम.एड. की योग्यता रखने वाले अधिकांश शिक्षक तथा शिक्षक प्रशिक्षकों को प्रारम्भिक शिक्षा का कोई अनुभव नहीं होता, न ही उनमें इस क्षेत्र से सम्बन्धित मुद्दों के प्रति संवेदनशीलता बन पाती है। इसी कारण प्रारम्भिक शिक्षा में काम करने वाली कई संस्थाओं को एक ऐसे स्नातकोत्तर कोर्स की ज़रूरत महसूस हुई जो प्रारम्भिक शिक्षा में गुणात्मकता के फैलाव के लिए शिक्षक, प्रशिक्षक एवं स्रोत व्यक्ति तैयार कर सके – ऐसे लोग जो पाठ्यक्रम निर्माण की गहरी समझ रखते हों। अतः शिक्षा का एक स्नातकोत्तर कोर्स तैयार करने के लिए उठाई गई एक साझी ज़िम्मेदारी में एकलव्य भागीदार रहा है। इस प्रयास को सर रतन टाटा ट्रस्ट से वित्तीय सहयोग प्राप्त हुआ है।

प्रारम्भिक चर्चाओं से यह विदित हुआ कि पिछले वर्षों में सरकारी, गैर-सरकारी और फण्डिंग क्षेत्र से जुड़े कई लोग प्रारम्भिक शिक्षा से बड़े पैमाने पर जुड़े हैं। ऐसे अधिकांश लोग किसी न किसी नौकरी में लगे हैं, परन्तु वे पढ़ाई के मौके भी चाहते हैं। इनके लिए अच्छा होगा कि दूर बैठकर पत्राचार आदि के माध्यम से यह कोर्स करने की सुविधा उपलब्ध कराई जाए। इसकी गुणवत्ता बरकरार रखने के लिए सोचा गया कि सतत् सम्पर्क के मार्फत विद्यार्थियों के पास लगातार काम हो और उनसे कम से कम 12 हफ्तों का सीधा सम्पर्क रखा जाए।

साथ ही यह भी समझ में आया कि दूरगामी परिप्रेक्ष्य में नए विद्यार्थियों को लेना भी ज़रूरी होगा ताकि शिक्षा के क्षेत्र में लोगों की गम्भीरता और गुणवत्ता भी बढ़े। चर्चाओं के दौरान यह भी विदित हुआ कि ऐसा कोर्स चलाने के लिए किसी एक संस्था में पूरी योग्यताएँ नहीं हैं। इसलिए यह कोशिश होनी चाहिए कि विभिन्न क्षमताओं वाली संस्थाएँ साथ मिलकर ऐसा कोर्स बनाएँ। इस काम के लिए प्रारम्भिक चर्चाओं में निम्नलिखित संस्थाओं ने भाग लिया :

- दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
- जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली
- दिगन्तर, जयपुर
- एकलव्य, भोपाल
- होमी भाभा सेंटर फॉर साइंस एजुकेशन, मुंबई
- टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साईंसिज़, मुंबई
- नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज़, बंगलौर
- विद्या भवन सोसाइटी, उदयपुर

तकनीकी कारणों से पहली दो संस्थाओं ने औपचारिक रूप से इस प्रक्रिया में भाग लेने में असमर्थता दर्शाई। परन्तु दोनों ही संस्थाओं के शिक्षा तथा अन्य विभागों के कई लोग यह कोर्स बनाने में जुटे हैं और आगे भी कोर्स बनाने के काम में भाग लेंगे। बाकी छह संस्थाओं ने साझेदारी से काम करके पिछले डेढ़ साल में यह कोर्स विकसित किया है।

इस कोर्स को मूर्त रूप देने के लिए एक कार्यकारी समिति बनाई गई जिसमें एकलव्य का प्रतिनिधित्व था। इसके अलावा नीचे दिए चार पेपर का पाठ्यक्रम विकसित करने में एकलव्य के कई और सदस्यों की भागीदारी रही :

– पाठ्यक्रम निर्माण (अनिवार्य)
– सामग्री निर्माण (वैकल्पिक)
– शिक्षक प्रशिक्षण (वैकल्पिक)
– सामाजिक अध्ययन शिक्षण (वैकल्पिक)

यह कोर्स जुलाई 2006 से चालू होगा। इसकी डिग्री एम.ए.(M.A.) की होगी और टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साईसिज़, मुंबई द्वारा दी जाएगी जो एक मानित विश्वविद्यालय है। यह कोर्स टाटा इंस्टीट्यूट में ही केन्द्रित भी होगा। एकलव्य की भागीदारी विभिन्न पेपर के सामग्री विकास, अध्यापन व अनुवाद में होगी।

4. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या निर्माण में भागीदारी

सभी यह मानते हैं कि स्कूली शिक्षा की गुणवत्ता को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण पहलू देश की पाठ्यचर्या है। इस पाठ्यचर्या का हर कुछ वर्षों में पुनर्निरीक्षण होता है और यह काफी हद तक पाठ्यपुस्तकों एवं शिक्षक प्रशिक्षण का ढाँचा तय करती है।

एकलव्य का उद्देश्य शुरू से ही रहा है कि छोटे स्तर पर शैक्षणिक प्रयोगों के आधार पर व्यापक शैक्षिक ढाँचे के परिवर्तन की कोशिश करें। परन्तु एकलव्य का यह भी अनुभव रहा है कि सरकारी तंत्र में काफी जल्दबाज़ी से काम होता है और इससे गुणवत्ता पर भी असर पड़ता है। यही दुविधा हमारे सामने थी जब राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005 बनाने की शुरुआत हुई और कई मुद्दों पर फोकस समूह बनाए गए। इनमें एकलव्य के कई साथियों को सदस्य के रूप में रखा गया था। काफी चर्चा के बाद हमें लगा कि हमें अपने अनुभवों को फोकस समूहों के साथ बाँटकर शैक्षिक क्षेत्र के परिप्रेक्ष्य पर असर डालने की कोशिश करनी चाहिए।

स्कूली स्तर पर नई राष्ट्रीय पाठ्यचर्या के निर्माण की प्रक्रिया जुलाई-अगस्त 2004 में शुरू हुई। इस कार्य के लिए एक मार्गदर्शक समिति बनाई गई, जिसमें एकलव्य के विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम से एक शिक्षिका को रखा गया। इसके अलावा पाठ्यचर्या को विकसित करने के लिए अलग-अलग विषयों पर फोकस समूह बने। इनमें से तीन फोकस समूहों – व्यवस्थागत सुधार, विज्ञान एवं सामाजिक अध्ययन – में एकलव्य के सदस्य आमंत्रित किए गए। दो और फोकस समूह – जेण्डर तथा जातियाँ एवं जनजातियाँ – में एकलव्य के प्राथमिक शिक्षा और किशोरी स्वास्थ्य कार्यक्रमों से शिक्षक नामजद किए गए। इसके अलावा एकलव्य के विभिन्न कार्यक्रमों से जुड़े कई स्रोत व्यक्ति भी अन्य फोकस समूहों में रहे।

इन सदस्यों ने तीन-चार बैठकों में भाग लेकर परिप्रेक्ष्य पर्चों को मूर्त रूप दिया। व्यवस्थागत सुधार के पर्चे में कुछ मूलभूत बदलाव सुझाए गए। हर बच्चे का स्कूल में रहना और सीखना सुनिश्चित करने के लिए ज़रूरी है कि शाला के स्तर पर योजना बनाने और क्रियान्वित करने की काफी जगह हो, छूट हो। इसका मतलब यह है कि खासतौर पर प्राथमिक व प्रारम्भिक शालाओं में शिक्षकों को स्थानीय समुदाय के साथ सामंजस्य बनाकर हर बच्चे को उपयुक्त स्तर पर शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए सक्षम बनाना होगा। इसके लिए उसे संकुल केन्द्र, विकास खण्ड स्रोत केन्द्र, डाइट और एससीईआरटी से सहयोग की आवश्यकता होगी, और एससीईआरटी को एनसीईआरटी से सहयोग की आवश्यकता होगी। ऐसे परिप्रेक्ष्य में योजना बनाने का काम स्थानीय स्तर पर होना होगा (जो कि आज प्रदेश स्तर पर होता है) और ऊपरी संस्थाओं को निरीक्षण करने की बजाय सहयोगी बनना होगा।

विज्ञान के परिप्रेक्ष्य पर्चे में गतिविधियों, प्रयोगों तथा पर्यावरण से सीखने की प्रक्रियाओं को सशक्त करने की बात रखी गई। वैसे तो ये चीज़ें पहले की पाठ्यचर्या में भी रही हैं पर उनके क्रियान्वयन में हमेशा समस्या रही है। इस पर्चे में हर स्तर पर प्रयोग की सामग्री एवं पुस्तकालय का प्रबन्धन करने का सुझाव दिया गया। परीक्षाओं में प्रयोगों एवं गतिविधियों पर आधारित प्रश्नों को शामिल करने की बात भी रखी गई।

सामाजिक अध्ययन के परिप्रेक्ष्य पर्चे में स्थानीय सामाजिक सन्दर्भों से पाठ्यपुस्तक का सम्बन्ध स्थापित करने की बात कही गई। दूसरा, सामाजिक अध्ययन से सम्बन्धित विषयों में जानकारियों की बजाय अवधारणाओं पर ज़ोर देने की ज़रूरत को रेखांकित किया गया। इन अवधारणाओं को बच्चों के अपने जीवन्त अनुभवों की अभिव्यक्ति के

आधार पर विकसित करने की बात कही गई। स्वाभाविक है कि ऐसा करने पर जाति, शोषण, गरीबी, लिंग आदि के आधार पर भेदभाव के अनुभव सामने आएँगे। इससे समानता, न्याय, स्वतंत्रता आदि की अवधारणाओं को विकसित करने में मदद मिलेगी। इस तरह का काम पहले भी एकलव्य के सामाजिक अध्ययन कार्यक्रम में किया गया है।

5. नवसर्जन ट्रस्ट, गुजरात

नवसर्जन ट्रस्ट पिछले लगभग 20 वर्षों से दलित समुदाय से सम्बन्धित सामाजिक सरोकारों पर गुजरात के लगभग 20 ज़िलों में काम करता रहा है। दो-तीन वर्ष पहले उन्होंने तय किया कि अन्य सामाजिक मुद्दों के साथ-साथ वे दलित शिक्षा पर भी काम करना चाहेंगे। इस सन्दर्भ में उन्होंने अपने कार्यक्षेत्र में चार आवासी शालाएँ एवं लगभग 200 शिक्षा केन्द्र शुरू करने का निर्णय लिया। इस काम की तैयारी के लिए नवसर्जन ट्रस्ट ने सन् 2003-04 के दौरान अपने प्रमुख 30-40 कार्यकर्त्ताओं के साथ शिक्षा की समझ और क्रियान्वयन का ढाँचा विकसित करने के लिए तीन-चार बैठकें कीं।

इसी कड़ी में अप्रैल 2004 में नवसर्जन के साणंद स्थित दलित शिक्षा केन्द्र में बैठक हुई जिसमें गाँधी विद्यापीठ, वेडछी; आइडियल, अहमदाबाद एवं एकलव्य को आमंत्रित किया। नवसर्जन की अपेक्षा थी कि चूँकि एकलव्य ने शिक्षा के क्षेत्र में सघन काम किया है इसलिए उनकी इस पहल में हम उन्हें वर्ष भर के दौरान नियमित सहयोग दें।

इस सिलसिले में एकलव्य ने नवसर्जन द्वारा इन चार शालाओं के लिए चयनित लगभग 20 नए शिक्षकों एवं कुछ अन्य प्रमुख कार्यकर्ताओं को वर्ष भर के दौरान विज्ञान, प्राथमिक शिक्षण एवं सामाजिक अध्ययन का प्रशिक्षण दिया। ये प्रशिक्षण दो-तीन दिन के थे और प्रत्येक विषय के लिए एकलव्य से दो-तीन स्रोत व्यक्ति उपलब्ध कराए गए थे। नवसर्जन के पाँच प्रमुख कार्यकर्त्ताओं ने गर्मी की छुट्टियों के दौरान एकलव्य द्वारा पवारखेड़ा में आयोजित दस-दिवसीय प्रशिक्षण शिविर में भी हिस्सा लिया।

नवसर्जन ट्रस्ट ने तय किया कि उनके समस्त कार्यकर्त्ताओं एवं शिक्षकों के लिए आवश्यक है कि प्राथमिक शिक्षण से जुड़े पहलुओं की गहरी समझ बने। इसलिए उन्होंने एकलव्य के प्राथमिक शिक्षण कार्यक्रम की पुस्तिका *सीखना-सिखाना* का गुजराती में अनुवाद किया जिसमें भाषा शिक्षण, गणित शिक्षण एवं बच्चों के विकास से सम्बन्धित विभिन्न पहलुओं पर शिक्षकों के लिए सामग्री है।

6. एसोसिएशन ऑफ रिसर्च एंड ट्रेनिंग इन बेसिक साइंस एजुकेशन, नागपुर

एसोसिएशन ऑफ रिसर्च एंड ट्रेनिंग इन बेसिक साइंस एजुकेशन, हर साल नागपुर में अपूर्व विज्ञान मेले का आयोजन करता है जिसमें सरकारी व सामान्य वर्ग के प्रायवेट स्कूल के बच्चे मॉडल प्रदर्शित करते हैं। सितम्बर 2004 में इन बच्चों के साथ सतत जुड़ाव बनाए रखने के उद्देश्य से एकलव्य की मदद से एसोसिएशन ने दो दिवसीय कार्यशाला आयोजित की। इसमें चुम्बक और चुम्बकत्व से सम्बन्धित कई प्रयोग, गतिविधियाँ व चर्चाएँ हुईं। कार्यशाला में 50 बच्चों ने भाग लिया।

इसके बाद जनवरी 2005 में आयोजित अपूर्व विज्ञान मेले के दौरान एसोसिएशन को नागपुर महानगरपालिका से सम्बद्ध स्कूलों के विज्ञान शिक्षकों को गतिविधि आधारित विज्ञान शिक्षण की विधि में प्रशिक्षित करने का आमंत्रण मिला। इस सन्दर्भ में 29 जनवरी 2005 को सभी स्कूलों के विज्ञान शिक्षकों की एक बैठक में एसोसिएशन द्वारा विज्ञान के कई प्रयोगों का प्रदर्शन व उनकी व्याख्या की गई। इस बैठक के अन्त में इस काम को गति देने के लिए 10 शिक्षकों की एक टीम बनाई गई। इस टीम को एसोसिएशन के साथ मिलकर कक्षा 5,6,7 की विज्ञान की पुस्तकों का अध्ययन कर उनमें दिए प्रयोगों की सूची बनाने, कक्षा में किए जा सकने वाले प्रयोगों को करके देखने, कठिन प्रयोगों के विकल्प तैयार करने तथा प्रयोगों के लिए स्थानीय सामग्री के उपयोग की सम्भावनाएँ तलाशने का काम दिया गया। मार्च-अप्रैल 2005 के दौरान इस टीम ने एसोसिएशन के सहयोग से उपरोक्त काम किए। साथ ही विज्ञान के मायने, विज्ञान पढ़ाने में बच्चों से अपेक्षित दक्षताएँ, बच्चों के साथ संवाद बढ़ाना, सही-गलत जवाबों की तह तक जाना आदि विज्ञान शिक्षण के बुनियादी मसलों पर भी चर्चाएँ की गईं। इस पूरे काम में एकलव्य ने एसोसिएशन व शिक्षकों की कोर टीम को लगातार सहयोग दिया।

7. केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड के जीवन कौशल कोर्स की समीक्षा

केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड लड़कियों और महिलाओं के लिए जीवन कौशल पर एक संक्षिप्त कोर्स चलाता है। इस कोर्स तक लोगों की पहुँच बढ़ाने और इसे ज़्यादा कारगर बनाने के लिए इसके उद्देश्यों, सामग्री तथा प्रक्रियाओं की समीक्षा की गई। इस प्रक्रिया में एकलव्य के किशोरावस्था शिक्षण कार्यक्रम की एक सदस्य ने सक्रिय भागीदारी की। समीक्षा उपरान्त इस कोर्स के लिए एक पाठ्यक्रम प्रारूप भी तैयार किया गया।

8. *एम्पावरिंग गर्ल्स एण्ड विमेन थ्रू हेल्थ एजुकेशन* प्रोजेक्ट का मूल्यांकन

किशोरावस्था शिक्षण कार्यक्रम के सदस्यों ने राजस्थान की संस्था विशाखा द्वारा चलाए जा रहे प्रोजेक्ट *एम्पावरिंग गर्ल्स एण्ड विमेन थ्रू हेल्थ एजुकेशन* के भावी कार्यक्रमों व दिशाओं के मूल्यांकन में भागीदारी की। इस प्रक्रिया में दिल्ली स्थित संस्था समा भी शामिल थी और यह काम हिवोस नामक दानदाता एजेंसी के आमंत्रण पर किया गया।

9. शिक्षा से जुड़े सम्मेलन/ कार्यशालाएँ/ गोष्ठियाँ

एकलव्य द्वारा विभिन्न जगहों पर अलग-अलग सरकारी व गैर-सरकारी समूहों के साथ शिक्षा पर केन्द्रित सेमिनार या कार्यशालाएँ आयोजित की गईं। ये निम्नलिखित हैं :

- राजीव गाँधी फाउंडेशन की साथी संस्था रुद्र धीरज समिति, गोरखपुर के साथ पुस्तकालय चलाने वाले कार्यकर्त्ताओं एवं समुदाय के अन्य सदस्यों के लिए पुस्तकालय के उपयोगों और सम्बन्धित गतिविधियों पर एक प्रशिक्षण शिविर।
- ग्वालियर में चुनौतीग्रस्त स्थितियों वाले बच्चों के साथ काम करने वाली संस्था रोशनी के साथ जुड़े 12 सरकारी व निजी प्राथमिक स्कूलों के 45 शिक्षकों का प्रशिक्षण।
- भोपाल सर्कल के केन्द्रीय विद्यालय के 36 शिक्षकों का गतिविधि आधारित विज्ञान शिक्षण में उन्मुखीकरण।
- राजीव गाँधी फाउंडेशन की दो साथी संस्थाओं के साथ पुस्तकालय सम्बन्धी गतिविधियों पर ऊना, हिमाचल प्रदेश में एक कार्यशाला।
- बैतूल ज़िले के घोड़ाडोंगरी ब्लॉक में सिरडी नामक संस्था के साथ जुड़े 30 गाँवों के सरकारी शिक्षकों के साथ दो उन्मुखीकरण कार्यशालाएँ।
- भोपाल के केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक 2 और क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान में तथा इन्दौर के केन्द्रीय विद्यालय में पुणे स्थित इन्टर यूनिवर्सिटी सेंटर फॉर एस्ट्रोनॉमी एण्ड एस्ट्रोफिज़िक्स के निदेशक प्रो. नरेश दधीच के लोकप्रिय विज्ञान व्याख्यान।
- दिल्ली में केयर संस्था द्वारा आयोजित सेमीनार *डायनामिक्स ऑफ एजुकेशनल चेंज* में भागीदारी। एक स्रोत व्यक्ति के साथ तैयार संयुक्त पर्चे – "भारत में शिक्षकों का बदलता दर्ज़ा : केरल और राजस्थान का अध्ययन" – की प्रस्तुति।
- गोवा में होमी भाभा सेंटर फॉर साइंस एजुकेशन द्वारा आयोजित विज्ञान व गणित शिक्षण सम्मेलन Episteme-1 में भागीदारी। इसमें एक स्रोत व्यक्ति के साथ तैयार किया गया पर्चा – "टीचर एज़ ए कंस्ट्रक्टर ऑफ नॉलेज : एक्सपीरिएंसेस फ्रॉम होशंगाबाद साइंस टीचिंग प्रोग्राम" – प्रस्तुत।
- गुड़गाँव स्थित हेरिटेज स्कूल के शिक्षकों के लिए आइडिस्कवरी, दिल्ली के साथ मिलकर गणित शिक्षण पर एक कार्यशाला।
- वड़ोदरा में साम्प्रदायिक दंगों से प्रभावित बच्चों के लिए कॉमनवेल्थ ह्युमन राइट्स इनिशिएटिव द्वारा चलाए जा रहे स्कूलों के शिक्षकों के लिए विज्ञान और प्राथमिक शिक्षण पर एक दो-दिवसीय प्रशिक्षण शिविर।
- दिल्ली में आईडिस्कवरी के सदस्यों की उन्मुखीकरण कार्यशाला में विद्यार्थियों में संख्या की समझ के विकास विषय पर एक सत्र।

- राजीव गाँधी फाउंडेशन की कुछ साथी संस्थाओं द्वारा चलाए जा रहे पुस्तकालयों के संचालकों के लिए तीन जगह (ऊना, गोरखपुर और फरीदाबाद) प्रशिक्षण आयोजित।
- कला गुरू स्वर्गीय श्री विष्णु चिंचालकर की स्मृति में उनकी चतुर्थ पुण्य तिथि पर देवास के सभी स्कूलों के विद्यार्थियों के लिए कला सृजन प्रतियोगिता आयोजित।

इसके अलावा निम्नलिखित सेमीनारों/गोष्ठियों/सम्मेलनों आदि में एकलव्य के सदस्यों ने भागीदारी की :

- भोजन का अधिकार अभियान की मीडिया कार्यशाला तथा भोजन का अधिकार सम्मेलन
- विप्रो एप्लाइंग थॉट इन स्कूल्स द्वारा वैकल्पिक पाठ्यक्रम विकास पर बैठक
- विप्रो एप्लाइंग थॉट इन स्कूल्स के साथी संगठनों की बैठक में गणित शिक्षण पर चर्चा
- नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा आयोजित डीलर/एजेंट/प्रकाशक सम्मेलन
- भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा दिल्ली में आयोजित शिक्षा सभा
- दिल्ली में विप्रो एप्लाइंग थॉट इन स्कूल्स द्वारा पाठ्यक्रम चर्चा के लिए आयोजित बैठक
- प्रगतिशील लेखक संघ का राज्य स्तरीय सम्मेलन।
- उज्जैन में आयोजित राष्ट्रीय विज्ञान शिक्षक कांग्रेस।
- भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा भोपाल में 'शिक्षा में मूल्यों का सवाल' पर आयोजित विचार गोष्ठी।
- दिल्ली विश्वविद्यालय के सेंटर फॉर साइंस एजुकेशन एण्ड कम्युनिकेशन के काम की समीक्षा व नियोजन के लिए हुई बैठक
- अन्तरर्राष्ट्रीय स्त्री स्वास्थ्य सम्मेलन के सन्दर्भ में प्रान्तीय सम्मेलन
- कॉमेट मीडिया फाउंडेशन द्वारा आयोजित शिक्षा संवाद
- दिल्ली विश्वविद्यालय के सेंटर फॉर साइंस एजुकेशन एण्ड कम्युनिकेशन द्वारा दिल्ली के स्कूलों में विज्ञान शिक्षण की एक योजना तैयार करने हेतु बुलाई गई बैठक
- अखिल भारतीय लोक विज्ञान नेटवर्क द्वारा मीराम्बिका स्कूल, दिल्ली में स्कूल शिक्षकों को नेटवर्क से जोड़ने के लिए आयोजित योजना बैठक

पाठ्यक्रम से परे शिक्षा की गतिविधियाँ

एकलव्य ने अपने काम के प्रारम्भ से ही स्कूली दायरे और पाठ्यक्रम की सीमाओं को पहचानते हुए बच्चों के साथ पाठ्यक्रम से परे शिक्षा के लिए कई पहल की हैं। इस साल इसके अन्तर्गत हुए काम इस प्रकार हैं :

1. बाल समूह

बाल समूह एकलव्य द्वारा आयोजित एक ऐसा मंच है जो गाँव के बच्चों तथा किशोरों को उनकी रचनात्मकता को अभिव्यक्त करने, बढ़ाने और नेतृत्व की क्षमताओं को विकसित करने के मौके देता है। यह कार्यक्रम होशंगाबाद ज़िले के 18 गाँवों में जारी है। गाँव स्तर पर बाल समूह चलाने की ज़िम्मेदारी गाँव के ही तीन-चार किशोर व किशोरियाँ सम्भालते हैं। इनका संयोजन एकलव्य के होशंगाबाद केन्द्र से होता है।

हरेक बाल समूह के केन्द्र में एक पुस्तकालय ज़रूर होता है। यह पुस्तकालय गाँव की टीम में से किसी एक बच्चे के घर पर चलाया जाता है। पुस्तकालय के अलावा समय-समय पर कई तरह की सृजनात्मक गतिविधियाँ और बाल मेले आयोजित किए जाते हैं। इन गाँवों के बच्चे नियमित तौर पर बाल समूह की मासिक पत्रिका *उड़ान* में अपनी रचनाएँ भेजते हैं।

क) मासिक बैठक

बाल समूह की एक नियमित गतिविधि है बाल समूह सदस्यों और एकलव्य के कार्यकर्त्ताओं की सामूहिक मासिक बैठक। इन मासिक बैठकों में बाल समूह की गतिविधियों की मासिक योजना बनाई जाती है, पिछले माह की गतिविधियों की समीक्षा की जाती है और हर बार या तो किसी साझे सरोकार के मुद्दे पर चर्चा होती है या किसी नई गतिविधि को सीखने की व्यवस्था की जाती है। इस साल मासिक बैठकों में इन संगठनात्मक विषयों पर चर्चा हुई :

- बाल समूह का उद्देश्य एवं उससे सम्बन्धित गतिविधियाँ।
- बाल समूह में पुस्तकालय से सम्बन्धित गतिविधियाँ और बच्चों में पुस्तकों के प्रति रूझान पैदा करना।
- बच्चों में लिखने के प्रति रुचि विकसित करने में स्थानीय मुद्दों का महत्व।
- बाल समूह में बच्चों की लगातार उपस्थिति के लिए कोशिशें।
- अपने-अपने गाँवों में बाल समूह टीम में नए सदस्यों को जोड़ने के प्रयास।
- बाल समूह के दस्तावेज़ीकरण से सम्बन्धित प्रश्न पत्र पर चर्चा।

ख) पुस्तकालय

पुस्तकालय गाँव में बालसमूह की गतिविधियों का केन्द्र होने के नाते एक महत्वपूर्ण गतिविधि है। इस साल परीक्षा, खेती के काम जैसे व्यवधानों के कारण फरवरी से अप्रैल 2005 तक पुस्तकालयों की स्थिति थोड़ी कमज़ोर रही। परन्तु बाल समूह सम्भालने वाले किशोर-किशोरियों के लिए एकलव्य के होशंगाबाद केन्द्र से चलने वाले स्रोत पुस्तकालय का नियमित इस्तेमाल हुआ।

ग) बाल मेले और अन्य गतिविधियाँ

इस साल कुछ छोटे और कुछ बड़े स्तर के बाल मेले आयोजित किए गए। इन बाल मेलों में लेखन, ऑरीगैमी, विज्ञान के खेल, मिट्टी के खिलौने, चित्रकला आदि नियमित गतिविधियों के अलावा कुछ विशेष गतिविधियाँ भी की गई। उदाहरण के लिए, फरवरी 2005 में सोनतलाई के बाल मेले में विज्ञान के कुछ मज़ेदार प्रयोग किए गए। इससे वहाँ विज्ञान के "हवा" नाम के अध्याय पर एक रोचक चर्चा छिड़ गई। इसमें तकरीबन 200 बच्चों ने भाग लिया। एक बाल मेले में दीवार पत्रिका की गतिविधि बच्चों को बहुत रोचक लगी और बच्चों ने इसमें बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। नाटक से सम्बन्धित एकल अभिनय व कठपुतली की गतिविधियाँ भी बाल मेले में की गईं।

दिसम्बर 2004 में बाल समूह के सदस्यों ने भोपाल में साम्प्रदायिकता विषय पर आधारित एक कार्यशाला में भाग लिया। सदस्यों ने इस अनुभव को बहुत सराहा।

घ) प्रकाशन

उड़ान पत्रिका का नियमित प्रकाशन होता रहा है। एक मासिक बैठक में *उड़ान* के स्वरूप में बदलाव लाने के बारे में चर्चा हुई। पत्रिका में नई चीज़ें जोड़ने पर भी बातचीत हुई, जैसे बुज़ुर्गों से सुनी कहानियाँ लिखना आदि। बाल समूह सम्भालने वाले साथियों को "हमारी ओर से" स्तम्भ लिखने को प्रेरित किया गया जिससे कई साथियों ने नियमित रूप से *उड़ान* के लिए लिखना शुरू किया। *उड़ान* की बिक्री के सम्बन्ध में भी बाल समूह में कोशिशें जारी हैं।

बाल समूह कार्यक्रम के अन्तर्गत यह विचार भी उभरा है कि कुछ ऐसी स्रोत पुस्तिकाओं का प्रकाशन होना चाहिए जो नए सदस्यों को गतिविधियों की समझ देने में मदद करें। ऐसी दो पुस्तिकाओं पर काम की शुरुआत हुई है – "बच्चों के साथ चर्चाएँ" और "बच्चों के साथ दीवार अखबार बनाना"।

च) नाटक कार्यशाला

हर साल की तरह इस साल भी जून माह में होशंगाबाद में एक नाटक कार्यशाला आयोजित की गई। इस बार इसकी विशेषता थी नाटक में क्राफ्ट की भूमिका पर काम। इस कार्यशाला में बाल समूह के सदस्यों ने आपस में कई कहानियाँ सुनी-सुनाई और उनमें से एक कहानी "किसान के चार बेटे" पर आधारित नाटक तैयार किया गया।

कार्यशाला में तैयार किए जा रहे नाटक के लिए मुखौटे बनाना, प्रचार के लिए पोस्टर बनाना आदि गतिविधियों के मार्फत नाटक में क्राफ्ट की भूमिका की बारीकियों को करके सीखने का मौका मिला।

कार्यशाला के अन्तिम दिन नाटक का प्रदर्शन होशंगाबाद के टैगोर स्कूल में किया गया। इसकी एक और प्रस्तुति बाबई के पास गनेरा गाँव में हुई।

छ) दस्तावेज़ीकरण

पिछले साल एकलव्य के बाहर के साथियों की मदद से बाल समूह के काम के दस्तावेज़ीकरण की प्रक्रिया शुरू की गई। इस साल दस्तावेज़ीकरण का काम काफी आगे बढ़ा है। 18 से 24 अगस्त 2004 तक एक कार्यशाला की गई। इसमें अब तक तैयार सामग्री को आपस में पढ़कर उस पर सुझाव और टिप्पणियाँ इकट्ठा की गईं तथा पूरी सामग्री को पाँच अध्यायों में व्यवस्थित किया गया। ये अध्याय हैं – परिचय व परिप्रेक्ष्य; बाल समूह की प्रक्रियाएँ, जैसे मासिक बैठक, बाल मेला, उड़ान, आदि; प्रतिक्रियाएँ; चुनौतियाँ और भावी दिशाएँ; तथा निष्कर्ष।

दस्तावेज़ीकरण के उद्देश्य से इस समूह ने एक प्रश्न पत्र भी तैयार किया जिस पर बागरातवा, आमूपुरा, बैराखेड़ी और हिरनखेड़ा आदि गाँवों से प्रतिक्रियाएँ ली गईं। अन्तिम अध्याय के लेखन का काम जारी है।

2. सामुदायिक पुस्तकालय

आम लोगों में पढ़ने की रुचि को बढ़ावा देने और रुचि रखने वाले लोगों तक अच्छी किताबें पहुँचाने के उद्देश्य से इस साल राजीव गाँधी फाउंडेशन की मदद से हमने अपने कार्यक्षेत्र में नौ सामुदायिक पुस्तकालय गठित किए। ये पुस्तकालय भोपाल की तीन वंचित वर्ग की बस्तियों, होशंगाबाद ज़िले की बाबई तहसील के बाबई कस्बे, बागरातवा गाँव और बैतूल ज़िले की शाहपुर तहसील में तीन जगह पर स्थित हैं।

सभी जगहों पर पुस्तकालय के लिए कमरा या जगह समुदाय द्वारा उपलब्ध करवाई गई है। समुदाय में से ही एक पुस्तकालय संचालक रखा गया है। लाइब्रेरी दो घंटे सुबह एवं दो घंटे शाम को खुलती है। इन पुस्तकालयों में 600 से 700 पुस्तकों के साथ-साथ बच्चों के बैठने और सामूहिक गतिविधियाँ करने के लिए पर्याप्त संसाधन उपलब्ध कराए गए हैं। दैनिक अखबार एवं मासिक पत्रिकाओं को मँगवाने की व्यवस्था भी की गई है। पुस्तकालय सदस्यों से मामूली सदस्यता शुल्क लिया जाता है।

इन पुस्तकालयों में हर महीने एक बैठक की जाती है, जिसमें पुस्तकालय से सम्बन्धित व्यवस्थाओं और गतिविधियों पर बातचीत की जाती है तथा आने वाले महीने के लिए योजना बनाई जाती है।

पुस्तकालयों द्वारा कुछ गतिविधियाँ भी आयोजित की जाती हैं। जैसे बागरातवा के पुस्तकालय ने स्थानीय हाई स्कूल में एक लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया। विषय थे – गरीबी और साम्प्रदायिकता। पुस्तकालय में इन मुद्दों से सम्बन्धित सामग्री भी छात्र-छात्राओं को उपलब्ध करवाई गई।

इसी तरह बागरातवा के लोगों के साथ साम्प्रदायिकता के सवाल पर एक कार्यशाला का आयोजन भी किया गया। कार्यशाला में लगभग 30-35 लागों ने भाग लिया। इसमें मुख्य रूप से अन्य समाजों के बारे में मिथकों और अवधारणाओं तथा उनके इतिहास के बारे में बातचीत हुई। इन कार्यक्रमों के कारण पुस्तकालय में लोगों की रुचि भी बढ़ी है।

3. मालवा में ...

क) ग्रीष्मकालीन रचनात्मक गतिविधि शिविर

बच्चों के लिए ग्रीष्मकालीन शिविरों के ज़रिए हम उनके साथ शिक्षा के व्यापक स्वरूप और उद्देश्यों को समझने और अनुभव करने की कोशिश करते हैं। इस तरह के शिविरों से आगे के काम के लिए स्रोत व्यक्ति तैयार कर पाने में भी बहुत मदद मिलती है।

इस क्रम में देवास में 21 से 30 अप्रैल 2004 तक बाल गतिविधि शिविर का आयोजन किया गया। इसमें 40 से अधिक विद्यालयों के लगभग 200 बच्चों ने हिस्सा लिया। इसमें माध्यमिक एवं हाई स्कूल स्तर के विद्यार्थियों की सर्वाधिक भागीदारी रही। हमने समस्त बच्चों को उम्र व कक्षाओं के हिसाब से तीन श्रेणियों में विभाजित किया। शिविर में रचनात्मक लेखन, विभिन्न तरीकों से चित्रकारी, क्राफ्ट के विभिन्न मॉडल, ग्रीटिंग कार्ड, बेसिक पेंटिंग, ऑरीगैमी, मुखौटा निर्माण, कहानी-कविता, खेल, पुस्तकालय आदि गतिविधियों को शामिल किया गया था।

इसी तरह उज्जैन में भी दो शिविर आयोजित किए गए। इन शिविरों में किसी भी स्तर के बच्चे भाग ले सकते हैं। इनमें मुख्यतः दो समूह बनाए जाते हैं। एक समूह छोटे बच्चों का होता है जिसमें स्कूली तथा गैरस्कूली दोनों तरह के बच्चे आ सकते हैं। दूसरा समूह बड़ी उम्र के लोगों के लिए होता है। इसमें आमतौर पर कॉलेज के विद्यार्थी, शिक्षक एवं घरेलू या नौकरीपेशा महिला/पुरुष होते हैं।

ख) देवास व उज्जैन में पुस्तकालय व उससे जुड़ी गतिविधियाँ

उज्जैन पुस्तकालय की सदस्य संख्या 550 है। इसमें बच्चों की संख्या अधिक है।

देवास केन्द्र के पुस्तकालय की तरफ से इस साल एक नई पहल की गई। हमने हायर सेकेण्डरी एवं कॉलेज के विद्यार्थी सदस्यों को रचनात्मक लेखन हेतु प्रोत्साहित किया। फलस्वरूप कुछ युवा साथी स्थानीय एवं बड़े अखबारों में नियमित या अनियमित तौर पर लिख रहे हैं। उनका योगदान सम्पादक के नाम पत्रों में विभिन्न सम-सामयिक मुद्दों पर अपनी टिप्पणियों, छुटपुट लेखों व कविताओं आदि के रूप में होता है। इस प्रक्रिया से इन युवा साथियों में विभिन्न सामाजिक मुद्दों पर खुलकर अपनी राय ज़ाहिर करने और बहस-मुबाहिसों में शिरकत करने की शुरुआत हुई है। अब वे एकलव्य, पाठक मंच, प्रगतिशील लेखक संघ और भारत ज्ञान विज्ञान समिति के कार्यक्रमों/गोष्ठियों में सक्रियता से भाग लेते हैं।

ग) पाठक मंच, देवास व उज्जैन

हमने उज्जैन के पाठक मंच की गतिविधियों से एकलव्य के पुस्तकालय को जोड़कर नए सदस्य बनाने के प्रयास किए हैं। चूँकि पाठक मंच में ऐसे लोग इकट्ठा होते हैं जिन्हें पढ़ने के लिए पुस्तकें चाहिए होती हैं, इसलिए अच्छी किताबों की तलाश में बहुत से पाठक एकलव्य के पुस्तकालय में आते हैं।

देवास में भी पिछले चार-पाँच वर्षों से नेशनल बुक ट्रस्ट की एक स्कीम के अन्तर्गत चलाए जा रहे पाठक मंच को वर्तमान सक्रियता में लाने में एकलव्य, देवास का योगदान रहा है। इसका सीधा असर हमें देवास केन्द्र के पुस्तकालय पर दिखा। सामाजिक सरोकार के विषयों पर पाठक मंच की गोष्ठियों में चर्चा कराने और अच्छी किताबें उपलब्ध कराने की एकलव्य की कोशिश के चलते पुस्तकालय और पाठक मंच के काम दो अलग-अलग संस्थागत ढाँचों में होते हुए भी बहुत सरल साझेदारी के साथ आगे बढ़े हैं।

घ) स्रोत सहायता और प्रशिक्षण

स्कूल के बाहर की शिक्षा की गतिविधियों के अन्तर्गत स्रोत सहायता की भूमिका हम दो तरह से निभाते आए हैं। अन्य संस्थाओं के कार्यक्षेत्र में जाकर उनकी ज़रूरतों के अनुसार सीधे बाल मेले व बाल गतिविधियाँ आयोजित करना और वयस्कों को बाल गतिविधियाँ आयोजित करने का प्रशिक्षण देकर उन्हें स्रोत दल के रूप में तैयार करना इसमें शामिल हैं। स्रोत दल तैयार करने के प्रशिक्षण में ही बाल मेले का आयोजन किया जाता है ताकि स्रोत दल के लोग बच्चों के साथ स्वयं गतिविधियाँ करें। इस तरह प्रशिक्षण पाने वाले साथी सीखी हुई चीज़ों को तुरन्त काम में ले पाते हैं और अपने अनुभवों से भी सीखते चलते हैं।

इस साल जीवन ज्योति केन्द्र द्वारा संचालित माध्यमिक एवं हायर सेकण्डरी स्कूल, राऊ; शासकीय माध्यमिक विद्यालय, क्रमांक 3, देवास तथा शासकीय कन्या माध्यमिक विद्यालय, यमुना बाई में कार्यशालाएँ आयोजित की गईं। इनमें प्राथमिक व माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों तथा बच्चों ने हिस्सा लिया।

सभी शिक्षकों एवं बच्चों को 15 गतिविधियों की सूची दी गई और उन्हें प्रेरित किया गया कि वे अपने-अपने विद्यालयों में जाकर एक-दिवसीय बाल मेलों का आयोजन करें। बाद में इन सभी स्रोत शिक्षकों ने अपने-अपने विद्यालय में एक या एक से अधिक बाल मेले किए।

इसके अलावा कॉमेट मीडिया, मुंबई द्वारा आयोजित बाल विविधा कार्यक्रम में इस वर्ष अहमदाबाद एवं उनई जाना हुआ। यहाँ पर बच्चों को प्रमुख रूप से ऑरीगैमी, विज्ञान प्रयोग एवं क्राफ्ट आदि गतिविधियाँ सिखाने के साथ ही कॉमेट मीडिया फाउंडेशन के स्रोत दल को भी प्रशिक्षण दिया गया।

स्रोत दल के रूप में बच्चे : पब्लिक स्कूल, उज्जैन में बाल मेला करवाने से पहले स्कूल के ही 15 बच्चों को प्रशिक्षण देकर एक स्रोत दल तैयार किया गया जिसने बालमेले के दौरान अन्य बच्चों को सिखाने में मदद की।

4. पिपरिया पुस्तकालय की गतिविधियाँ

पिपरिया केन्द्र पर पुस्तकालय का संचालन एक नियमित गतिविधि है जो प्रतिदिन चार घंटे आम लोगों के लिए खुला रहता है। पुस्तकालय में बच्चे और बड़े मिलाकर कुल 200 के लगभग नियमित सदस्य हैं।

पुस्तकालय के अन्तर्गत विभिन्न विचार गोष्ठियों, कवि गोष्ठियों व खास दिनों, जैसे बाल दिवस, हिन्दी दिवस, शिक्षक दिवस आदि पर गोष्ठियों का आयोजन किया जाता रहा है। इसके अन्तर्गत कई सम-सामयिक विषयों, जैसे लिंग भेद, महिला-पुरुष अनुपात, महिलाओं पर होने वाला अत्याचार, साम्प्रदायिक दंगे आदि पर खुली चर्चा होती है।

स्थानीय सांस्कृतिक साहित्यिक संस्थाओं, नाट्य समूहों व लेखक संगठनों की गोष्ठियाँ भी केन्द्र पर आयोजित होती रही हैं। इनके चलते विभिन्न समूहों से निकट सम्पर्क स्थापित हुआ है।

पुस्तकालय में हम प्राथमिक व माध्यमिक स्तर के बच्चों के लिए रचनात्मक गतिविधियाँ भी आयोजित करते रहे हैं। इस दौरान लगातार बड़े बच्चों से माँग आती रही कि उनके लिए भी कुछ कार्यशालाएँ आयोजित की जाएँ। इसलिए इस वर्ष हाई स्कूल और हायर सेकेण्डरी स्कूल के विद्यार्थियों को ध्यान में रखकर कुछ व्याख्यान और कार्यशालाएँ की गईं। ये कार्यशालाएँ निम्नलिखित विषयों पर थीं : गैस व अनुमापन के प्रयोग, विद्युत व इलेक्ट्रॉनिक परिपथ, न्यूटन के सिर पर सेब कैसे गिरा? तथा शरीर के आन्तरिक अंग और उनके कार्य। "टी.वी. पत्रकारिता में रोज़गार की सम्भावनाएँ" विषय पर भी व्याख्यान आयोजित किया गया।

5. परासिया पुस्तकालय

एकलव्य के परासिया उपकेन्द्र में पुस्तकालय और विभिन्न बाल गतिविधियों का सिलसिला लगातार चलता आया है। होशंगाबाद विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम के समय से गठित इस पुस्तकालय और बाल गतिविधि केन्द्र को स्थानीय शिक्षकों और विद्यार्थियों के बीच एक वैकल्पिक शैक्षिक माहौल बनाने के उद्देश्य से चलाया जाता रहा। आज भी इस क्षेत्र के कई शिक्षक एकलव्य के विभिन्न कार्यक्रमों में स्रोत शिक्षकों की भूमिका में सक्रिय हैं।

13 अप्रैल 2005 में परासिया के पुस्तकालय में दो-दिवसीय बाल गतिविधि कार्यक्रम किया गया। दो दिन यहाँ पर ऑरीगैमी, विज्ञान प्रयोग, मुखौटे निर्माण, क्राफ्ट इत्यादि गतिविधियाँ करवाई गईं। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्‌देश्य इस क्षेत्र में पुस्तकालय का प्रचार-प्रसार करना था। इस पुस्तकालय की स्थापना सन् 1989 में इसी माह की गई थी।

प्रकाशन

स्कूली शिक्षा में बदलाव के उद्देश्य से शुरू हुए एकलव्य के सफर में प्रकाशन का पड़ाव बहुत बाद में आया। पाठ्यपुस्तकों और शिक्षण पद्धति में बदलाव के काम के दौरान बच्चों के लिए सन्दर्भ सामग्री की महती ज़रूरत महसूस हुई। प्रकाशन कार्यों द्वारा एक स्वतंत्र कार्यक्रम का रूप अख्तियार करने की सम्भावना को देखते हुए 1996 में सर रतन टाटा ट्रस्ट के समक्ष और बाद में मानव संसाधन विकास मंत्रालय के पास सहयोग हेतु प्रस्ताव रखे गए। इनका सहयोग हमारे प्रकाशनों की गुणवत्ता और संख्या बढ़ाने में महत्वपूर्ण रहा। इसी का नतीजा है कि आज हम हर साल 10-12 नए प्रकाशन निकाल पा रहे हैं और 20-25 पुराने प्रकाशन रीप्रिंट हो रहे हैं। इससे सालाना 10 लाख रुपयों से भी ज़्यादा की बिक्री हो रही है। पाठकों तक अच्छी पाठ्यसामग्री पहुँचाने के हमारे उद्देश्य को अमली जामा पहनाने के लिए भोपाल और इन्दौर में पिटारा नाम से बिक्री केन्द्र खोले गए हैं। यहाँ हमारे प्रकाशनों, खिलौनों तथा विज्ञान सामग्री के साथ-साथ अन्य प्रकाशकों की चुनिन्दा सामग्री भी उपलब्ध कराई जाती है।

प्रकाशनों की प्रकृति को देखते हुए इनके आत्मनिर्भर होने की स्वाभाविक अपेक्षा होती है – फण्डिंग एजेंसी को भी और हमें भी। लेकिन यहाँ हम असमंजस की स्थिति में हैं। क्या हम किताबों की कीमत इस तरह तय करें कि फिर हम इन्हें तैयार करने के लिए किसी बाहरी मदद पर निर्भर न रहें? या फिर हिन्दी भाषी क्षेत्र में पाठकों की कमी, किताबों तक उनकी पहुँच न होना, जेब की सीमितता और पढ़ने की घटती आदत को देखते हुए कीमत में सब्सिडी देना जारी रखें? क्या हमारे प्रकाशनों का एक मुख्य उद्देश्य किताबों को लोगों की पहुँच तक लाना और उन्हें हिन्दी में अच्छी सामग्री उपलब्ध कराना नहीं है? काफी विचार-मन्थन के बाद आज की स्थिति में पहुँचा जा सका। तय किया गया कि कीमत इतनी हो कि उससे कागज़ और छपाई का खर्च निकल आए। आगे चलकर इसी कीमत से मार्केटिंग की पहल में होने वाला खर्च का कुछ अंश भी निकालने का विचार है। पर हमारा ऐसा अनुमान है कि आने वाले 8-10 सालों तक प्रकाशनों को विकसित करने के लिए हमें वित्तीय सहयोग पर निर्भर रहना होगा।

1. नई सोच के साथ प्रकाशन और नई दिशाएँ

प्रकाशन के आठ सालों के अनुभवों के आधार पर साल भर चले विचार मंथन के बाद हमने अपने लिए भावी दिशा तय की। आगामी सालों में हम चाहते हैं कि –

- विज्ञान की सन्दर्भ सामग्री हिन्दी में प्रकाशित करें।
- सामग्री को पाठक वर्ग के बीच टेस्ट करने के काम को और पुख्ता करें।
- विषय आधारित मॉड्यूल प्रकाशित करें।
- कुछ चुने हुए टाइटल अंग्रेज़ी में भी निकालें।
- अन्य भाषाओं की अच्छी शैक्षणिक सामग्री को हिन्दी में प्रकाशित करें।
- अच्छी गुणवत्ता वाली सामग्री को गाँवों तक पहुँचाएँ।
- प्रदेश व देश में नए पिटारा केन्द्र खोलें।

इसके अलावा हम निम्नलिखित बिन्दुओं पर भी आगामी वर्षों में विशेष ध्यान देना चाहते हैं।

- टीम की क्षमता वृद्धि (सम्पादन, डिज़ाइनिंग, मार्केटिंग और प्रबन्धन के कौशलों का विकास करना), टीम की वृद्धि, अनुवादकों, लेखकों, डिज़ाइनरों और सम्पादकों के समूह को बढ़ाना।
- दूसरे समूहों से नेटवर्किंग – भारतीय व अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में शैक्षिक सामग्री की पहचान, भारत में तथा अन्यत्र प्रकाशित अंग्रेज़ी की प्रासंगिक सामग्री का चुनाव और उनका अनुवाद, फील्ड आधारित सामग्री की पहचान।
- भारतीय सन्दर्भ में प्रकाशन से सम्बन्धित कुछ छोटे अध्ययन और शोध करना।

- पढ़ने की आदतों को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न श्रेणी के पाठकों के साथ कार्यशालाएँ करना।
- स्कूलों में कम्प्यूटर के बढ़ते उपयोग के चलते शिक्षकों और छात्रों के लिए मल्टीमीडिया पैकेज तैयार करना। हमारे स्कूली प्रोग्राम के दौरान जनित सामग्री का उपयोग सी.डी. बनाने में किया जा सकता है। यहाँ यह कहना उपयुक्त होगा कि अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन के सहयोग से दो सी. डी. बनाने के काम की शुरुआत हो चुकी है।
- वेबसाइट का विकास – पाठ्यक्रम और नए उभरे अकादमिक विषयों पर बहस छेड़ने तथा अपने काम की साझेदारी और अपने प्रकाशनों की पहुँच बढ़ाने के लिए।

2. नए प्रकाशन

- ***कबीरा सोई पीर है जो जाने पर पीर :*** एकलव्य पिछले कई सालों से मालवांचल (इन्दौर, देवास, उज्जैन, शाजापुर, सीहोर) की कबीर भजन मंडलियों के साथ काम करता रहा है। इन मंडलियों द्वारा गाए जाने वाले भजनों के संकलन एवं दस्तावेज़ीकरण का काम भी किया गया है। कई साल पहले एक छोटी-सी पुस्तिका के रूप में इन भजनों का संकलन एकलव्य द्वारा प्रकाशित किया गया था। इस पर प्राप्त हुई प्रतिक्रियाओं के आधार पर इस पुस्तिका का परिवर्द्धित संस्करण इस साल प्रकाशित किया गया।
- ***समरहिल :*** शिक्षा पर प्रकाशित होने वाले क्लासिकों की ृंखला में इस साल हमने ए.एस. नील की पुस्तक *समरहिल* छापी है। गौरतलब है कि समरहिल नील द्वारा संचालित एक ऐसा स्कूल है जिसने दुनिया भर में ख्याति प्राप्त की है। 1921 में जर्मनी में शुरू होने के बाद समरहिल नाम का यह स्कूल अन्ततः लन्दन के पास एक गाँव में 1923 में स्थापित हुआ और आज तक बना हुआ है। यह पूरी तरह आवासी स्कूल रहा है। और इसका मूल मंत्र है स्वतंत्रता। स्कूल में लागू अनुशासन वे हैं जो सब मिलकर बनाते हैं, मिलकर लागू करते हैं और चाहें तो उन्हें बदलते भी हैं। समरहिल स्कूल के चालीस सालों के अनुभव को नील ने इस किताब में प्रस्तुत किया है। इस किताब की समीक्षा लगभग 10-12 हिन्दी के अखबारों व पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई है।
- ***नज़र का फेर :*** एकलव्य के प्रकाशनों में माथापच्ची ृंखला की किताबें काफी पसंद की जाती हैं। इस साल इस ृंखला की आठवीं किताब *नज़र का फेर* प्रकाशित हुई। यह किताब दृष्टिभ्रम के खेलों और सवालों पर आधारित है। यह मज़े के साथ-साथ दृष्टिभ्रम की कई गुत्थियों पर सोचने का मौका देती है।
- ***मध्य प्रदेश जोड़ो :*** गतिविधियों की किताबों के साथ ही गतिविधि चार्टों का प्रकाशन भी हम करते हैं। इस साल एक नया चार्ट "मध्यप्रदेश जोड़ो" इस ृंखला में जोड़ा गया है।
- ***स्त्री एवं पुरुष शरीर के आन्तरिक अंग :*** सालों पहले होशंगाबाद विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम के अन्तर्गत विकसित इस बहु-उपयोगी चार्ट को कई संशोधनों के साथ छापा गया। इसमें महिला-पुरुष अंगों के कामकाज के बारे में हिन्दी और अंग्रेज़ी में जानकारी दी गई है। स्कूलों में बच्चों के साथ या वयस्क समूहों की स्वास्थ्य कार्यशालाओं में भी अपना शरीर जानने में यह बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ है।
- ***अपना जुगाड़ी सूक्ष्मदर्शी :*** इस किताब को पढ़ने के बाद शायद खाली रिफिल, इंजेक्शन वाली काँच की बोतल और तमाम ऐसी बेकार पड़ी चीज़ों की उपयोगिता कई गुना बढ़ी हुई नज़र आने लगेगी। आम मिल जाने वाली चीज़ों से सूक्ष्मदर्शी जैसा वैज्ञानिक उपकरण आसानी से बनाया जा सकता है।

इसके अलावा नौ और किताबों पर इस साल भर में काम चलता रहा है जो अब प्रकाशन-पूर्व तैयारी के अन्तिम दौर में हैं। साथ ही 19 पुरानी किताबों को पुनर्मुद्रित भी किया गया।

चित्रकार कार्यशाला : *चकमक* व हमारे अन्य प्रकाशनों से जुड़े चित्रकारों के साथ हमने एक कार्यशाला आयोजित की। हमारी कोशिश थी बुनियादी क्षमता कार्यक्रम के अन्तर्गत इकट्ठा की गई सामग्री पर चित्रकारों के साथ काम करना। इसमें सभी चित्रकारों ने चार-पाँच समूहों में बँटकर अपनी पसन्द के अनुसार काम किया। एक समूह ने

कविताओं और गीतों के लिए चित्र बनाए, एक ने बोर्ड पर खेले जाने वाले कुछ खेल विकसित किए, एक और समूह ने लोक कथाओं पर *विशाल किताब* (बिग बुक) के लिए चित्र बनाए।

***रॉयलटी* :** एकलव्य में अब तक किताबों के लेखकों या चित्रकारों को एक-मुश्त रॉयलटी दी जाती थी। यह राशि किताबों की अनुमति लेते समय तय होती थी। आगे के कामों को सुचारू रूप से चलाने के लिए हमने रॉयल्टी पर दोबारा चर्चा करके एक-मुश्त और किश्तों में भुगतान, दोनों व्यवस्थाओं के लिए जगह बनाई।

3. प्रकाशनों का प्रसार

इस साल एकलव्य के टाइटल प्रकाशनों की कुल बिक्री 10.09 लाख रुपए की हुई। हमारे प्रकाशनों को लोकप्रिय बनाने एवं लोगों तक पहुँचाने के लिए किए गए प्रयास इस तरह से हैं :

- **पिटारा से**

इस वर्ष के दौरान पिटारा इन्दौर एवं भोपाल द्वारा की गई बिक्री लगभग 4.2 लाख रुपए रही। पिटारा को लोकप्रिय बनाने के लिए समय-समय पर बाल गतिविधि शिविर "पिटारा कैम्प" आयोजित किए गए। साथ ही स्थानीय अखबारों के साथ नियमित रूप से पर्चे भी बाँटे गए।

- **पुस्तक मेलों के ज़रिए**

राष्ट्रीय पुस्तक मेलों के स्तर पर हमने इन्दौर राष्ट्रीय पुस्तक मेले, भोपाल में जनवरी व फरवरी 2005 में आयोजित पुस्तक मेले एवं आगरा में ताज पुस्तक मेले में भागीदारी की।

- **एजेन्टों के ज़रिए**

आज हमारे एजेन्टों की संख्या लगभग 35 है। एजेन्ट्स के द्वारा साल भर में 1.66 लाख रुपए की सामग्री बेची गई।

- **स्थानीय स्कूलों एवं अन्य शैक्षिक आयोजनों में पुस्तक मेले**

पिटारा के तहत भोपाल में हमने गाँधी भवन (जून 2004), इन्टरनेशनल पब्लिक स्कूल मिसरोद (सितम्बर 2004) एवं बाल भवन स्कूल (जनवरी 2005) में स्थानीय पुस्तक मेले आयोजित किए। इसके अलावा हमने केन्द्रीय विद्यालय में राष्ट्रीय विज्ञान मेले (जून 2005) में अपनी पुस्तकें व अन्य सामग्री प्रदर्शित की। दूसरे शहरों में बी.जी.वी.एस. द्वारा आयोजित शिक्षा सभा, दिल्ली; आई.आई.टी., कानपुर एवं बाल विविधा, मुम्बई में भी एकलव्य की पुस्तकें एवं अन्य सामग्री प्रदर्शित एवं विक्रय की गई।

- **अन्य संस्थाओं के ज़रिए जो कि थोक खरीदी करती हैं**

ग्रामीण इलाकों तथा शहरी झुग्गी बस्तियों में शिक्षा क्षेत्र में काम कर रही कई संस्थाओं ने भी बड़े पैमाने पर एकलव्य के प्रकाशनों की थोक खरीद की। इन संस्थाओं के ज़रिए एकलव्य की सामग्री देश के विभिन्न ग्रामीण अंचलों में उपयोग की जा रही है। डाक द्वारा फुटकर खरीद करने वाले लगभग 30 प्रतिशत खरीददार भी इसी तरह की संस्थाएं हैं, जैसे विद्या भवन, सोसायटी, उदयपुर; रूम टू रीड इंडिया, नई दिल्ली; प्रथम, मुम्बई, दिल्ली तथा पुणे; सेवा मंदिर, उदयपुर; मुस्कान, भोपाल; दूसरा दशक, राजस्थान के विभिन्न केन्द्र आदि।

एकलव्य के प्रकाशनों एवं पिटारा के प्रचार-प्रसार के लिए हमने निम्न कदम उठाए :

- पुस्तक मेलों के दौरान पुस्तक सूची का वितरण।
- स्थानीय डिस्प्ले में पुस्तक सूची रखना।
- इस वर्ष एकलव्य के प्रकाशनों की विस्तृत सूची बनाकर ई-मेल के ज़रिए प्रसारित की गई।
- एकलव्य की पत्रिकाओं के साथ प्रकाशन सूची वितरित की गई।
- *क्यों और कैसे* की प्रतियों के साथ प्रकाशन सूची की लगभग 10,000 प्रतियाँ प्रेषित की गईं।
- भोपाल में ऑलमाइटी मीडिया ग्रुप द्वारा जारी शिक्षा डायरेक्टरी में विज्ञापन दिए गए।
- स्थानीय राज टी. वी. पर एक माह तक प्रकाशन एवं पिटारा की जानकारी सम्बन्धी विज्ञापन चलाया गया।

18 से 23 जून 2004 के दौरान "पिटारा उत्सव" का आयोजन किया गया। उत्सव के अन्तिम दिन एकलव्य के नए प्रकाशन *अपना जुगाड़ी सूक्ष्मदर्शी* का विमोचन किया गया।

इसके अलावा पिटारा की व्यवस्थाओं को सुचारू एवं व्यवस्थित करने हेतु हमने कुछ और प्रयास किए जो इस प्रकार हैं :

- लेखा और किताबों के भण्डारण के लिए एक नए सॉफ्टवेयर Tally 6.5 का अधिकृत पैकेज खरीदा गया एवं 1 अप्रैल 2004 से पिटारा में बिल बनाना, सामग्री के स्टॉक का हिसाब रखना आदि पूरी तरह से कम्प्यूटराइज़ कर दिया गया।
- पहले सभी पत्रिकाओं के पतों की सूचियों की व्यवस्था अलग-अलग थी। इसको एक साथ करने के लिए ERMS (Eklavya Resource Management System) नामक सॉफ्टवेयर का निर्माण करवाया गया। अब सभी पत्रिकाओं का डेटाबेस एक ही जगह है।

4. सर्व शिक्षा अभियान के पुस्तक मेले

मार्च-अप्रैल 2005 का डेढ़ महीना पुस्तक मेलों के नाम रहा। सर्व शिक्षा अभियान के तहत सभी ज़िला मुख्यालयों के स्कूलों में पुस्तक मेलों का आयोजन किया गया था। आयोजक था राजीव गाँधी शिक्षा मिशन। सरकार की ओर से यह एक सराहनीय कदम था। अब तक शैक्षिक सामग्री के नाम पर स्कूलों में चीज़ें थोप दी जाती थीं। इस बार उसे देखना, चुनना और खरीदना शिक्षकों के हाथ में था। और उन्होंने इसका भरपूर फायदा भी उठाया।

कुल 45 मेलों में से एकलव्य ने 32 में भाग लिया। भोपाल में एक टीम ने किताबों की पैकेजिंग, रीप्रिंट, टीम का गठन, संचालन, समय पर सामग्री को पहुँचाने का ज़िम्मा उठाया। लगभग युद्ध स्तर पर चले इस काम में एकलव्य के कार्यकर्ताओं के अलावा वॉलण्टियर्स को भी जोड़ा गया। एकलव्य के सभी केन्द्रों ने इसमें बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। नतीजा उम्मीद से ज़्यादा अच्छा रहा। इसमें कुल 3.6 लाख रुपए की बिक्री हुई।

एकलव्य ने मुस्कान, जोड़ो ज्ञान, नवनिर्मिति, दीक्षा जैसे संगठनों से भी सहायक शिक्षण सामग्री लेकर अपने स्टॉल पर रखी। शिक्षकों की माँग और सुविधा को ध्यान में रखते हुए माध्यमिक व प्राथमिक स्तर की पुस्तकों व सामग्री को अलग-अलग व्यवस्थित करके रखा गया, जैसे प्राथमिक स्तर की चित्रकथाओं का सेट, गतिविधि आधारित किताबों व चार्टों का सेट, कविता पोस्टर, आदि।

सीखें

- अन्तिम समय में कुछ नए सहायक शिक्षण सामग्री की व्यवस्था होने और सभी सामग्री के साथ उपयुक्त पाठ्यसामग्री या उपयोग के निर्देश न होने के कारण स्टॉल में इनके बारे में बताने में दिक्कत आई। इससे शिक्षकों को उनके कई उपयोग नहीं समझाए जा सके।
- कक्षाओं में सहायक शिक्षण सामग्री की बेहद माँग है। खासतौर पर गणित और अंग्रेज़ी में। इस माँग को पूरा करने के लिए हमें फील्ड में जाँची-परखी सामग्री को व्यवस्थित करने की ज़रूरत है।

5. *चकमक*

बीस साल से लगातार प्रकाशित पत्रिका *चकमक* का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल व सोच को उनके अपने परिवेश में उभारना रहा है, चाहे वह उनकी रचनाओं को पूरी अहमियत के साथ स्थान देने का मामला हो या उनसे किसी मुद्दे पर सीधे संवाद करना हो।

इस साल हमने हिन्दी के श्रेष्ठ रचनाकारों को *चकमक* से जोड़ने के साथ ही उनके साथ बेहतर रचनाओं के लिए लगातार संवाद किया। आज *चकमक* के साथ 100 से ज़्यादा समर्थ हिन्दी लेखक जुड़े हुए हैं। हिन्दी बाल साहित्य में कविता की स्थिति चिन्ता का कारण है। आज भी महज़ तुकबन्दी ही कविता का आधार बनी हुई है। इसे तोड़ने के लिए बीते साल हमने कुछ चुनिन्दा अंग्रेज़ी साहित्यकारों की अतुकान्त कविताएँ न सिर्फ छापीं बल्कि *चकमक* के

नियमित लेखकों के साथ उन पर लगातार संवाद स्थापित किया। एक और प्रयोग है साल भर तक किसी चुनिन्दा बाल कविता पर आधारित हर महीने का आकर्षक केलेण्डर। बाल साहित्य की अच्छी पुस्तकों के बारे में हमने नियमित रूप से "पुस्तक चर्चा" नामक कॉलम में समीक्षात्मक चर्चा भी की।

आमतौर पर हिन्दी बाल साहित्य में दो तरह की विसंगतियाँ नज़र आती हैं। एक तो हिन्दी बाल साहित्य की सामग्री विभिन्न मुद्दों पर संवेदनशील नहीं है, चाहे वह लिंग, जाति, धर्म आदि की बात हो या फिर हमारे आसपास रह रहे शारीरिक रूप से भिन्न क्षमता रखने वाले व्यक्तियों का मामला हो। यही जड़ता चित्रों में भी स्पष्ट दिखती है।

दूसरी विसंगति है बच्चों को नासमझ समझने की। लगभग समूचे हिन्दी बाल साहित्य की सामग्री में बच्चे पात्र और उनकी भूमिका, उनके सामने पेश की गई दुनिया की तस्वीर आदि ऐसे बिन्दु हैं जिनकी रूढ़ परिपाटी बन गई है। वे बिना किसी अध्ययन व चर्चा के मान लिए जाते हैं। *चकमक* ने पिछले एक-डेढ़ साल के दौरान इन विसंगतियों को ध्यान में रखकर सामग्री प्रकाशित की। हमने अलग-अलग तरह की शारीरिक सीमाओं से जूझ रहे बच्चों से बातचीत की और उनके स्कूलों के बारे में जानकारी प्रकाशित की। पिछले साल *चकमक* ने विस्थापन के मसले पर प्रमुखता से आवाज़ उठाई और स्थानीय विस्थापन के शिकार बच्चों से बातचीत की।

आज खासकर उन हिन्दी भाषी बच्चों के लिए पर्याप्त सामग्री उपलब्ध नहीं है जो प्राइमरी स्कूल में पढ़ रहे हैं। इस तथ्य पर विचार-विमर्श के बाद हमने *चकमक* के पाठक वर्ग का पुनर्निर्धारण किया। पिछले एक साल से *चकमक* आठ से बारह साल के आयु वर्ग के बच्चों के लिए उपयुक्त सामग्री तैयार करने में लगी है। इस हेतु चकमक में कई बदलाव हुए। इस उम्र वर्ग के बच्चों के लिए चित्रकथाएँ प्रकाशित की गईं। लगभग हर अंक में इन्हीं पाठकों को ध्यान में रखते हुए लेखों की लम्बाई और विषय के बारे में हमने काफी सजगता से काम करने की कोशिश की है।

हमने सामग्री का प्रस्तुतीकरण और रूपसज्जा को सुधारने के लिए भी प्रयास किए। हमने चित्रकारों से लगातार संवाद स्थापित किया। इस हेतु विभिन्न स्रोतों से अच्छे चित्रों वाली किताबें जुटाकर हमने उनके चित्रों पर बहसें भी कीं। पिछले साल "मम्मी पापा जब बच्चे थे" और "गली-गली के खेल" जैसे कॉलम भी शुरू किए। इनमें से पहला कॉलम बच्चों से सीधा संवाद स्थापित करने की दिशा में एक और कदम था।

एक और चीज़ जिस पर हमने विशेष ध्यान दिया वह है अवलोकन पर आधारित सामग्री। हमारी कोशिश रही कि हर अंक में कम से कम एक लेख इस विधा का हो। एकाध अंक को छोड़कर हम यह कर पाने में सफल रहे।

भविष्य में *चकमक* की पृष्ठ संख्या बढ़ाने, कुछ पन्नों को रंगीन करने आदि की सम्भावनाओं पर विचार किया जा रहा है। वर्तमान में *चकमक* की लगभग ढाई हज़ार प्रतियाँ निकल रही हैं। *चकमक* की मार्केटिंग के लिए हमने छुटपुट प्रयास किए हैं। पिछले साल हुए तीन बड़े पुस्तक मेलों में *चकमक* की सदस्यता पर विशेष ज़ोर दिया गया। एक स्थानीय न्यूज़ चैनल पर दो महीने *चकमक* के विज्ञापन की पट्टी प्रसारित हुई। विभिन्न संस्थाओं एवं सरकारी विभागों से सदस्यता के बारे में बातचीत की तथा हमारी अन्य पत्रिकाओं *स्रोत* व *संदर्भ* में विज्ञापन दिए।

6. स्रोत – विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर सेवा

स्रोत हिन्दी में विज्ञान और टेक्नॉलॉजी की एकमात्र फीचर सेवा है। इसकी परिकल्पना हिन्दी समाचार पत्रों में विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी के लेखों को बढ़ावा देने के लिए की गई थी। यह महसूस किया जा रहा था कि छोटे शहरों व कस्बों के हिन्दी समाचार पत्रों के पास विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी से सम्बन्धित अच्छे आलेखों की कमी है। इसी कमी को पूरा करने के लिए इस परियोजना को राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार परिषद के सहयोग से चलाया जा रहा है। यह स्रोत का 15वाँ वर्ष है।

स्रोत के दो प्रमुख भाग हैं – साप्ताहिक फीचर्स व मासिक पत्रिका। स्रोत साप्ताहिक फीचर्स के भी दो भाग हैं : सामान्य सेवा व विशेष सेवा। स्रोत द्वारा निर्मित सामग्री का लगभग 60 प्रतिशत हिस्सा सामान्य सेवा के लिए होता है जो हिन्दी भाषी क्षेत्र के 180-190 समाचार पत्रों के पास पहुँचता है। शेष 40 प्रतिशत हिस्सा कुछ चुनिन्दा समाचार पत्रों को विशेष सेवा के अन्तर्गत भेजा जाता है। हर माह कुल मिलाकर 40-44 पन्नों की सामग्री प्रकाशित होती है।

राष्ट्रीय विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी संचार परिषद् ने 2003-2004 में परियोजना की समीक्षा के लिए एक समिति गठित की थी। इस समिति द्वारा प्रस्तावित सुझावों में निम्न बातें उल्लेखनीय हैं :

1. **पंजीयन :** समिति ने सुझाव दिया था कि *स्रोत* पत्रिका का पंजीयन भारत के समाचार पत्रों के पंजीयन कार्यालय में होना चाहिए। अतः हमने पंजीयन के लिए आवेदन प्रस्तुत कर दिया है। हमें "स्रोत : विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर्स" का शीर्षक मिल गया है।
2. **पिक-अप रेट :** इस वर्ष हमारा ध्यान मुख्यतः छोटे अखबारों पर था और हमारा प्रयास सफल भी हुआ। इस साल समाचार पत्रों को हमारे द्वारा भेजे गए सभी लेख लगभग 7.2 बार प्रकाशित हुए हैं। पिछले साल के 5.1 की तुलना में यह एक उल्लेखनीय प्रगति है।
3. **आय :** पिक-अप रेट में उल्लेखनीय वृद्धि के बावजूद हमारी आय की स्थिति असंतोषजनक ही रही। समाचार पत्रों के द्वारा प्रकाशित स्रोत द्वारा भेजी गई सामग्री पर कुछ शुल्क प्राप्त करने का प्रयास पूर्णतः असफल रहा है। आय की कमी का एक कारण यह भी हो सकता है कि समीक्षा कमेटी के सुझाव पर हमने छोटे समाचार पत्रों के लिए सेवाएँ पूर्णतः निःशुल्क कर दीं। वर्ष 2004-2005 में हमारी आय 61,184 रुपए मात्र ही है।
4. **आलेखों की प्रकृति :** स्रोत सामग्री का समाचार पत्रों के द्वारा अधिक से अधिक संख्या में प्रकाशित किया जाना उत्साहवर्धक है। अब समाचार पत्र सीधे ही ई-मेल के माध्यम से लेख भेजने का आग्रह करने लगे हैं। हमारा अपना अवलोकन है कि हमारे द्वारा प्रकाशित सामग्री का मुख्य हिस्सा स्वास्थ्य, दवाएँ, जीव विज्ञान और पर्यावरण से सम्बन्धित ही होता है। इन विषयों के लेखों व विज्ञान के अन्य विषयों या उनसे सम्बन्धित टेक्नॉलॉजी के लेखों के मध्य सन्तुलन स्थापित करने की हमारी कोशिश जारी है।

   इसके लिए हम विभिन्न विषयों से सम्बन्धित व्यक्तियों की खोज में हैं जो समाचार पत्रों के पाठकों के लिए विज्ञान सम्मत लेख लिख सकें। विज्ञान का इतिहास, भौतिक विज्ञान व टेक्नॉलॉजी, समकालीन अनुसन्धान आदि पर लिखने वाले लेखकों की कमी महसूस होती रही है।

7. *शैक्षणिक संदर्भ*

शैक्षणिक संदर्भ के प्रकाशन का यह ग्यारहवाँ साल था। इस साल हमें छह अंक प्रकाशित करने थे, लेकिन हम सिर्फ दो अंक (अंक 48 और 49) ही प्रकाशित कर पाए। अंक 50 पर भी काम चलता रहा।

इससे पहले भी हम अपने लक्ष्य से थोड़ा पिछड़ते रहे हैं। लेकिन फिर भी एक साल में चार-पाँच अंक ही प्रकाशित होने की एक प्रमुख वजह हमारे सम्पादक मंडल के अधिकांश सदस्यों का *संदर्भ* से अंशकालिक जुड़ाव का होना है। हम इस समस्या को सुलझाने की दिशा में कदम बढ़ा रहे हैं।

काफी समय से एकलव्य की समस्त पत्रिकाओं के वितरण के काम को संयुक्त रूप से करने के बारे में विचार-विमर्श चल रहा था। इस साल से यह काम नए सॉफ्टवेयर की मदद से भोपाल केन्द्र से शुरू हो गया है। *संदर्भ* के वितरण एवं सदस्यता शुल्क वगैरह का काम अब होशंगाबाद की बजाय भोपाल केन्द्र से संचालित हो रहा है।

इस साल *संदर्भ* के टाइटल रजिस्ट्रेशन का काम पूर्ण हुआ। हमें जनवरी 2005 में "शैक्षणिक संदर्भ" शीर्षक आवंटित हुआ। इसी कड़ी में आगे हमने आर.एन.आई., दिल्ली में रजिस्ट्रेशन के लिए आवेदन दे दिया है एवं *शैक्षणिक संदर्भ* का पहला अंक प्रस्तुत कर दिया है।

संदर्भ के ग्राहकों की संख्या अभी भी 1200-1500 के बीच रुकी हुई है। *संदर्भ* का नियमित प्रकाशन होने पर मार्केटिंग की सम्भावनाओं को तलाशा जा सकता है।

काफी समय से *संदर्भ* में प्रकाशित लेखों के संकलन बनाने का विचार उभरता रहा है। *संदर्भ* के प्रत्येक अंक में भौतिकी, रसायन, जीव विज्ञान, वनस्पति विज्ञान जैसे विषयों से सम्बन्धित लेखों को विभिन्न सूत्रों में बाँधकर कई

संकलन प्रकाशित करने की योजना तैयार की गई। इनके सम्पादन और उन्हें नए कलेवर में ढालने का काम *संदर्भ* के पुराने साथी दीपक वर्मा कर रहे हैं।

8. *क्यों और कैसे*

क्यों और कैसे नामक दीवार पत्रिका विज्ञान से सम्बन्धित विषयों पर हाई स्कूल और कॉलेज के विद्यार्थियों के लिए प्रकाशित की जा रही है। पत्रिका पाक्षिक है और एक साथ हिन्दी व अंग्रेज़ी में प्रकाशित की जाती है। हरेक संस्करण में समाचार पत्र के आकार की दो रंगीन शीट होती हैं। राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार परिषद और एकलव्य के इस संयुक्त प्रयास में एकलव्य की ज़िम्मेदारी सामग्री का विकास करना तथा पत्रिका का प्रकाशन और वितरण है।

निर्माण : *क्यों और कैसे* के दोनों संस्करणों का प्रकाशन जुलाई 2004 से अप्रैल 2005 तक नियमित होता रहा। परन्तु शुरू से ही इसे पाठकों तक भेजने में बहुत ज़्यादा डाकखर्च आ रहा था। इसलिए इसे समाचार पत्रों के अन्तर्गत पंजीकृत करवाने का निर्णय लिया गया। पंजीकरण की ज़िम्मेदारी राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार परिषद ने ली थी। परन्तु इस काम में बहुत देरी हुई। इसके बावजूद पत्रिका के प्रति पाठकों के उत्साह को देखते हुए पंजीकरण होने तक कम संख्या में इसका प्रकाशन जारी रखने का फैसला किया गया। अतः 15 दिसम्बर 2003 से 16 मार्च 2005 के बीच इसके अंकों के हिन्दी और अंग्रेज़ी संस्करणों की हज़ार-हज़ार प्रतियाँ छापी गईं। सीमित संख्या में ही सही, पत्रिका का नियमित प्रकाशन पंजीकरण के नियमों के अनुसार भी ज़रूरी था। अन्ततः सितम्बर 2004 में अंग्रेज़ी संस्करण का पंजीयन हो गया और अंग्रेज़ी का नाम *Kyon Aur Kaise* मिल गया है।

उत्साहजनक प्रतिक्रिया : पत्रों, फोन और ई-मेल से हमें मिले सन्देशों से यह अहसास होता है कि पत्रिका शिक्षकों और विद्यार्थियों दोनों को पसन्द आ रही है। इसकी विषय-वस्तु, शैली, भाषा, चित्रांकन व डिज़ाइन, सभी को सराहा गया है। इस साल के अन्त तक अंग्रेज़ी संस्करण के 350 सदस्य और हिन्दी के 100 सदस्य बने हैं।

वितरण : *क्यों और कैसे* के छह अंक तीन-तीन अंकों के खेप में सभी केन्द्रीय विद्यालयों, नवोदय विद्यालयों, दिल्ली के पब्लिक स्कूलों, डी.ए.वी स्कूलों, और मध्य प्रदेश के स्कूलों को भेजे गए। यानी किसी भी स्कूल को हिन्दी या अंग्रेज़ी संस्करणों के तीन-तीन अंक मिले। शुरू में हमने एक खेप मध्यप्रदेश के कॉलेजों को भी भेजा। परन्तु कॉलेजों से कोई प्रतिक्रिया न मिलने के कारण इसे बन्द कर दिया गया।

योजना के मुताबिक हमें इस वर्ष इस पत्रिका के प्रचार-प्रसार के लिए दो नए लोगों को नियुक्त करना था। परन्तु पंजीकरण के अभाव में इतनी कम संख्या में पत्रिका की छपाई होने के चलते हमने इस काम को मुल्तवी रखा। इस वजह से प्रचार-प्रसार के काम सुनियोजित तरीके से नहीं हो पाए।

पत्रिका को शुरू करते समय इसके प्रचार-प्रसार की प्रमुख ज़िम्मेदारी राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार परिषद ने ली थी। परिषद ने राष्ट्रीय विज्ञान कांग्रेस में *क्यों और कैसे* को प्रसारित तो किया परन्तु इसे मीडिया में बहुत ज़्यादा स्थान नहीं मिल पाया।

सरोकार के बिन्दु

- *क्यों और कैसे* एक ऐसी पत्रिका है जो अपनी खास विषय-वस्तु और प्रस्तुति के कारण आसानी से नज़र आती है। फिर भी इसमें सामग्री निर्माण और डिज़ाइनिंग के लिए एक सशक्त टीम की ज़रूरत होगी।
- पत्रिकाओं के हमारे पहले के अनुभव बताते हैं कि इनका प्रचार-प्रसार हमारा कमज़ोर पहलू है। अतः हमें राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार परिषद के साथ मिलकर किसी व्यावसायिक विपणन एजेंसी की मदद से एक कारगर रणनीति बनानी होगी।
- *क्यों और कैसे* के हिन्दी संस्करण का पंजीयन भी जल्द-से-जल्द होना ज़रूरी है जिससे अगले वर्ष में छपाई और डाक पर हो रहा अतिरिक्त खर्च बचाया जा सके। हिन्दी संस्करण के लिए सदस्यता मुहिम चलाने के लिए भी यह ज़रूरी होगा।

समावेश के साथ काम

पिछले पाँच सालों से एकलव्य द्वारा किए जा रहे ग्रामीण विकास के कामों को एकलव्य के अन्दर एक स्वायत्त समूह द्वारा चलाया जा रहा था। साथ ही ये प्रयास भी जारी थे कि इस काम में लगे समूह को एक स्वतंत्र संस्था के रूप में पंजीकृत किया जाए। यह पंजीकरण सितम्बर 2003 में सम्भव हुआ और उसके बाद अप्रैल 2004 से यह समूह समावेश के नाम से औपचारिक रूप से एकलव्य से अलग हो गया।

नए समूह और नई संस्था की ज़रूरतों को देखते हुए यह तय किया गया है कि ज़रूरत पड़ने पर आगामी कुछ सालों तक एकलव्य व समावेश कुछ काम साझे रूप में करेंगे।

1. सखी पहल कार्यक्रम

महिला जनप्रतिनिधियों व नेत्रियों की क्षमता वृद्धि के इस कार्यक्रम का प्रस्ताव समावेश ने संयुक्त राष्ट्र विकास परियोजना को दिया था। चूँकि संयुक्त राष्ट्र विकास परियोजना ने स्पष्टतः कहा था कि वे नई पंजीकृत संस्थाओं को तीन साल के लिए वित्तीय सहायता नहीं देते, इसलिए समावेश, एकलव्य व यू.एन.डी.पी. के बीच एक साझा करार हुआ था।

यह कार्यक्रम देवास ज़िले के खातेगाँव, सोनकच्छ और टोंकखुर्द तहसीलों के चार क्लस्टरों में अप्रैल 2004 से चलाया जा रहा है। कार्यक्रम का ढाँचा इस तरह से विकसित किया गया है कि हर क्लस्टर के हर जन शिक्षा केन्द्र के अन्तर्गत आने वाले तीन-चार गाँवों के समूह में एक साथिन या साथी कार्यरत है। इसके क्रियान्वयन का काम समावेश के अलावा सोनकच्छ में जनसाहस और टोंकखुर्द में देवास गौरी महिला समिति नामक स्थानीय संगठनों के साथ मिलकर किया जा रहा है।

इस कार्यक्रम के तीन प्रमुख उद्देश्य पहचाने गए हैं। वे हैं निर्वाचित महिला जनप्रतिनिधियों की क्षमता वृद्धि करना, क्षमता वृद्धि के काम को बेहतर बनाने के लिए ढाँचे और व्यवस्थाएँ खड़ा करना और चुनाव में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए समुदाय के साथ काम करना। कार्यक्रम के अन्तर्गत किए गए कामों का विवरण नीचे दिया गया है।

वर्तमान स्थिति की पहचान

वर्तमान में औरतों के सरोकार के विषयों को पहचानने के लिए एक बेसलाइन सर्वे के ज़रिए जानकारी इकट्ठा करने का काम शुरू किया गया। इसके अलावा चारों क्लस्टरों की महिला जन प्रतिनिधियों तथा नेत्रियों के साथ बैठकें की गईं। इससे उभरे महिलाओं के सरोकार इस प्रकार थे :

- ज़मीन के पट्टे से सम्बन्धित दिक्कतें।
- औरतों के प्रति हिंसा।
- सरपंचों की भ्रष्ट छवि के कारण महिला सरपंचों को आने वाली कठिनाइयाँ।
- यह धारणा कि ईमानदार लोग भी व्यवस्था का हिस्सा बनने पर भ्रष्ट हो जाते हैं।
- महिलाओं द्वारा की गई पहलों को पुरुष समाज द्वारा गम्भीरता से न लिया जाना।
- शिक्षा के साधनों (खासकर माध्यमिक स्कूलों) और रोज़गार के उपायों की कमी।

प्रशिक्षण पाठ्यक्रम व सामग्री का विकास

इस कार्यक्रम में सबसे बुनियादी स्तर पर काम करने वाले साथिनों/साथियों के लिए शुरुआती उन्मुखीकरण और सात-दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का एक प्रारूप बनाया गया है। साथिनों/साथियों के उन्मुखीकरण के लिए प्रशिक्षण मार्गदर्शिका भी तैयार की गई है। प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में जो विषय शामिल किए गए हैं, वे हैं :

- शासन और पंचायतों में महिलाओं की भूमिका।
- ग्रामीण समाज में औरतों की स्थिति और उनका सशक्तिकरण।
- अल्प बचत समूह और अन्य ग्रामीण कार्यक्रमों का एकीकरण।

- आर्थिक सशक्तिकरण और उसकी रणनीतियाँ।

इसके अलावा अल्प बचत समूह, पंचायत चुनाव, और बेसलाइन सर्वे पर प्रशिक्षण मार्गदर्शिकाएँ तैयार की गई हैं।

साथिनों/साथियों को नियमित रिपोर्ट लिखने में सक्षम बनाने के लिए एक दस्तावेज़ीकरण प्रशिक्षण दिया गया। इसके फलस्वरूप सभी साथिनों/साथियों से रोज़ाना डायरी लिखने की अपेक्षा की जा रही है। उनकी लिखी डायरियों की गुणवत्ता तथा उपयोगिता पर हर सप्ताह होने वाली बैठकों में चर्चा की जाती है ताकि इसमें और सुधार आ सके।

प्रकाशन

सखी पहल समाचार पत्र का पहला अंक इस वर्ष के आखिर में प्रकाशित किया गया। यह समाचार पत्र औरतों के अपने मुद्दों को सामने लाने, विकास और स्त्री सशक्तिकरण के विचारों और अनुभवों को बाँटने, औरतों को कानूनी और तकनीकी जानकारी मुहैया कराने और महिला नेतृत्व से जुड़े मुद्दों, कठिनाइयों और सफल कहानियों को एक मंच देने में हमारी मदद करेगा।

सखी मंच का गठन

कार्यक्रम के अन्तर्गत क्लस्टर स्तर पर सक्रिय महिला जनप्रतिनिधियों और अल्प बचत समूह के अग्रणी सदस्यों की पहचान करके सखी मंच विकसित करने की योजना थी। अजनास, हरणगाँव और सोनकच्छ क्लस्टरों में सखी मंच की शुरुआत हो चुकी है। मंच के सदस्यों ने अपनी पहल पर कार्यक्रम के लिए साथिनें/साथी नियुक्त करने का काम भी शुरू कर दिया है।

सखी मंच के तत्वाधान में ही मार्च 2005 में अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर कार्यक्रम से जुड़े चारों क्लस्टरों पर क्लस्टर स्तर के महिला सम्मेलन आयोजित किए गए। मंच में हुई चर्चाओं से महिलाओं के जो मुद्दे उभरे वे इस प्रकार हैं :

- गाँव में सुरक्षित जचकी के लिए चिकित्सा सुविधाओं का अभाव।
- गाँव में महिलाओं के लिए शौचालय की कमी।
- लड़कियों के लिए स्कूलों की कमी।
- साफ पीने के पानी का अभाव और हैण्डपम्पों का रख-रखाव न होना।
- राशन की पर्याप्त आपूर्ति न होना।
- गाँवों में बिजली की कमी।
- गाँव में नालियों और निकास व्यवस्था की कमी।

2. पंचायत मतदाता जागरूकता अभियान

मध्य प्रदेश में जनवरी 2005 में होने वाले पंचायत चुनावों को देखते हुए इस कार्यक्षेत्र के मतदाताओं के बीच एक अभियान चलाया गया। इसका उद्देश्य था चुनाव में खड़े होने वाले उम्मीदवारों को परखने में मतदाताओं को सक्षम बनाना, एक आदर्श उम्मीदवार के गुणों की चर्चा को केन्द्र में लाना, स्थानीय लोगों (खासकर अल्प बचत समूह या अन्य समूहों के सक्रिय लोगों) में से ऐसे लोगों की पहचान करना जो ये अपेक्षाएँ पूरी करते हों, और ऐसे उम्मीदवारों को फॉर्म आदि भरने में मदद करना।

इसके लिए पंचायत चुनावों पर एक प्रशिक्षण मार्गदर्शिका तैयार की गई है। इसकी मदद से कार्यक्रम के कार्यकर्त्ताओं को प्रशिक्षित करने के लिए प्रशिक्षकों का एक दल तैयार किया गया है।

इस अभियान में नुक्कड़ नाटक, पोस्टर प्रदर्शनी, पर्चे आदि माध्यमों का भरपूर सहारा लिया गया। साथ ही ग्रामीण स्तर पर पंचायत चुनाव के बारे में जानकारी प्राप्त करने हेतु फील्ड सूचना केन्द्र भी चलाए गए।

इस अभियान का लाभ लेने वाले लोगों का ब्यौरा इस प्रकार है :

तालिका 5: नुक्कड़ नाटक व पोस्टर प्रदर्शनी देखने वाले लोग			
क्लस्टर	गाँवों की संख्या	भागीदार लोगों की संख्या	
		महिला	पुरुष
अजनास	9	267	692
हरणगाँव	12	380	645
सोनकच्छ	20	1240	1860
टोंकखुर्द	15	621	739
कुल	**56**	**2508**	**3936**

अन्य संस्थानों के साथ साझी पहल

इस काम में अन्य संस्थाओं को जोड़ने के प्रयास में समावेश ने हंगर प्रोजेक्ट, मध्य प्रदेश के साथी संगठनों के कार्यकर्त्ताओं का भी प्रशिक्षण किया। समर्थन, मध्य प्रदेश ने इस अभियान को पूरे राज्य में चलाने का निर्णय लिया है। समावेश को इस काम के लिए गठित कोर समूह का हिस्सा बनाया गया है।

इसके अलावा संयुक्त राष्ट्र विकास परियोजना के साथी संगठनों के लिए भोपाल में एक आदान-प्रदान कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें मध्य प्रदेश की पंचायतों के निर्वाचित प्रतिनिधि, महिला नेत्रियाँ और देश के 10 राज्यों के संयुक्त राष्ट्र विकास परियोजना के साथी संगठनों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया और पंचायत चुनाव के अपने अनुभवों को सबके साथ बाँटा। इस मौके पर इस कार्यक्रम के क्रियान्वयन से सम्बन्धित अनुभवों को भी आपस में बाँटा गया।

3. ग्रामीण विकास के लिए भागीदारीपूर्ण योजना

ग्रामीण विकास के लिए एक एकीकृत कार्यक्रम तैयार करने का यह कार्यक्रम अक्तूबर 1998 से सर दोराबजी टाटा ट्रस्ट की सहायता से चलाया जा रहा था। एकलव्य में यह काम ग्रामीण विकास के कार्यक्रमों से जुड़ा समूह कर रहा था। समावेश के गठन की प्रक्रिया पूरी हो जाने के बाद इस कार्यक्रम के अन्तिम छह महीनों का काम एकलव्य और समावेश ने मिलकर पूरा किया। बाद में एकलव्य ने इस काम को सर दोराबजी टाटा ट्रस्ट से प्राप्त कॉर्पस फंड पर मिल रहे ब्याज की सहायता से भी आगे बढ़ाया।

इस कार्यक्रम का प्रमुख उद्देश्य था ग्रामीण समुदाय को साथ लेते हुए विकास का एक ऐसा एकीकृत कार्यक्रम तैयार करना जो स्थानीय नेतृत्व को बढ़ावा दे। इसके लिए जिन खास क्षेत्रों में पहल की गई उनका ब्यौरा नीचे है।

स्थानीय स्वशासन को मज़बूत बनाना

स्थानीय स्वशासन को मज़बूत बनाने का काम हरदा ज़िले की खिड़किया तहसील के मोरगढ़ी क्लस्टर और देवास ज़िले की खातेगाँव तहसील के अजनास क्लस्टर में किया गया है। इस साल इसके तहत गरीबी रेखा सर्वेक्षण से सम्बन्धित मुद्दों पर लोगों में जानकारी और जागरूकता बढ़ाने के लिए एक अभियान चलाया गया। राज्य सरकार द्वारा प्रतिनिधियों के प्रशिक्षण के काम में भी सहयोग बना रहा। *पंचतंत्र* नामक मासिक समाचारपत्र का प्रकाशन नियमित तौर पर जारी रहा।

महिला सशक्तिकरण

कार्यक्रम का यह अंग देवास ज़िले के खातेगाँव ब्लॉक के अजनास और हरणगाँव क्लस्टरों तथा हरदा ज़िले की खिड़किया तहसील के मोरगढ़ी क्लस्टर में चलाया जा रहा है। इसका प्रमुख उद्‌देश्य था महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक स्थितियों में सुधार लाना ताकि उनकी जीवन परिस्थितियों में बदलाव आए और उनके जीवन पर प्रभाव

डालने वाले निर्णयों में उनकी भागीदारी और भूमिका बढ़े। इसके लिए महिला अल्प बचत समूहों के मार्फत काम करते हुए पंचायत, प्राकृतिक संसाधनों के प्रबन्धन, स्वास्थ्य और शिक्षा जैसे क्षेत्रों में महिलाओं की भूमिका बढ़ाने की कोशिश की गई।

कार्यक्रम के तहत तीनों क्लस्टरों में कुल 39 अल्प बचत समूह कार्यरत थे। इनका विवरण नीचे तालिका में दिया गया है :

तालिका 6

क्र.	क्लस्टर	समूह	सदस्य संख्या	कुल संख्या	कुल बचत	कुल ब्याज राशि	कुल चक्रिय ऋण	ऋण संख्या	बैंक खाता वाले समूह
1.	हरणगाँव	15	200	89372	27843	117215	223241	272	7
2.	मोरगढ़ी	14	150	73779	37868	111647	220607	611	8
3.	अजनास	10	104	18750	1597	20347	32775	58	0
कुल		**39**	**454**	**181901**	**67308**	**249209**	**476623**	**941**	**15**

कार्यक्रम के आखिरी साल में अल्प बचत समूहों के काम का सम्बन्ध प्राकृतिक संसाधन विकास जैसे आयामों के साथ जोड़ने की कोशिश हुई। इसके तहत कई अल्प बचत समूहों के सदस्य कृषि विकास और प्राकृतिक खाद निर्माण के काम में शामिल हुए। इन लोगों ने बीजों की उन्नत प्रजातियों को भी आज़माना शुरू किया है। मोरगढ़ी क्लस्टर में स्वास्थ्य सेवाओं के घोर अभाव और यहाँ की विशिष्ट ज़रूरतों को देखते हुए यहाँ के बचत समूहों ने नौ गाँव स्तरीय दवा केन्द्र भी स्थापित किए। स्वास्थ्य के विषय की सामान्य जानकारी और रोकथाम के उपायों पर मई और जून 2004 में दो कार्यशालाएँ भी आयोजित की गईं।

4. प्राकृतिक संसाधन विकास

यह कार्यक्रम हरदा ज़िले की खिड़किया तहसील के मोरगढ़ी क्लस्टर और देवास ज़िले की खातेगाँव तहसील के हरणगाँव क्लस्टर में जारी है। इसके मुख्य उद्देश्य थे क्षेत्र के प्राकृतिक संसाधनों से सम्बन्धित निर्णय लेने की प्रक्रिया में स्थानीय समुदाय को भागीदार बनाना; प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर भूमिहीन तथा सीमान्त किसानों के जीवनयापन के साधनों को बढ़ाना, जंगल, निस्तार की ज़मीन, पानी के स्रोत आदि सामूहिक सम्पत्ति का बेहतर प्रबन्धन, और किसानों को टिकाऊ खेती के तरीके सिखाना और बेहतर फसलों के चुनाव में मदद करना।

इसके तहत कृषि-कार्य में सीधी मदद को स्थानीय समुदाय ने पसन्द किया और नए सुझावों को खरीफ और रबी की फसलों में आज़माकर उन्होंने इसका लाभ भी लिया। इसमें फसलों की किस्मों में बदलाव करना, धान की वैकल्पिक प्रजातियों को आज़माना, एकीकृत कीट प्रबन्धन के तरीके अपनाना, वर्मीकम्पोस्टिंग करके खाद बनाना और जल स्रोतों के प्रबन्धन के लिए प्रशिक्षण लेना आदि शामिल था। इस काम में राष्ट्रीय बीज निगम, हैदराबाद; इन्दौर कृषि महाविद्यालय और सोया तेल निर्माता संघ, इन्दौर से भरपूर मदद ली गई।

5. शिक्षा में समुदाय की भागीदारी बढ़ाना

इस कार्यक्रम के तहत देवास ज़िले के खातेगाँव ब्लॉक के अजनास और हरणगाँव क्लस्टरों में तथा हरदा ज़िले की खिड़किया तहसील के मोरगढ़ी क्लस्टर में कुल 23 शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र चलाए जा रहे हैं। शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र सरकारी स्कूलों और ग्रामीण गरीब परिवारों के बीच एक सेतु का काम करके स्कूल छोड़ रहे बच्चों की संख्या कम करने का प्रयास करते हैं। साथ ही यह भी कोशिश है कि ग्रामीण स्कूलों में दी जा रही शिक्षा के स्तर में सुधार आए और समुदाय में गाँव स्तर के संस्थानों के प्रबन्धन की क्षमता विकसित हो। कार्यक्रम के क्रियान्वयन में कक्षाओं का नियमित अवलोकन, केन्द्रों के संचालन में लगे गुरुजियों का प्रशिक्षण, शिक्षण पद्धति में लगातार सुधार व विकल्पों

की तलाश आदि शामिल हैं। इस काम के एक विस्तार के रूप में हमने कैथलिक रिलीफ सर्विसेज़, भोपाल द्वारा समर्थित स्कूल व अनौपचारिक शिक्षा केन्द्र के शिक्षकों तथा मुस्कान, भोपाल के कार्यकर्त्ताओं के लिए आयोजित प्रशिक्षणों में मास्टर ट्रेनर की भूमिका अदा की।

6. गाँव स्तर पर बच्चों के लिए गतिविधियों का आयोजन

इस कार्यक्रम में देवास ज़िले के खातेगाँव ब्लॉक के अजनास और हरणगाँव क्लस्टरों में गाँव स्तर पर 10 चकमक क्लब चलाए जा रहे हैं। हरेक क्लब में नौ से चौदह साल की उम्र के स्कूल जाने वाले लगभग 20-25 विद्यार्थी भाग लेते हैं जिनमें लड़के-लड़कियाँ दोनों शामिल हैं। समावेश के कार्यकर्त्ताओं के सहयोग से इनमें से कुछ अग्रणी बच्चे खुद ही इन क्लबों को संचालित करते हैं। इन बच्चों के साथ नियमित रूप से मासिक बैठकें, गतिविधि कार्यशालाएँ आदि आयोजित कर इनकी क्षमताओं में लगातार बढ़ोत्तरी की कोशिशे की जाती है। हमारा उद्देश्य है कि इस प्रक्रिया में इन बच्चों में नेतृत्व की क्षमताओं का विकास हो।

चकमक क्लब के अनुभवों से गुज़रने के बाद कुछ युवाओं ने इस इलाके में सामाजिक-सांस्कृतिक पहल करने के लिए अपने आप को सृजन नेटवर्क के नाम से संगठित किया है। इसमें सतवास, सन्दलपुर, खातेगाँव और चारुवा क्लस्टरों के युवा शामिल हैं। इनके काम में समावेश के स्थानीय समूह का मार्गदर्शन बना रहता है।

7. स्वास्थ्य में समुदाय की हिस्सेदारी

स्वास्थ्य के क्षेत्र में काम करने की हमारी पहले योजना नहीं थी, परन्तु इस इलाके में स्वास्थ्य सेवाओं की खस्ता हालत के मद्देनज़र इसे बाद में जोड़ा गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य है समुदाय की भागीदारी से सभी के लिए बेहतर स्वास्थ्य सुनिश्चित करना। चूँकि यह क्षेत्र हमारे लिए नया है, हमने शुरुआत में इसे समझने के लिए जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय के साथ मिलकर एक अध्ययन में भाग लिया। इसका विषय था - मध्य प्रदेश में स्वास्थ्य क्षेत्र का विकेन्द्रीकरण। इसके अलावा मोरगढ़ी क्लस्टर के अल्प बचत समूहों ने नौ गाँव स्तरीय दवा केन्द्र भी स्थापित किए। इन केन्द्रों की मदद से पिछले साल भर में 975 मरीज़ों को फायदा हुआ है।

किसी भी व्यक्ति या समुदाय का स्वास्थ्य उसके जीवन के कई अन्य कारकों से बहुत अन्तरंगता से जुड़ा रहता है, जैसे गरीबी, रोज़गार, खान-पान, पानी की उपलब्धता, सफाई, बिजली, सड़क, शिक्षा, चिकित्सा सेवाएँ आदि। अतः आगे स्वास्थ्य के काम को केवल एक अलग-थलग पहल के रूप में न देखकर उसे जीवन के बहुत सारे अन्य आयामों के साथ जोड़कर देखना होगा।

इस कार्यक्रम में हमने जिन कठिनाइयों का सामना किया, वे इस प्रकार थीं :

- उपरोक्त सभी क्षेत्रों के लिए सक्षम टीमें तैयार करके उन्हें फील्ड में स्थापित करना।
- जब तक हमने कार्यक्रम के विभिन्न अंगों के क्रियान्वयन के लिए अलग-अलग टीमों की व्यवस्था रखी, तब तक इसके सभी आयामों को समग्रता में देखने में कठिनाई आती थी। साथ ही संसाधनों के बेहतर उपयोग के रास्ते में भी यह बाधा बनता था।
- स्थानीय समुदायों की इस कार्यक्रम में भागीदारी तो बहुत उत्साहजनक रही परन्तु उनके द्वारा उठाई जाने वाली स्वतंत्र ज़िम्मेदारियाँ अपेक्षा से कम ही रहीं।
- इस कार्यक्रम का दायित्व उठा पाने के लिए स्थानीय नेतृत्व का विकास बहुत धीमा और लम्बा काम है।

संस्था-विकास की प्रक्रिया

वर्ष 2002 में एकलव्य के कामों में एक प्रमुख पड़ाव आया था जिसका विवरण व विश्लेषण 2001-2004 के प्रतिवेदन *New Beginnings* में दिया गया था। इसी दौर में हमने अपने सामाजिक सरोकारों और दूरगामी उद्देश्यों के मद्देनज़र संस्था की नई दिशा की खोज प्रारम्भ की। इस सन्दर्भ में हमें संस्था-विकास की विधा और प्रक्रिया को गहराई से समझने की ज़रूरत लगी। अतः पिछले दो सालों में हमने एक प्रोफेशनल सलाहकार की मदद से संस्था-विकास की प्रक्रिया तथा एकलव्य के सन्दर्भ में उसे लागू करने के मायनों को समझने की कोशिश की है। इस काम के लिए हमने बैंगलोर स्थित पी एण्ड पी ग्रुप के श्री विजय पडकी का सहयोग लिया। इसके तहत चार कार्यशालाएँ वर्ष 2003 में हुईं और एक कार्यशाला अप्रैल 2004 में।

इन कार्यशालाओं के माध्यम से हमने बदलते हुए बाहरी परिवेश में एकलव्य के भावी काम की दिशाओं की समीक्षा कर उन्हें और स्पष्ट व पैना बनाने का प्रयास किया। साथ ही विभिन्न कामों के लिए टीम आधारित ढाँचों को लागू करने और काम व कार्यकर्त्ताओं के मूल्यांकन की प्रक्रियाओं को बेहतर बनाने के बारे में भी जाना।

वर्ष 2004-2005 में इन प्रयासों के तहत पूरे एकलव्य समूह के बीच एकलव्य के दूरगामी उद्देश्य, मोटे तौर पर कामों की दिशा और ठोस कार्यक्रमों के बीच रिश्तों को देखने, परखने और बेहतर बनाने की एक प्रक्रिया चलाई गई। इस प्रक्रिया से उभरने वाली भावी काम की दिशाओं और लक्ष्यों का विवरण नीचे दिया गया है।

अगले 10 सालों में एकलव्य का लक्ष्य है गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को पूरे देश में समान रूप से उपलब्ध कराने के मुद्दे को देश के लोगों का सरोकार बनाएँ। हमारे काम इस लक्ष्य की ओर निम्नलिखित तरीकों से उन्मुख रहेंगे:

शिक्षा की गुणवत्ता के लिए विभिन्न आयामों और प्रक्रियाओं का विकास	:	पाठ्यक्रम निर्माण से
	:	सामग्री के प्रकाशन से
	:	शिक्षक प्रशिक्षण एवं स्रोत केन्द्रों के निर्माण से
शिक्षा की गुणवत्ता के लिए राष्ट्र स्तरीय नेटवर्क	:	पिटारा व स्रोत केन्द्रों के फैलाव से
	:	राज्य स्तरीय सम्मेलन आयोजित करके
	:	अन्य गैर-सरकारी संगठनों के साथ साझे प्रयास करके
शिक्षा की गुणवत्ता से लोगों के सरोकारों का विकास	:	स्कूल से बाहर शिक्षा के मंच बनाकर
	:	चुने हुए क्षेत्र (मध्य प्रदेश के चार विकास खण्डों) में प्रारम्भिक शिक्षा को सुदृढ़ करके
	:	इच्छुक शिक्षकों के लिए स्रोत केन्द्र बनाकर
	:	कुछ स्कूलों में समग्र शाला विकास का काम करके
शासकीय तंत्र का गुणवत्ता की ज़रूरतों के लिए उन्मुखीकरण	:	राज्य सरकारों के कार्यक्रमों में भाग लेकर
	:	एकलव्य के कार्यकर्त्ताओं को दो साल के लिए नए राज्यों में भेजकर
	:	एकलव्य के प्रशिक्षण केन्द्र में राज्य सरकार के कर्मियों का उन्मुखीकरण करके
शिक्षा के हालातों और गुणवत्ता के मुद्दों पर शोध व प्रयोग	:	एकलव्य के स्कूल स्थापित करके
	:	अपने इलाके में विभिन्न तबकों की शिक्षा के हालातों पर लघु-शोध करके

इन दिशाओं और लक्ष्यों को हमारे साथ जुड़े स्रोत समूह के सदस्यों और साथी संस्थाओं, संगठनों के प्रतिनिधियों के साथ बाँटने और इस पर उनके विचार, राय और सुझाव जानने के लिए जनवरी 22-23, 2005 को भोपाल में एक बैठक आयोजित की गई। इस बैठक में एकलव्य के कार्यकर्त्ताओं के अलावा देश भर से लगभग 60 लोगों ने भाग लिया। इस कार्यशाला में इस व्यापक समर्थन समूह की टिप्पणी रही कि संसाधनों के हिसाब से एकलव्य ने बहुत अधिक आयाम खोले हैं और इनके साथ न्याय नहीं हो पा रहा है। एकलव्य को अपनी प्राथमिकताएँ तय करने की ज़रूरत है। इन टिप्पणियों के आधार पर समसामयिक प्राथमिकताएँ तय करने व नई दिशा के आधार पर संस्थागत ढाँचे को संशोधित करने का काम अभी जारी है।

होशंगाबाद में कैम्पस

आज एकलव्य पाँच केन्द्रों, तीन उपकेन्द्रों और भोपाल स्थित समन्वय केन्द्र के मार्फत मध्य प्रदेश के मध्य और पश्चिमी क्षेत्र में कार्यरत है। बाईस सालों के हमारे इतिहास और सतत् काम के बाद भी हमारे सभी कार्यालय किराए के मकानों में स्थित हैं। इससे किराए का बोझ तो लगातार बढ़ता ही है, साथ ही बार-बार ऑफिस बदलने की समस्या भी लगातार बनी रहती है। हमारी कई आन्तरिक बैठकों, कार्यशालाओं आदि के लिए हमें अलग से जगह किराए पर लेनी ही पड़ती है। जगह की कमी की वजह से भोपाल और होशंगाबाद जैसे बड़े केन्द्रों को तो कई बार दो से चार अलग-अलग किराए के मकानों में बँटकर काम चलाना पड़ा है। इस सन्दर्भ में पिछले कुछ सालों से एकलव्य का खुद का कैम्पस विकसित करने के फायदे और नुकसान पर चर्चा चलती रही है। काफी बहस-मुबाहिसे के बाद यह तय किया गया कि हम होशंगाबाद में एक कार्यालय और प्रशिक्षण केन्द्र और भोपाल में एक कार्यालय का निर्माण करेंगे।

होशंगाबाद में वर्ष 2001 में एक एकड़ से कुछ कम (37,000 वर्ग फुट) ज़मीन खरीदी गई। मार्च 2001 में सर रतन टाटा ट्रस्ट ने भवन निर्माण के लिए 25 लाख रुपए का अनुदान दिया। फिर आर्किटेक्ट की खोज शुरू हुई। काफी खोजबीन के बाद भोपाल के डिज़ाइन एटेलियर के श्री जय सिंह व सुश्री प्रेरणा कोठारी को इस काम के लिए चुना गया। उन्होंने होशंगाबाद के एकलव्य कार्यालय के कार्यकर्त्ताओं के साथ कई दौरों में चर्चाएँ करके भवन का डिज़ाइन तैयार किया। अन्ततः अक्तूबर 2004 में कैम्पस का निर्माण शुरू हुआ। भोपाल के श्री माता विग एसोसिएट्स को यह काम सौंपा गया।

कैम्पस में होशंगाबाद केन्द्र का दफ्तर, पुस्तकालय तथा दस्तावेज़ीकरण केन्द्र, बाल गतिविधि केन्द्र और शैक्षिक स्रोत केन्द्र होंगे। इसके अलावा इसमें नियमित रूप से लगभग 50-60 लोगों तक के आवासीय प्रशिक्षण शिविर व कार्यशालाएँ आयोजित की जा सकेंगी। इस दोमंज़िली इमारत का कुल निर्मित क्षेत्र 8925 वर्ग फुट है। भवन को प्राकृतिक ऊर्जा के अधिकाधिक उपयोग के लिए सक्षम बनाया गया है। साथ ही निर्मित जगहों के बहुद्देशीय उपयोग को सम्भव बनाने के बारे में डिज़ाइन और निर्माण, दोनों स्तरों पर पूरा-पूरा ध्यान रखा गया है।

कॉर्पस फंड

वर्ष भर के दौरान सर रतन टाटा कॉर्पस फंड पर 12.54 लाख रुपए, सर दोराबजी टाटा कॉर्पस फंड पर 3.26 लाख रुपए एवं अन्य कॉर्पस फंड पर 8.53 लाख रुपए – यानी कुल मिलाकर 24.34 लाख रुपए ब्याज प्राप्त हुआ। इसमें से 12.08 लाख रुपए विभिन्न कार्यक्रमों व प्रशासनिक मदों पर खर्च हुए। 3.76 लाख रुपए सर रतन टाटा ट्रस्ट फंड व 1.05 लाख रुपए अन्य कॉर्पस फंड में कॉर्पस के रूप में जोड़ दिए गए।

इस वर्ष के दौरान कॉर्पस का निवेश करने के लिए सर रतन टाटा ट्रस्ट कॉर्पस फंड के लिए 5 लाख रुपए, सर दोराबजी टाटा ट्रस्ट कॉर्पस फंड के लिए 50 लाख रुपए, एवं अन्य कॉर्पस फंड के लिए 1.24 लाख रुपए के रिज़र्व बैंक बॉण्ड लिए गए हैं।

इसी समयावधि में FCRA कॉर्पस फंड में 94 हज़ार रुपए का इज़ाफा हुआ जो मुख्यतः नोम चोम्सकी की पुस्तक की रॉयल्टी के योगदान की वजह से था।

परिशिष्टः वित्तीय तथा अन्य जानकारियाँ

एकलव्य फाउंडेशन

वर्ष 2004-05 से सम्बन्धित वित्तीय जानकारी

31 मार्च 2005 का स्थिति पत्रक (Balance Sheet as on 31st March 2005)

सम्पदा (Assets)	
कार्यक्रम उपकरण (Project Equipments)	4.79
सन्दलपुर ज़मीन (Land at Sandalpur)	0.55
होशंगाबाद ज़मीन तथा निर्माणाधीन भवन (Hoshangabad Land & Building)	38.39
कॉर्पस निवेश (Corpus Investments)	294.61
शासकीय तथा अन्य अनुदान (Govt. & Other Grants, Net Receivable)	42.29
प्राप्ति अपेक्षित (Receivables)	18.16
ऋण तथा अग्रिम (Loans & Advance)	38.20
जमा पूँजी (Deposits)	0.73
बैंक में (Bank Balances, including Investments)	923.51
योग (Total)	**1361.23**
देनदारी (Liabilities)	
प्राप्त पुरस्कार राशि (Capital Fund[Awards])	1.87
अक्षय निधि (Corpus Fund)	337.99
चकमक आजीवन सदस्यता (*Chakmak* Life Membership)	2.04
संदर्भ आजीवन सदस्यता (*Sandarbh* Life Membership)	1.29
उपकरणों के लिए प्राप्त अनुदान (Grants for Equipment)	4.79
ऋण (Loans)	904.35
चालू देनदारियाँ तथा प्रावधान (Current Liabilities & Provisions)	16.80
आय-व्यय खाता (Income & Expenditure Account)	92.10
योग (Total)	**1361.23**

31 मार्च, 2005 को समाप्त हुए वित्तीय वर्ष का आय-व्यय खाता

(Income And Expenditure Account For the Year Ended 31st March 2005)

आय (Income)	
शासकीय तथा अन्य अनुदान (Govt. and Other Grants)	68.26
सदस्यता/प्रकाशन बिक्री (Subcription/Sale of Publications)	13.61
प्राप्त ब्याज (Interest received)	83.85
अन्य प्राप्तियाँ, दान आदि (Other Receipts, Donations etc.)	1.68
योग (Total)	**167.40**
व्यय (Expenditure)	
शैक्षिक कार्यक्रम (Educational Projects)	144.24
प्रकाशन कार्यक्रम (Publication Projects)	10.82
अतिशेष आय (Surplus of Income over Expenditure)	12.34
योग (Total)	**167.40**

वर्ष 2004-05 के दौरान प्राप्त वित्तीय सहायता

व्यक्तिगत कॉर्पस दानदाता

बी. एम. अरोरा
लिंडा हेस
निर्मलेन्दु जाजोडिया
नोम चॉम्सकी
राघवन श्रीनिवासन
श्रीहरी शिन्दे
विक्रम

प्रोजेक्ट सहायता

आई.सी.आई.सी.आई. बैंक लिमिटेड
सर रतन टाटा ट्रस्ट
विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार
सर दोराबजी टाटा ट्रस्ट
यू.एन.डी.पी.
गिव फाउंडेशन
राजीव गांधी फाउंडेशन
अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन
विप्रो लिमिटेड

क्रेडिबिलिटी एलाएन्स के सन्दर्भ में जानकारी

एकलव्य के कार्यकर्त्ताओं का वेतन विश्लेषण

सकल वेतन (रुपयों में)	पुरुष	स्त्री	कुल
5000 से कम	0 5	0 2	0 7
5000-10,000	3 4	0 6	4 0
10,000-25,000	0 9	0 5	1 4
25,000-50,000	-	-	-
50,000-1,00,000	-	-	-
1,00,000 से ज़्यादा	-	-	-

• 5000 रुपए से कम वेतन पाने वाले लोगों में से तीन पुरुष व एक महिला अंशकालिक कार्यकर्त्ता हैं।
• यह जानकारी मार्च 2005 की है।

कार्यकर्त्ताओं का सालाना वेतन (रुपयों में)

संस्था प्रमुख : 1,85,040.00
अधिकतम आय : 2,03,280.00
न्यूनतम आय : 52,344.00

• मार्च 2005 में भुगतान किए गए वेतन पर आधारित वर्ष 2004-2005 के लिए अनुमानित वार्षिक आँकड़े

कार्यकर्त्ताओं द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय यात्रा

वर्ष 2004-05 में एकलव्य के किसी भी कार्यकर्त्ता ने अंतर्राष्ट्रीय यात्रा नहीं की।

हम कहाँ-कहाँ पर हैं

एकलव्य
ई-7/453 एच.आई.जी.
अरेरा कॉलोनी, भोपाल 462 016 म.प्र.
फोन : 0755 - 246 3380, 246 4824, 554 9033
eklavyamp@mantrafreenet.com

एकलव्य
61, बैराठी कॉलोनी क्र.2, इन्दौर, 452 001 म.प्र.
फोन : 0731 - 246 5009
eklavyaindor@sancharnet.in

एकलव्य
चक्कर रोड, मालाखेड़ी,
होशंगाबाद 461 001 म.प्र.
फोन : 07574 - 277 267, 277 268
eklavyah@sify.com

एकलव्य
33, साकेत नगर,
देवास 455 001 म.प्र
फोन : 07272 - 223 496
eklavyad@sancharnet.in

एकलव्य
साण्डिया रोड, पिपरिया 461 775 म.प्र.
फोन : 07576 - 222 574

एकलव्य
पतौआपुरा, शाहपुर 460 440,
ज़िला : बैतूल, म.प्र.
फोन : 07146 - 273 297

एकलव्य
उप-केन्द्र
28/2, एम.आई.जी., वेदनगर, नानाखेड़ा
उज्जैन, 456 010 म.प्र.
फोन : 0734 - 251 0583

एकलव्य
उप-केन्द्र
स्टेशन रोड, परासिया 480 441 म.प्र.
ज़िला : छिन्दवाड़ा
फोन : 07146 - 273 297

एकलव्य
उप-केन्द्र
ए-114, विवेकानंद काम्पलेक्स,
नई सब्ज़ी मंडी,
हरदा 461 331 म.प्र.
फोन : 07577 - 222 450

एकलव्य की गवर्निंग बॉडी,

डॉ. विजय एस. वर्मा (अध्यक्ष)
भौतिक शास्त्र विभाग
दिल्ली यूनिवर्सिटी, दिल्ली

डॉ. अमिताभ मुखर्जी
सेन्टर फॉर साइंस एजुकेशन
एण्ड कम्युनिकेशन,
दिल्ली यूनिवर्सिटी, दिल्ली

श्री प्रोबीर चन्द्र सेन
निदेशक
इंडिया इन्टरनेशनल सेन्टर
नई दिल्ली

डॉ. भरत पूरे
होलकर विज्ञान महाविद्यालय
इन्दौर

डॉ. उमा चक्रवर्ती,
इतिहासकार, नई दिल्ली

डॉ. कुमकुम रॉय
सेन्टर फॉर हिस्टॉरिकल स्टडीज़
जवाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी
नई दिल्ली

डॉ. हृदयकान्त दीवान
विद्या भवन सोसायटी, उदयपुर

डॉ. उर्जित याज्ञिक
आई.आई.टी., मुम्बई

श्री अरविन्द कृष्णास्वामी
भारत पेट्रोलियम कॉ. लि.
मुम्बई

श्री कमल महेन्द्रू
निदेशक, एकलव्य

सुश्री रश्मि पालीवाल (सचिव)
प्रतिनिधि, एकलव्य

सुश्री यमुना सन्नी
प्रतिनिधि, एकलव्य

जनरल बॉडी

डॉ. अरविन्द गुप्ते
डॉ. विनोद रायना
डॉ. अनिल सद्‌गोपाल
डॉ. के.वी. साने
डॉ. एन. पंचपकेशन
डॉ. पी.के. श्रीवास्तव
डॉ. वी.बी. भाटिया
डॉ. विजय एस. वर्मा
डॉ. साधना सक्सेना
श्री बलदेव सिद्‌धु
श्री एस.सी. बेहार
श्री श्याम बोहरे

भोपाल

अनिल लोखण्डे
अशोक रोकड़े
अरविन्द जैन
अंजली नरोन्हा
चन्द्रप्रकाश कड़ा
इन्दु नायर
जॉनी कुट्‌टी के.ए.
कमलसिंह गौर
कमल महेन्द्रू
मनोज निगम
मोहम्मद शफीक
राकेश खत्री
राजेश उत्साही
रेक्स डी. रोज़ारियो
शशि सबलोक
सुशील शुक्ल
शिवनारायण गौर
एस. लक्ष्मी
टुलटुल विश्वास
टी.सी. कोटवानी
वीना भाटिया

होशंगाबाद

अनिल पटेल
बी.पी. मैथिल
ब्रजेश सिंह
सी.एन. सुब्रह्मण्यम
गौतम पाण्डेय
जावेद सिद्‌दिकी
ज्योति दीवान
जितेन्द्र कुमार
माधव केलकर
महेश बसेड़िया
महेश शर्मा
प्रमोद मैथिल
प्रदीप चौबे
राजेश खिन्दरी
राम भरोस
रश्मि पालीवाल
संजय तिवारी
यमुना सन्नी

परासिया

हेमन्त सोनी

पिपरिया

गोपाल राठी
कमलेश भार्गव
एम.पी. तिवारी

देवास

अनु गुप्ता
अरविन्द सरदाना
दिनेश पटेल
राममूर्ति शर्मा
रविकान्त मिश्र
शोभा शिंगणे

इंदौर

अरविन्द गुप्ते
बहादुर सिंह जाधव
कमल किशोर कुम्भकार
पद्‌मलाल जोशी
तुषार ताम्हणे
उमा सुधीर
सुभाष काम्बली

शाहपुर

अनिल सरगर
गणेश कीर
घनश्याम तिवारी
हेमराज मालवीय
नीलेश मालवीय

हरदा

शोभा चौबे

उज्जैन

प्रेम कुमार मनमौजी

अनुबंध पर

सुशील जोशी
कैरन हेडॉक
रूथ रस्तोगी
दिनेश रस्तोगी
जैकब थरू

• *यह जानकारी 31 मार्च 2005 की है।*

रविशंकर अजनेरिया की स्मृति में...

बाल समूह के पुराने साथियों में रविशंकर अजनेरिया को हमेशा याद किया जाता रहेगा। वे होशंगाबाद ज़िले के आमूपुरा गाँव में रहते थे और कई सालों से एकलव्य से जुड़े थे। आमूपुरा में बाल समूह को सक्रिय बनाने और अन्य लोगों को इस प्रक्रिया से जोड़ने में इनकी भूमिका बहुत अहम रही है। बाल समूह की अन्य गतिविधियों के साथ ही सामाजिक या सामयिक विषयों पर चर्चा में वे काफी सक्रिय रहते थे। नवम्बर 2004 में मात्र 25 साल की उम्र में उनका निधन हुआ, लेकिन अपने कामों व संवेदनशील स्वभाव के कारण वे हमेशा याद आते रहेंगे।